* श्रीः *

किस्सा

चहार दरवेश

अर्थात्

॥ बाग् बहार ॥

प्रकाशक—

लाला श्यामलाल हीरालाल

मालिक—'श्याम काशी प्रेस' मथुरा।

महेश प्रसाद द्वारा—

सत्यनाम प्रेस, मैदागिन, बनारस सिटी में छपा।

श्रीगणेशाय नमः

किस्सा चहार दरवेश

सुभान अल्लाह क्या शान है खुदा की जिसने एक मुट्ठी खाक से क्या २ सूरतें और मटी की मूरतें पैदा की बावजूद दो रंग के एक गोरा एक काला, और यही नाक कान हाथ पांव सब को दिये हैं तिस पर रंगबिरंगे की शक्लें जुदी जुदी बनाई कि एक की सजधजसे दूसरे का डील डौल मिलता नहीं करोडों खिलकत में जिसको चाहिये पहिचान लीजिये आसमान उसके दरियाय वहदत का एक बुलबुला है और जमीन पानी का बताशा है लेकिन यह तमाशा है कि समुन्दर हजारों लहरें मारता है पर उसका बाल बांका नहीं कर सक्ता है कि जिसकी कुदरत और शक्ति हो उसकी हम्द और सान में जबान इन्सान की गोया गूंगी है कहें तो क्या कहें बेहतर यह है कि जिस बात में दम न मार सके चुपका हो रहे ।

जल-अर्श से ले फर्श तक जिसका कि यां सामान है।
हम्दगर उसकी लिखा चाहूं तो क्या इमकान है॥
जब पयम्बर ने कहा हो मैंने पहिचाना नहीं।
फिर कोई दावा करे इस का बड़ा नादान है॥
रात दिन यह महरोमह फिरते हैं सनअतें देखते।
फिर हर एक वाहद की सूरत दीदये हैरान है॥
जिसका सानी और मुकाबिल है न होवेगा कभी।
ऐसे यकता को खुदाई सब तरह शायान है॥
लेकिन इतना जानता हूं खालिको राज़िक है वह।
हर तरह से मुझ पर उसका लुत्फ और आहिसान है॥
हम्द हक और नात अहमद का यहां कर इख्तताम।
मैं अब आग़ाज उसको करता हूं जो है मंजूर काम॥
या इलाही वास्ते अपने नबी के आल के।
कर ये मेरी गुफ्तगू मकबूल तब ये खासो आम॥

शुरू किस्से का।

अब शुरू किस्से का करता हूं जरा कान घर सुनो
मुनसफ़ी करो सैर में चार दरवेश के यों लिखा
र कहने वाले ने कहा है कि आगे रूम के मुल्क
ोई शहनशाह था जिसकी नौशेरवां की सी
दालत और हातमकीसी सखावत उसकी ज़ात में

थी नाम उसका आज़ादबख्त और कुस्तुनतुनियां शहर जिसको इस्तम्बोल कहते हैं उसका पायतख्त था उसके वक्त में रैय्यत आबाद खजाना मामूर लश्कर मुरफ़ा हालत ग़रीब गुरबा आसूदः ऐसे चैन से गुज़रान करते और खुशी से रहते कि हर एक के घर में दिन ईद और रात शबेरात थी और जितने चोर चहार और जेबकतरे सुबह खेज़ उठाईगीरे दग़ा-बाज थे सब को नेस्तो नाबूद कर कर नाम निशान उसका अपने मुल्कभर में न रक्खा सारी रात दर-वाज़े घरों के बन्द न होते और दूकाने बाज़ार की खुली रहती राही मुसाफिर जंगल मैदान में सोना उछालते चले जाते कोई न पूछता कि तुम्हारे मुंह में कै दांत है और कहां जाते हो उस बादशाह के अमल में हजाहों शहर थे और सुलतान नालबन्दी देते ऐसी बड़ी सलतनत पर एक सायत अपने दिल को खुदाकी याद और बंदगी से गाफिल न रखता आराम दुनियां का जो चाहिये सब मौजुद था लेकिन फ़रज़ंद जो जिन्दगानी का फल था उसकी किसमत

के बागमें न था इस खातिर अक्सर फिक्रमन्द रहता और पांचो वक्तकी नमाज़ के बाद अपने करीम से कहता कि अल्लाह मुझ आजिज़को तूने अपनी इनायत से सब कुछ दिया है लेकिन इस अँधेरे घर का दिया न दिया यही अरमान जी में बाक़ी है कि मेरा नाम लेनेवाला और पानी देने वाला कोई नहीं और तेरे खज़ाने गैब में सबकुछ मौजूद है एक बेटा जीता जागता मुझे दे तो मेरा नाम और इस सलतनत का निशान क़ायम रहे इस उम्मेद में बादशाह की उमर चालीस वर्ष की होगई एक दिन सीस महल में नमाज़ अदा कर वजीफ़ा पढ़ रहे थे एक बारगी आइने की तरफ ख्याल जो करते हैं तो एक सफेद बाल मूछों में नजर आया कि मानिन्द तार मुकेश के चमक रहा है बादशाह देख कर आबदीदह हुए और बड़ी ठंढी सांस भरी फिर दिल में अपने सोच किया कि अफसोस तूने इतनी उमर नाहक बरबाद की और इस दुनियाँ की हिर्स में एक आलम जेर ज़बर किया इतना मुल्क तो लिया अब मेरे किस

काम आवैगा. आखिर यह सारा माल व असबाब कोई दूसरा उड़ावेगा मुझे तो पैग़ाम मौत का आ चुका अगर कोई दिन जिये भी तो बदन की ताक़त कम होगी इस से यह मालूम होता है कि मेरी तक़दीर में नहीं लिखा वारिस छत्तर और तख़्त का पैदा हो आखिर एक रोज मरना है और सब कुछ छोड़ जाना है इससे यही बेहतर है कि मैं हो इसे छोड़ दूं और बाकी जिंदगी अपनी खालिक की याद में काटं यह बात अपने दिलमें ठहराकर पाईं बाग़ में जाकर मुजराई को जवाब देकर फ़रमाया कि कोई आजसे मेरे पास न आवै सब दीवाना आम में आया जाया करें और अपने २ काम में मुस्तैद रहें यह कहकर आप एक मकान में जा बैठा और मुसल्ला बिछाकर इबादत में मशगूल हुआ सिवाय रोने और आह भरनेके कुछ काम नहीं इसी तरह बादशाह आज़ादबख़्त को कई दिन गुज़रे शामको रोजा खोलनेके वक्त एक छुहारा तीन घूंटपानी पीते और तमामदिन रात जायनमाजपर पड़ेरहते

इसबातका बाहर चरचा फैला रफ्ते २ तमाम मुल्क में ख़बर हुई कि बादशाहने बादशाहत से हाथ खींच कर गोशानशीनी इख्तियारकी चारों तरफ़ गुनीमों और मुफसिदों ने सिर उठाया और कदम अपनी हदसे बढ़ाया जिसने चाहा मुल्क दबा लिया और सरंजाम सरकशीका किया जहां कहीं हाकिम थे उनके हुक्म खलल वाके हुआ हरएक सूबेसे अरज़ी बदअमलीकी आने लगी दरबारी उमरा जितने थे जमा हुए और सलाह मसलहत करने लगे आखिर यह तजवीज ठहरी कि नवाब वज़ीर आकिल और दाना है और बादशाहकी मुकर्रिब और मोतमिदहै और दरजे मे भी सबसे बड़ा है उसकी खिदमत में चलें देखें वह क्या मुनासिब जानकर कहता है सब उम्दह अमीर बजीरके पास आये और कहा बादशाह की यह सूरत मुल्क की यह हकीकत अगर चन्दरोज और गाफ़िल होगा तो ऐसी मेहनतका लियाहुआ मुल्क मुफ्तमें जाता रहेगा फिर हाथ आना बहुत मुश्किल है वज़ीर पुराना

क़दीमी नमकहलाल और अक़लमन्द नामभी खिरद मन्द इस्म बा मुसम्मा था बोला अगरचे बादशाहने हुजूरमें आने को मना किया है लेकिन तुम चलो मैं भी चलताहूं खुदाकरे बादशाहकी मरजीमें आये जो रूबरू बुलावे यहकहके सबको अपनेसाथ दीवान आम तलक ला उनको वहां छोड़कर आप दीवान खास में आया और बादशाहकी खिदमतमें सहेली से कहला भेजा। कि यह पीरगुलाम हाजिर है कई दिनोंसे जमाल जहां आरा नहीं देखा उम्मेदवार हूं कि एक नजर देखकर क़दमबोसी हासिल करूँ तो खातिरजमाहो यहअर्ज वज़ीरकी बादशाहने सुन अजबस कि कदीम और खैरख्वाही और तदबीर और जांनिसारी उसकी जानते थे और अक्सर उसकीबात मानतेथे बाद तअम्मुलके फरमाया। कि खिरदमंदको बुलालो बारे जब परवानगी हुई वजीर हुजूर में आया आदाब बजालाया और दस्तबस्ता खड़ारहा देखा तो बादशाहकी अजब सूरत बन रही है कि ज़ार ज़ार और दुबलेपनसे आंखोंमें हलके

पड़ गए हैं और चेहरा ज़र्द होगया है ख़िरदमंदको ताब न रही बेइख्तयार दौड़कर क़दमों परजा गिरा बादशाहने हाथसे सिर उसका उठाया और फ़रमाया लो मुझे देखो खातिर जमा हुई अब जाओ ज्यादा मुझे न सताओ तुम सल्तनतकरो ख़िरदमंद यह बात सुनकर ढाढे मारकर रोया और अर्ज़ की गुलाम को आपके तसद्दुक और सलामतीसे हमेशा बादशाहत मयस्सरहै लेकिन जहाँपनाहकी यकबयक इस तरहकी गोशागीरीसे तमाम मुल्कमें तहलका पड़गया है और अञ्जाम इसका अच्छा नहीं यह क्या ख्यालमिज़ाज मुबारिकमें आया अगर इस खानहज़ाद मौरुसीको भी महरम इस भेद का कीजिये तो बेहतरहै जोकुछ अक्लनाक़िसमें आवे इल्तिमासकरे गुलामोंको ऐसी सरफ़राज़ियाँ बख्शीहैं इसी दिनके वास्ते बादशाह ऐस आराम करें और नमकपरवर दी तदबीर में मुल्ककीरहैं अगर खुदा नख्वास्ता जबफ़िक्र मिजाज आलीके लायक होतो बन्दहाय बादशाही किस दिन काम आवेंगे बादशाहने कहा

सच कहता है पर जो फिक्र मेरे जी में है सो तदबीर से बाहरहै सुनो खिरदमन्द मेरी सारी उमर इसी मुल्कगीरी के दर्दसरमें कटी अब यह सिनोसाल हुआ आगे मौत बाकी है सो उसका भी पैग़ाम आया कि स्याह बाल सफेद होचले यह मसल है सारी रात सोये सुबह को भी न जागे अब तक एक बेटा भी न पैदा हुआ जो मेरी खातिरजमा होती इस लिये दिल सख्त उदास और मैं सब कुछ छोड़ बैठा जिसका जी चाहे मुल्क ले या मालले मुझे कुछ काम नहीं बल्कि कोई दिनमें यह इरादा रखता हूं कि सब छोड़छाड़ कर जंगल और पहाड़ों में निकल जाऊँ और मुंह अपना किसी को न दिखाऊं इसी तरह यह चन्दरोजकी जिन्दगी बसरकरूं अगर कोई मकान खुश आया तो वहाँ बैठकर अपने माबूदकी बंदगी बजालाऊँगा शायद आकबत बखैरहो और दुनियां को खूब देखा कुछ मजा न पाया इतनी बात बोल कर और एक आह भरकर बादशाह चुपका होरहा खिर्दमन्द उनके बाप का वज़ीर था जब यह शाह-

जादे थे तबसे मुहब्बत रखता था और अलावः इसके दाना और नेक अन्देश था कहने लगा खुदाकी जनाब से नाउम्मेद होना हरगिज़ मुनासिब नहीं जिसने अठारह हजार आलमको एक हुक्म में पैदा किया तुम्हे औलाद देना उसके नज़दीक क्या बड़ी बात है वल्ला: आलम इस तसव्वर बातिलको दिल से दूर करो नहीं तो तमाम आलम दरहम बरहम हो जायगा और यह सल्तनत किस मेहनत और मशक्कत से तुम्हारे बुजुर्गों ने और तुमने पैदा की है एक लहजेमें हाथसे निकल जायगा और बेखबरीसे मुल्क वीरान हो जायगा खुदानख्वास्ता आखर बदनामी हासिल होगी इस पर भी बाज पुर्स रोज कयामतके हुआ चाहिये कि तुम्हे बादशाह बनाकर अपने बन्दों को तेरे हवाले किया था तू हमारी रहमत से मायूस हुआ और रैय्यतको हैरान परेशान किया इस सवालका जवाब क्या दोगे पस इबादत भी उस रोज़ काम न आवेगी इस वास्ते कि आदमीका दिल खुदाका घर है और बादशाह फ़कत अदलके वास्ते पूछें जां-

आगे गुलाम की बेअदबी माफ हो घरसे निकल जाना और जंगल जंगल फिरना जोगियों और फकीरों का काम है न कि बादशाहोंका तुम अपनेजोग कामकरो खुदाकी याद और बंदगी जंगल और पहाड़पर मौकूफ नहीं आपने यह बैत सुनी होगी।

बैत—खुदा इस पास यह ढूंढे जङ्गल में।
ढिंढोरा शहर में लड़का बग़ल में॥

अगर मुंसफी फरमाइये इसफिदवाकी अर्ज कबूल कीजिये तो बेहतर यों है कि जहाँपनाह हरदम और हरसायत ख्याल अपना खुदाकी तरफ लगा करदुआ मागा कउरैंसको दरगाहमें कोई महरूमनहीं दिनको बन्दोवस्त मुल्कका और इन्साफ अदालत गरीब गुरबा को फरमाइये तो वन्देखुदा के सामने और दौलत के साये में अमन व अमान खुश गुजरान रहे और रात को इबादत कीजिये और दरूद पयम्बर के रूह पाकको नियाज़ कर २ दुरवेश गोशे नशीन मुतवक्किलों से मदद लीजिये और बेरोजगारान व यतीमपिसरे अयालदारों मुहताजों और रांड

बेवाओं को कर दीजिये ऐसे अच्छे कामों और नेक नियतों की बरकत से खुदा चाहे तो उम्मेद कवी है कि तुम्हारे दिलके मकसद मतलब सब पूरे हों और जिस वास्ते मजाज आली मुकद्दर हो रहा है वह आरजू बरआवे और खुशी खातिर शरीफ होजावे परवरदिगार की इनायत पर नजर रखिये कि वह एक दम में जो चाहता है सो करता है। वाहरे खिरदमंद वजीर की ऐसी २ अरज मारूज करने से आजादबख्तके दिलको ढाढस बंधा फरमाया अच्छा तू जो कहता है भला यह भी कर देखेंगे जो अल्लाह की मरजी हो सो होगा जब बादशाह के दिल को तसल्ली हुई तब वजीर से पूछा और सब अमीरों कबीर क्या करते हैं और किसतरह हैं उसने अर्ज की कि सब अरकान दौलत किबला आलम की जान व माल की दुआ करते हैं आपके फिक्र से सब हैरान व परेशान होरहे हैं जमाल मुबारिक अपना दिखा इये तो सब को खातिरजमा हो चुनांचे इस वक्त दीवान आम में हाजिर हैं यह सुनकर बादशाहने

हुक्म दिया इन्शा अल्लाह ताला कल दरबार करूं गा सब को कहदो हाजिर रहें खिरदमंद यह वायदा सुनकर खुश हुआ और दोनों हाथ उठाकर दुआदी कि जब तलक जमीनो असमान बरपा हैं तुम्हारा ताजोतख्त कायम रहे और हुजूर से रुखसत होकर खुशी २ निकला और यह खुशखबरी उमरावोंसेकही सब अमीर हँसी खुशी घरको गए सारे शहर में आनन्द होगया रैय्यत व परजा मगन हुई की कल्ल बादशाह दरबार आम करेगा सुबह को सब खाना-जाद आला अदना और अरकान दौलत छोटे बड़े अपने पाये और मरतबा पर आकर खड़े हुये और मुन्तजिर जलवे बादशाही के थे जब पहर भर दिन चढ़ा एकबारगी परदा उठा बादशाहने बरामद होकर तख्त मुबारिक पर जलूस फरमाये नौबतखाने में शादियाने बजने लगे सबोंने नजरें मुबारिकबादी को गुजरानी और मुजरगाह में तसलीमात कर निशात बजालाये मुवाफ़िक कदर व मंजिलत के हरएक को सरफ़राजी हुईसब के दिल को खुशी

और चैन हुआ जब दोपहर हुई बरखास्त होकर अन्दरून महल हुए खासा नोशजां फरमाकर ख्वाबगाह में आराम किया उस दिन से बादशाह ने यही मुकर्रर किया कि हमेशा सुबहको दरबार करना और तीसरे पहर में किताब का शुग़लयाद दरूदवजीफ़ा पढ़ना और खुदा की दरगाह में तोबह अस्तग़फार कर २ अपने मतलब का दुआ मांगी एक रोज किताब में भी लिखा देखा कि अगर किसा शक्स को गम या फिकर ऐसे लहक हो कि उसका इलाज तदबीर से न होसके तो चाहिये कि तकदीर के हवाले करे और आप गोरिस्तान की तरफ़ रुजू होके दरूद पयम्बर की रुह को बख्शे और अपने तई नेस्तनाबूद समझ कर दिल को इस ग़फ़लत दुनियाबी से हुशियार रक्खे और इबरत खुदाकी कुदरत को देखे कि मुझसे आगे कैसे २ साहब मुल्को खज़ाना इस जमीन पर पैदा हुए लेकिन आसमान ने अपनी गरदिश में लाकर खाक में मिलादिया यह कहावत है॥

चलती चक्को देखकर दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीचमें साबित बचा न कोय॥

अब जो देखिये सिवाय मिट्टीके ढेरके उनका कुछ निशान बाकी नहीं रहा और सब दौलत दुनियाँ घर बार आल औलाद आशना दोस्त नौकर चाकर हाथी घोड़े छोड़कर अकेले पड़े हैं उनके कुछ काम न आया बल्कि अब कोई नाम भी नहीं जनता कि यह कौन थे और कबरके अन्दरका अहवाल मालूम नहीं कीड़े मकोड़े चींटी सांप उनको खागये तब उन पर क्या बीती खुदासे कैसे बनी यह बातें अपने दिल में सोचकर सारी दुनियां को मिटीका खेल जाने तब उसके दिलकागुंचा हमेशा शिगुफ्ता रहेगो किसी हालत में पिजमुर्दा नहो यह नसीहत जब किताब में मुतालाकी बादशरको खिरदमंद वजीरका कहना याद आया और दोनोंको मुताबिक पाया यह शौक हुआ कि इनपर अमल करूं लेकिन सवार होकर औरभीड़ लेकर बादशाहों की तरह जाना औरफिरना नहीं मुनासिब यहहै कि लिबास बदलकर रातको मुकबरों में या किसी मर्द खुदा गोशेनशीन की खिदमत में जाया करूं और तमाम शब बेदार रहूं

और इन मर्दोंके वसीले से दुनियां की मुराद और आकबतकी निजात मयस्सर हो यह बात दिलमें मुकर्रर्रकर एक रोज रातको मोटे झोटे कपड़े पहन कर कुछ रुपये अशर्फी लेकर चुपके किलेसे बाहर निकला और मैदानकी राहली जाते २ एक कब्रस्तानमें पहुँचे निहायत सनक दिलसे दरूद पढ़ रहे थे और उस वक्त बादेतुन्द चल रहीथी बल्कि आंधी कहा चाहिये कि एक बादशाह को ओलासा नजर आया कि मानिन्द सुबह के तारे के रोशन है दिलमें अपने ख्याल कियाकि इस आंधी अंधेरे में यह रोशनी खालीहिकमतसे नहीं यह तिलस्महै अगर फिटकारी या गंधक चिराग़ में बत्ती के आस पास छिड़क दीजिये तो कैसीही हवा चाले चिरग़ागुल न होगा या किसी वलीका चिराग़है जो जलता है जो कुछ हो सो हो चलकर देखा चाहिये शायद इस शमअके नूरसे मेरे भी घरका चिराग़ रोशनहो और दिलकी मुराद मिले यह नियन करके उस तरफको चले जब नजदीक पहुँचे देखातो चार

फकीर बेनवा कफ़निया गलेमें डाले और सिर
जानू पर धरे आलम खामोशी में बैठे हैं और
उनका यह आलमहै जैसे कोई मुसाफ़िर अपने
मुल्कओर कौमसे बिछुड़कर बेकसी और मुफलिसी
के रंज व ग़मसे गिरफ्तार करता है इसी तरहसे ये
चारों नक्से दिवारहो रहे हैं और एक चिराग़
पत्थर पर धरा दिमदिमा रहा है हरगिज़ हवा उसे
नहीं लगती गोया फ़ानूस उसका आसमान बना है
कि बेखतर जलताहै आजादवख्तको देखतेही यकीन
आया मुकर्रर तेरी आरजू तरद्दुद खुदाकी
बरकतसे बरआवेगी और तेरी उम्मेदका सूखा दर-
ख्त इनकी तवज्जह से हरा होकर फलेगा इनकी
खिदमत में चलकर अपना हाल कह और मज-
लिसका शरीकहो शायद तुझ पर रहम खाकर
दुआकरें जो बनियाज़ के यहां कबूल हो यह इरादा
करके चाहा कि कदम आगे धरें ज्योंही आकिलने
समझाया बेवकूफ जल्दी न कर ज़रा देखले तुझे
क्या मालूमहै कि यह कौनहै कहांसे आये हैं और

किधर जाते हैं क्या जाने यहदेवहैं यागोल बिया-
बानीहैं कि आदमी की सूरत मिलकर बाहम मिल
बैठे हैं बहर सूरतजल्दी करना और उनके दरमि-
यान जाकर मुखलिस होना खुब नहीं अभी
गोशामें छिपकर हकीकत इन दरवेशों की
जानना चाहिये आखिर बादशाह ने यही
किया कि एक कोनेमें उस मकानमें चुपके जा
बैठा की किसी को उसके आनेकी आहटकी खबर
न हुई अपना ध्यान उसकी तरफ लगाया कि देखिये
आपस में क्या बात चीत करते है इत्तिफाकन एक
फ़कीर को छींक आई शुक्र खुदाका कियातो तीनों
कलंदर उसकी आवाज से चौक पड़े चिरागको उस
काया और अपने बिस्तरो पर हुक्के भर २ कर पीने
लगे कि एक उन आजादोंमें से बोलाकि ऐयारान
हमदरद और रफीकान जहांगर्द हम चारो सूरतें आ-
समान की गर्दिशसे और दिन रातके इनकलाबसे
दरबदर खाक बसर एक मुद्दत फिरे अलहम्द कि ता-
लाकी यावरीसे आज इस मकानपर बाहम मुलाका-

त हुई और कलका हाल कुछ मालुम नहीं कि क्या पेश आवे एक गुम्मट रहैं या जुदाहो जावें रातबड़ी पहाड़ होती है अभी से पड़े रहना खूब नहीं इससे यह बेहतर है कि अपनी सर गुजश्त जो दुनियां पर जिस पर बीतीहो बशर्ते कि झूठ कौड़ी भर न हो बयान करे तो बातोंसे रात कट जाय जब थोड़ीसी शब बाकी रहे तब लोट पोट रहेंगे सबोंने कहा या हादी जो कुछ इरशाद होताहै हमने कबूल किया पहले आपही अपना हाल जो गुजरा हो शुरू कीजिये तो हम भी मुस्तफीद होवें ॥

शैर पहिले दरवेश की ।

पहला दरवेश दोजानू हो बैठा और अपनी सैरका किस्सा इस तरहसे कहने लगा मावूद अल्लाह जुरा इधर मुतवज्जहो औरमाजरा इस सरोपा कासुनो॥

रुबाई ।

यह सर गुजश्त मेरी जरा कान धर सुनो ।
मुझको फलक ने कर दिया जेरो जबर सुनो ॥
जो कुछ कि पेश आई है शिद्दत मेरे तईं ।
उसका बयान करता हूँ तुम सरबसर ।

ऐयारों मेरी पैदायश और बुजुर्गों का मुल्क यमनहै
वालिद इस अजिज का मुल्क इस्तजार ख्वाजे अहमद
नाम बड़ा सौदागर था उस वक्तमें कोई महाजन या
व्योपारी उनके बराबर न था अक्सर सहरो कोठियों
और गुमाश्ते खरीद फ़रोख्त के मुकर्रर थे लाखों रुपये
नकद और जिन्स मुल्ककी घरमें मौजूद थी उनके
यहां दो लड़के पैदा हुए एक तो यही फ़कीर जो कफ़नी
सेली पहने हुए मुरशिदोंके हुजूर में हाजिर और बो-
लताहै दूसरी एक बहन जिसको किवलः गाह अपने
जीते जी दूसरे शहरके सौदागर बच्चोसे शादी करदी
थी वह अपनी ससुराल में रहती थी गरज़ जिसके
घरमें इतनी दौलत और एक लड़का हो उसके लाड़
प्यारका क्या ठिकाना है मुझ फ़कीरने बड़े चावचोपसे
मां बापके घरसायेमें परवरिश पाई और पढ़ना लिख-
ना सिपाहगरीका सब फन और सौदागरी का भी
खाता रोजनामा सीखने लगा चौदह वर्ष तक निहा-
यत खुशी और बेफिकरी में गुजरे कुछ दुनियां का
अन्देशा दिल में अया यकबयक एकही साल में

वालदेन क़ज़ा इलाही से मर गई अजब तरहकागम हुआ जिसका बयान नहीं कर सक्ता एक बारगी यती-महो गया कोई सिरपै बूढ़ा बड़ा न रहा इस मुसीबत मे रात दिन रोया करताथा खानापीना सब छूट गया चालीस दिन ज्यों त्यों कर कटे चेलहममें अपने बिगाने छोटे बड़े जमा हुए सबने फकीरको पगड़ी बापकी बँधाई और समझाया दुनियां में सबके मां बाप मरते आये हैं और अपने ताईभी एक रोज़ मरना है बस सबर करो और अपने घरको देखा बाप की जगह तुम सर्दार हुए अपने कारोबार में हुशियार रहा तसल्ली देकर रुखसत हुए गुमाश्ते कारबारी नौकर चाकर जितने थे आनकर हाज़िर हुए नज़रें दीं और बैठे, कोठे नकदी जिन्सके अपनी नज़र मुबारिकसे देख लीजिये एकबारगी उस दौलत पेइन्तहा पर निगाह पड़ा आंख खुलगई दीवानखाने की तैयारी की हुक्म दियाफ़र्श फरूश फ़र्राशों ने बिछा करछतपरदेचिलवनेतकल्लु फकीलगादीं और अच्छे अच्छेखिदमतगारदीदारू नौकररक्खे सरकारसे ज़र्क

र्क़की पोशाकें बनवादीं फ़क़ीर मसनद पर तकिया लगाकर बैठे वैसेही आदमी गुंडे मुफ्तवर खाने पीने वाले झूठे खुशामदी आ आकर आशना हुए और मुसाहबबने उनसे आठपहर सुहबत रहने लगी हर कहीं की बातें और जटल्ले वाही तवाही इधर उधर की करनेलगे और कहने इस जवानी के आलममें केतकीशराब या गुले गुलाब खिंचवाकर नाजनी माशूकोंको बुलाकर उनके साथ पीजिये और ऐश कीजिये।

गरज़ आदमी का शैतान आदमी है हरदम के कहने सुनने पै अपना भी मिज़ाज बहक गया शराब नाच और जुएका शुरू हुआ फिर तो यह नौबत पहुँची कि सौदागरी भूल कर तमाशबीनी और देने लेनेका सौदा हुआ अपने नौकर और रफीकों ने जब यह गफ़लत देखी जो जिसके हाथ पड़ा अलग किया गोया लुट मचादी मुझको कुछ खबर नथा कितना रुपया खर्च होना है कहां से आया और किधर जाता है मालेमुफ्त दिलेबेरहम

इस खर्च के आगे अगर गंजकारूं का होता तो भी वफ़ा न करता कई वर्षके अर्सेमें एक बारगी यह हालत होगई कि फ़क़त टोपी और लंगोटी बाक़ी रही दोस्त आशना जो दांत काटी रोटी खाते थे और चमचा भर खून अपना हर बात में निसार करते थे काफ़ूर होगए बल्कि राहबाट में कहीं अगर भेंट मुलाक़ात होजाती थी तो आखें चुराकर मुंह फेर लेते और नौकर चाकर खिदमतगार भले डले न खासबरदार साबितखानी सब छोड़कर किनारे लगे कोई बातका पूछने वाला न रहा जो कहे तुम्हारा क्या हाल हुआ सिवा गम और अफ़-सोस के कोई रफ़ीक़ न रहा अब दमड़ी का ठोरियां मयस्सर नहीं जो चबाकर पानी पीवें दो तीन फ़ाक़े कड़ाके खैंचे ताब भूख का न रहा बेहयायी का बुरका मुँह पर डाल यह क़स्द किया कि बहिन के पास चलिये लेकिन यह शर्म दिल में आति थी किब्ल:गाह की वफ़ात के बाद न बहिन से कुछ सलूक किया न खाली खत लिखा बल्कि

उसने दो एक खत खतूत मातमपुर्सी और इश्तियाक़ के जो लिखे उसकाभी जवाब स्वाब खरगाशे में न भेजा इस शरमिंदगी से जी तो न चाहता था पर सिवाय उस घर के और कोई ठिकाना नजर में न ठहरा जो तो पाव पियादा खाली हाथगिरता पड़ता हजार मेहनत से वह कइ मंजिलें काट कर बहिन के शहरमें जाकर उसके मकान पर पहुंचा वह माजाई मेरा यह हाल देख कर बलायें ली और गले से मिल कर बहुत रोई तेल मास और काले टके मुझ परसे सदके किये कहने लगी अगरचे मुलाकात से बहुत दिल खुश हुआ लेकिन भैया यह तेरी क्या सूरत बनी उसका जवाब मैं कुछ न दे सका आंखों में आंसू डबडबा कर चुपका होरहा बहिन ने जल्दी खासी पोशाक सिलवा कर हम्माम में भेजा नहा धोकर वह कपड़े पहन एक मकान बहुत अच्छा तकल्लुफ़ का मेरे रहने का मुक़र्रर किया सुबह को शौजिया हलवा सोहन पिस्ता मग्जी नास्ता को और तीसरे पहर मेवे खुश्क और तरफल फलारा रात दिन

दोनों वक्त पुलाव नानकलिये कबाब तोफे २ मजेदार मँगवाकर अपने रूबरू खिलाकर जातीथी जिसतरह खातिरदारी करती मैंने वैसे तसदिये के बाद जो यह आराम पाया खुदाकी दरगाह में हज़ार २ शुक्र बजा लाया कई महीने इस फ़रागत में गुज़रे किपांव उस लिखवत सरा बाहर न रक्खा एक दिन वह बहिन जो बजाय वादलः के मेरी खातिर रखती थी कहने लगी ऐ बीरन तू मेरी आंखों की पुतली और मा बापके मुई मिट्टी की निशानी है तेरे आनेसे मेरा कलेजा ठंडा हुआ जब तुझे देखती हूं बाग़ २ होती हूं तूने मुझे निहाल किया लेकिन मरदों को खुदाने कमाने के लिये बनायाघर में बैठे रहना उनको लाज़िम नहीं जो मर्द निखट्टू होकर घर सेत है उसको दुनियां के लोग ताना मरते हैं खसूसन इसशहर के आदमी छोटे बड़े सब तुम्हा रहने पर कहेंगे अपने बाप का माल औ दौलत खो खा कर बहनोई के टुकड़ों पर पड़ा य निहायत ब गैरती शौर मेरी तुम्हारी हंसाई और बा

माके सबब लाज लगने का है नहीं तो मैं अपने चमड़े की जूतिया बनाकर पहना दूं और कलेजे डाल रक्खूं अब यह सलाह है कि सफ़रका कस्द करो खुदा करे तो दिन फिरें और इस मुफलिसी के बदले खातिर जमई और खुशी हासिल हो यहबात सुनकर मुझेभी गैरत आई उसकी नसीहत पसंद की जवाब दिया अच्छा अब तुम माकी जगह हो जो कहो सो करूं यह मेरी मरजी पाकर घर में जाके पचीस तोड़े अशरफी के असील लौड़ियों के हाथमें लिवाकर मेरे पास रक्खे औरबोली एक काफिला सौदागरोंका दामिश्कको जाता है तुम इन अशर्फियोंकी जिन्स तिजारतकी खरीद करो एक ताजिर ईमानदारके हवाले करके दस्तावेज पक्की लिखालो और आपभी कस्द दमिश्क का करो वहां जब खैरियत से जा पहुंचो अपना माल मय मुनाफा समझ बूझ लीजियो या आप वेचियो वह नकदलेकर बजारमेंगया असबाब सौदागरोंकी खरीदकरएक बड़े सौदागरको सुपुर्द किया नविश्तह ख्वाबसे खाति

जमा करली यह ताजर दरियाकी राहसे जहाजपर सवार होकर रवाना हुआ फकीर ने खुश्की राहली चलनेको जब रुखसत होने लगा बहनने एकखास दानमें भर सिरोपाव अमरी और एकघोड़ा जड़ाऊ साजसे तव्वाजे किया और मिटाई पकवान एक खास दानमें भरकर हिरनीसे लटका दिया पखाल पानीकी शिकार बन्दमें बधवादी इनाम ज़ामिन का रुपया मेरे बाजू पर बाँध दहीका टीका माथेपर लगाकर आंसू पीकर बोली सिधारिये तुम्हें खुदाको सौंपा पीठदिखाये जातेहो इसीतरह जल्दी अपना मुँह दिखाइयो मैंनेफातिहा खैरकी पढ़करकहातुम्हारीभी अल्लाह मालिक है मैंने कबूल किया वह निकलकर घोड़े पर सवारहो और खुदाकेतवक्कुलपर भरोसा करकेदोमंजिलकी तीसरीमंजिल करता हुआ दमिश्क के पासज पहुंचा गरज जब शहरके बाहर दरवाजे पर गयाबहुत रातजाचुकीथी दरवानोंऔरनिगहबानों नेदरवाजा वंदकियाथा मैंने बहुत मिन्नतकीमुसाफि रहूँ दूसरेधावामारेआताहूं अगरकिवाड़खोल दोतो

शहरमें जाकरदाने घास की आराम पाऊं अन्दर से घुड़ककर बोले इस वक्त दरवाजा खोलने का हुक्म नहीं क्यों इतनी रात गये तुम आयेजब मैंने जवाब साफ उनसे पाये शहरपनाह की दीवार के तले घोड़े पर से उतर जीनपोश बिछा कर बैठा जागनेकेखातिरइधरउधर टहलने लगा जिस वक्त आधो रात इधर से उधर हो गई सुनसान हो गया देखता क्या हू कि एक सन्दूक किले की दीवार के नीचे चला आता है यह देखकरमैं अचंभे में हुआ कि यह तिलस्म है या खुदाबंदकरीमने मेरी हैरानी औरसरगरदानी पर रहम खाकरखजानागैबसे इनायतकिया जब वहसन्दूक जमीन पर ठहरा डरते२ पास गया देखा तो काठका सन्दूक है लालच से उसे खोला एक माशूक खूबसूरत कामिनी सी औरत जिसके देखनेसे होश जाते रहे घायल लोहू में तर बतर आंखें बन्दकिये पड़ी कुलबुलाती हैआहिस्ता २ होंठ हिलते हैं और यह आवाज मुंहसे निकलती है ऐ कमबख्त बेवफा ऐ जालिमपुरजफा बदलाइस भलाई

और मेहनत का यहीथा जो तूनेकिया भला एक जख्म और भी लगा मैंने अपना तेरा इन्साफ खुदा को सौंपा यहकह कर उसी बेहोसी के आलम में दुपट्टे का आंचल मुँह पर डाल लिया मेरी तरफ ध्यान न किया फकीर उसको देखकर और यहबात सुनकर सन्न हुआ जीमें आयाकिस बेहयाजालिमने क्यों ऐसी नाजनीन सनमको जख्मी किया क्योंउसकेदिलमें रहम न आया और हाथ इसपरक्यों कर चलाया इसके दिल में तो मुहब्बत अब तक बाकी है जो इस जाकन्दनीको हालतमें उसे याद करती है मै आपही आप यहकहरहा था आवाज उसकेकानमें गईएकबार कपड़ामुहसे सर काकर मुझकोदेखा जिसवक्त उसकी निगाह मेरे ऊपर पड़ी नजरों से लड़ीमुझे गशआने और जी सनसनाने लगा बजोर अपने तई थांभा जुरंत करके पूछा सच कहो तुम कौन हो और यह मजरा क्याहै अगर बयान करोतों मेरे दिलको तसल्लीहो यह सुनके अगर्चे ताकत बोलने की न थी आहिस्ता से कहा शुक्रहै मेरी हालत जख्मी

के मारे यह कुछहो रहा रहा है क्या खाक बोलूँ कोई दमकी मेहमान हूं जब मेरी जान निकल जावे तो खुदाके वास्तेजमामर्दी करके मुझबदबख्तको इसीसीसन्दूकमें किसीजगहगाड़ दीजो तो मै भले बुरेकी जबानसे निजात पाऊँ और तू दाखिल सवाब के हो इतना बोलकर चुप हुई रातको मुझसे कुछ तजवीज नहो सकी वह सन्दूक अपने पास उठा लाया और घड़ियां गिनने लगा कि कब इतनी रात तमाम होवै तो फजर को शहरमें जाकर जो कुछ इलाज होसके बमकदूर अपने करूं वह थोड़ी सी ऐसी रात पहाड हो गई दिल घबराने लगा वारे खुदा २ कर सुबह जब नजदीक हुई मुर्गा ने वांग दी अदमियों की आवाज आने लगी मैंने फजरा की नमाज पढ़कर सन्दूक को खुरजी में कसा ज्यों हीं दरवाजा शहर का खुला में शहैर में दाखिल हुआ हरएक दूकानदार और आ-दमी से हवेली किराये की तलाश करने लगा ढूढते २ एक मकान खुश किता नया फरागत के

भाडे का लेकर जा उतरा पहले उस माशूक को सन्दूक से निकाल कर रुई के फाहों पर दुः थम बिछौना करके एक गोशे में लिटाया और आदमी एतवारी वहां छोडकर फकीर जर्राह की तलाश में बाहर निकला हरएक से पूछता फिरता था कि इस शहर में जर्राह कारीगर कौन है और कहाँ रहताहै एक शख्सने कहाकि हज्जाम जर्राही कसब और हकीमी के फनमें पक्का है अगर मुर्दे को भी उसके पासले जाओ तो खुदाके हुक्मसे ऐसी तदबीर करेकि एकबार अल्लाभी जी उठेवह इस मुहल्ले में रहताहै ईसा नाम है यह खुशखबरी सुनकर बेअख्तयार चला तलाश करते २ उसके दरवाजे परएक मर्द सफेद पोशको वहांपर बैठे देखा और कोई आदमी मरहम की तैयारी के लिये कुछ पीसपांस रहेहैं फकीरने मारे खुशामद के मारे अदबसे सलाम किया और कहा मैं तुम्हारा नाम और खूबियां सुनकर आया हूं माजरा यह है किमैं अपने मुल्क से तिजारत के लिये

चला कबीले को बसबब मुहब्बतके साथ लिया जब नजदीक शहरके आया थोड़ी दूर रहा था जो शाम पडगई बिनदेखे मुल्क में रातको चलना मुनासिब न जाना मैदान में एक दरख्तके नीचे उतरपड़ा पिछले पहर डांका आयाजो कुछ माल असबाब पाया लूट लिया गहनेके लालच से इस बीबी को भी घायल किया मुझसे कुछ न हो सका रात जो बाकी थी ज्यों त्यों कर काटी फजर ही शहरमें आनकर एक मकान किरायेका लिया। उनको वहां रखकरमैं तुम्हारे पास दौड़ा आयाहूं खुदाने तुम्हें यह कमाल दिया है इस मुसाफिर पर मेहरबानी करो गरीबखाने तशरीफले चलो उसको देखो अगर उसकी जिन्दगी होती तुम्हें बड़ा सबाब होगा और मैं सारी उमर गुलामी करूँगा ईसा जर्राह बहुत रहम दिल और खुदा परस्तथा मेरी गरीबी की बातों पर तैश खाकर मेरे साथ उस हवेली तक आया जखमों को देखते ही मेरी तसल्ली की बोला कि खुदा के करम से इस बीबी के जखमचालीस दिनमें भरआवेगे गुसल

शफ़ाकरवा दूँगा गरज़ उस मर्द खुदा ने सब जखमों को नीम से धोधोकर साफ किया जो लायक टांकों के पाये उन्हे सिया बाकी घावोंपर अपने पास से डिबिया निकाल कर कितनों में बत्ती रक्खी और कितनो पर फाहा चढ़ाकर पट्टी से बांधदिया और निहायत शफ़्क़त से कहामैं दोनों वक्त आया करूँगा तू खबरदार रहियो ऐसी हरकत न करे जो टांके टूट जाय मुर्ग का शोरबा बजाय गिजा उसके हलक में चुआइयो और अक्सर बेदमुश्क गुलाब के साथ दिया कीजियो कि कुव्वतरहे कहकर रुखसत चाही मैंने बहुत मिन्नत की और हाथ जोड़ कर कहा तुम्हारी तशफ्फ़ी देने से मेरी भी जिन्दगानी हुई नहीं तो सिवाय मरने के कुछ सूझता न था तुम्हें खुदा सलामत रक्खे इतर पान देकर रुखसत किया मैं रात दिन उस परी के हाजिर रहता आराम अपने ऊपर हराम किया खोदा की दरगाहसे रोज२ उसके चंगे होनेकी दुआ मांगता इत्तिफाकन वह सौदागर भीआन पहुंचा और मेरा माल अमानत

मेरे हवाले किया मैंने उसे औने पौने पर बेच दिया और दारू दर्पनमें खर्च करने लगा वह मर्द जर्राह हमेशा आताजाता थोड़े अर्समें जख्म अँगूर भरलाया बाद कई दिनके गुसल सफ़ा का किया अजब तरहकी खुशी हासिलहुई खिलत और अशर्फ़ियां ईसा हज्जाम के आगे धरीं और उस परीको मुकल्लफ़ बिफर्श बछाकर मसनद पर बिठाया फ़कीर गरीबों को खैर खैरात बहुतसी की उस दिन गोया बादशाहत हफ्त अकलीमकी इस फ़कीर के हाथ लगी और उस परी का शफा पाने से ऐसा रंग निखरा कि मुखड़ा सूर्य की मानिन्द चमकने लगा और कुन्दनके मानिन्द दमकने लगा नजरकी मजाल न थी जो उसके जमाल परठहरे फ़कीर बस रोचश्म उसके हुक्म में हाजिर रहताजो फरमातो सो बजा लाता वह अपने हुक्म से गरूर और सरदारी के दिमाग में जो मेरी तरफ देखती तो फरमाती खबरदार तुझे हमारी खातिर मंजूरहै तो हमारी बात में दम नमारियोजोहमकहैं सोकीजियो अपना किसी

बातमेंदखलनकरियोनहींतोपछताइयेगाउसवजहसेयह मालूम होता था कि मेरी इक फरमावरदारी और खिदमत गुजारी का उसे अलबत्तः मंजूरहै फकोर भी उसके बगैर मरजी एक काम न करता उसका फरमाना बसरोचश्म बजा लाता एक मुद्दत इसी शऊ़नियाज़ो में कटी जो उसने फरमायश की वही मैंने ला हाज़िर की इस फकीर के पास जो कुछ जिन्स और नक्द असल और नफेका था सब खर्च हुआ उस बीराने मुल्कमें कौन एतबार करे जो कर्ज मांगने से काम चले आखिर तकलीफ रोज मर्रह के खर्चकी होनेलगा इससे दिल बहुत घबराया फिकरसे दुबला होता चला चेहर का रंगकलभमा होता चला आया लेकिन किससे कहूं जोकुछदिल परगुज़रे सोकहरदरवेशपरएक दिन उस परीने अपने शऊरसेदरियाफ्त करके कहाए फलानेतेरीखिदमतों का हक हमारेजी में नक्श कलहजर है पर उसकाबिल फैल एवज़ हमसे नहीं हो सकता अगर खर्च वास्ते जरूरीके जो कुछ दरकार होतो अपने दिलमें अँदेशा

नकर एक टुकड़ाकागज औरदावातकलम को हाजिर कर तब मैनेमालूमकियाकियहकिसीमुल्ककीबादशाह-जादी है जो इस दिलो दिमागसे गुफ्तगू करती है फिलफौरकलमदान आगेरख दिया उस नाजनीनने एक रुक्का खासदस्त से लिखकर मेरे हवाले किया और कहा किले के पास त्रिपौलिया है वहां कूचेमें एक हवेली बड़ीसी है उस मकान के मालिकका नाम शीदी बिहार तूजाकरइस रुक्केको उसतलक पहुँचादे फकीरमुवाफिक फरमरने उसके उसीनामे निशानपर मंजलि मकसूदतकजापहुँचा दरवानकी जबानी कैफियत खतकी कहला भेजी वहीं सुनतेही एक हबशी जवान खूबसूरत एक फेटा तरहदार सजे हुये बाहर निकलआया अगर रङ्गसांवलाथागोया तमाम नमक भरा हुआ मेरे हाथसे खतले लिया न बोला न कुछ पूछा उन्ही कदमों फिर अन्दर चलाथोड़ी देरमें ग्यारह किश्तियां सब मुहर जरबफ्तको तोड़ पोश पड़े हुये गुलामोंकेसिरपरधरे बाहरआयाकहा इसजवानके साथ पहुँचादो मैंभीसलामकर रुखसत हुआ और अपने

मकानमें लाया आदमियोंको वाहर से रुखसतकिया
और वहकिश्तियां अमीनत हजूरमें उस परीके गुज-
रनी देखकर फरमाया वह ग्यारहवों दरी अशर्फियों
को ले खर्चमें लाखुदाराजिक है फकीर उस नकदको
लेकरजरूरियतमेंखर्चकरनेलगाअगरचे खातिरजमाहुई
पर दिल में यह खलस वाकी था इलाही यह क्या
सुरत है वगैर पूछे पाछे इतनामालन आशनासूरत
है अजनवीने एकपुरजे कागजपर मेरे हवाले किया
अगर उसी परी से भेद पूछूं तो उसने पहलेही मना
कर रखा था वाद आठ दिन के वह माशूका मुझसे
मुखातिव हुई कि हकताला आदमी को इन्सानि-
यत का जामा इनायत किया है न फटै न मैला हो
अगरचे उसके पुराने कपड़े से उसकी आदमियत
में फरक नहीं आता परजाहिर में खल कुल्लाह की
नजरोंमें एकवार न पाता है दोतोड़े अशर्फियों के
लेकर चौकके चौराहे पर युसफ़ सौदागरकी दूकान
में जा और कुछ रकम जवाहर वेशकीमत और खिलत
जर्क वकका माल लेआ फ़कीर वहीं सवार होकर

उसकी दूकानपर गया देखातो एक जवान शकील अफ़ग़ानी जोडा पहिने गद्दीपर बैठा है और उसका यह आलम है कि आलम देखने को खड़ा है फकीर कमाल शौकसे सलाम अलेक करके बैठा और जो चीज मतलूब थी तलबकी बात चीत उस शहरके बाशिंदों को सो न थी। उस जवानने गरम जोशी से कहा जो कुछ साहबको चाहिये सब कुछ मौजूद है लेकिन यह फरमाइये कि किस मुल्क से आना और अजनबी शहर में रहनेका क्या सबबहै अगर इस हकीकत से मुत्तला कीजिये तो मेहरबानी से दूर नहीं मेरे तईं अपने हालसे जाहिर करना मंजूर न था कुछ बात बनाकर और जवाहर पोशाक लेकर और कीमत उसकी देकर रुखसत चाही जवान रूखे फीके होकर कहा अगर तुमको ऐसीही ना आसनाई करनी थी पहले दोस्ती इतनी गर्मी से क्या जरूर थी भले आदमियों में साहब सलामत का पास बड़ा होता है यह बात इस मजे और अन्दाज से कही बेइख्तियार दिलको भाई और बेमु-

इज्जत होकर वहां से उठना इन्सानियतसे मुनासिब न जाना उसकी खातिर फिर बैठा और बोला तुम्हारा फरमाव सिर आंखों परमाना हाजिर हूं इतने कहने पर बहुत खुश हुआ हँसकर कहने लगा अगर आज के दिन गरीब खाने में करम कीजिये तो तुम्हारी बदौलत मजलिस खुशी का जमा करूं दो चार घड़ी दिल बहलावें और कुछ खाने पीने का सुगल बाहम बैठ कर करें फकीर ने उस परीको कभी अकेला न छोड़ा था उसकी तनहाई याद कर चंददर चन्द उज़र किये पर उस जवान ने हरगिज नमाना आखिर नादा उन चीजों को पहुंचा कर मेरे फिर आनेका कौलकर और कसम खिलाकर रुखसतदी मैं दूकान से उठकर जवाहर और खिलअत उस परीकी खिद मत में लाय हाज़िर की उसने कीमत जवाहर औ हकीकत जौहरी की पूछा मैंने सारा अहवाल मोल तोल का और मेहमानी के वरजिद होनेका क सुनाया फरमाने लगी आदमी को कौल करा अपना पूरा करना वाजिब है हमें खुदाकी निगा

वानों में छोड़कर अपने वादे को पाकर ज्याफ़त कबूल करना सुन्नत रसूलकी है तब मैंने कहा मेरा दिल चाहता नहीं कि तुम्हें अकेला छोड़कर जाऊं और हुक्म यों होता है लाचार जाता हूं जब तलक न आऊंगा दिल यहीं लगा रहेगा यह कहकर फिर उस जौहुरी की दूकान पर गया वह मूढ़े पर बैठा मेरा इन्तजार देखरहा था देखते ही बोला आवो मिहरबान बड़ी राह दिखाई वहीं उठकर मेरा हाथ पकड़ लिया और चला जाते २ एक बाग़ में ले गया वह बड़ी बहार का बाग था हौज और नहरों में फौव्वारे छूटते थे मवे तरह बेतरह के फल रहे थे हर एक दरख्त मारे बोझ के झुक रहा था रङ्ग बिरङ्ग के जानवर उन पर चहचहे कररहे थे और हर मकान आलीशान में फ़र्श सुथरा बिछा था वहां लवे नहरे एक बङ्गले में जाकर बैठा एक दमके बाद आप उठकर चला गया फिर दूसरी पोशाक माकूल पहनकर आया मैंने देखकर कहा सुभान अल्लाह चश्म वद्दूर सुन कर मुसकराया और बोला मुना-

सिव यह है कि साहबभी अपनी लिवास बदल डालें उसकी खातिर मैंने भी दूसरे कपड़े बदले उस जवान ने बड़ी टीमटाम से ज्याफत की तैयारी की और सामान खुशी का जैसा चाहिये मौजूद किया और फकीर से मुहब्बत बहुत गरम कर मजे की बातें की इतने में साकी सुराही और प्याला बिलौर का लेकर हाजिर हुआ और गेजक्के कई किस्म की ला रक्खी नमक दान चुन दिये दौर शराब का शुरू हुआ जब दो चार जाम की नौबत पहुँची चार लड़के अमीर व साहब जमाल जुल्फें खोले हुए मजलिस में आये गाने बजाने लगे यह आलम हुआ और ऐसा समा बंधा अगर तानसेन उस घड़ी होता तो अपनी तान भूल जाता इस में एक बारगी वह जवान आंसू भर लाया दो चार कतरे बेइख्तियार निकल पड़े और फकीर बोला अब हमारी तुम्हारी दोस्ती जानीहुईपस दिल का भेद दोस्तों से छिपाना किसी मजहब में दुरुस्त नहीं एकबात बेतकल्लुफ आशनाईके भरोसे

कहता हू अगर हुकम हो तो अपनी माशूक को बुलवाकर मजलिस में तसल्ली अपनेदिलकी करूंसे उसीकी जुदाईसे दिल नहीं लगता यह बात ऐसी इश्तियाक से कही कि बगैर देखे भाखे फकीर का दिलभी मुश्ताक हुआ मैंने कहा,मुझे तुम्हारी खुशी दरकार है इससे क्या बेहतर देरन कीजिये सचहैं माशूक बिनाकुछ अच्छा नहीं लगता उस जवानने चिलवनकी तरफ इशारतकी त्योंही एकओर काली कलूटी भूतनी सी जिसके देखने से इन्सान ब अजल मर जावे जवान के पास आन बैठी फकीर उसके देखने से डर गया दिल में कहा यही बला महमूबा ऐसी जवान परीजाद की है जिसकी इतनी तारीफ और इश्तियाक जाहिर में लाहौल पढ़कर चुप हो रहा उसी आलम में तीन रात शराब और राग रङ्ग का मजलिस जमा रहा। चौथी शब को गलवा नशे और नींद का हुआ मैं ख्वाब गफलत बेइख्तियार सो गया जब सुबह उस जवानने जगाया कई प्याले खमार शिकनी के पिला कर

अपनी माशूक से कहा अब ज्यादततकलीफ़ मेहमान
को देनी खूब नहीं दोनों हाथ पकड़ कर उठे मैंने
रुखसत मांगी खुशी बखुशी इजाजत दी मैंने जल्द
अपने कपड़े कदीमी पहन लिये अपने घरको राह
ली और उस परी की खिदमत में जा जाहिर हुआ
मगर ऐसा इत्तिफाक कभी न हुआ था कि उसे
तनहा छोड़ शख्वास हुआ हूं इस तीन दिन की
गैर हाजिरी से निहायत शरमिन्दा होकर उजर ने
किया और किस्सा ज्याफत का उसके रुखसत करने
को सारा हाल अर्ज किया वह एक दाना जमाने
की थी मुसकरा कर बोली क्या मुजायका अगर
एक दोस्त की खातिर रहना हुआ हमने माफ
किया तेरी क्या तक्सीर है जब आदमी किसी के
घर पर जाता है तब उसकी मरजी से फिर आताहै
लेकिन यह मुफ्त की मेहमानियां खा पीकर चुपके
हो रहोगे या इसका बदला भी उतारोगे अब यह
लाजिम है कि जाकर उस सौदागर को अपने साथ
ले आवो और उसकी दुचन्द जियाफत करो और

इस बात को कुछ अन्देशा न जानो खुदा के करम से एक दम में सब लावाजिमा तैयार हो जावेगा और बखूबी मजलिस ज्याफत को रौनक़ पावेगी फक़ीर मुवफिक हुक्म के जौहरी के पास गया और कहा तुम्हारा फरमाना मैं तो सिर आंखों से बजा लाया अब तुम भी मेहरबानी की राह से अर्ज कबूल करो उसने कहा जानो दिलसे हाजिर हूं तब मैं ने कहा कि अगर इस बन्दे के घर तशरीफ ले चलो ऐन बन्देनवाजी है उसने बहुत उज़र और हीले किये पर मैं ने पिंड न छोड़ा यहां तलक वह राज़ी हुआ साथ उसको अपने मकान पर ले चला लेकिन राह में यही फिक्र करता आता था कि अगर आज अपना मकदूर होता तो ऐसी ज़ियाफत करता कि यह भी खुश होता अब मैं इसेलिये जाता हूं देखिये क्या इत्तिफाक होता है इसी हैस बस में घर के नजदीक पहुँचा तो क्या देखता हूं कि दरवाजे पर धूम धाम हो रही है गलियारे में झाड़ू देकर छिड़काव किया है और आसा बरदार खड़े हैं मैं

हैरान हुआ लेकिन अपना घर जानकर कदम अन्दर रक्खा देखा तो तमाम हवेली में गर्श मुकल्लफ लायक हर मकान के जा बजा बिछी है और मनददें लगी हैं पानदान गुलाबपाश इतर दान पीकदान चंगेरें नगिरस दान करीने से धरे हैं और ताको पर संग गोले नारंगियां और गुलाबियां रंग बिरङ्ग की चुनी हैं एक तरफ रंग आमेज़ अबरक की चट्टियों में चिरागों की बहार की बहार है एक तरफ झाड़ और सर्व कमल के रोशन हैं और तमाम दालान और शह नशीनों में तिलाई शमादानोंमें काफूरी शमा जुड़ी हैं और जड़ाऊ फानूसें ऊपर धरी हैं सब आदमी अपने २ ओहदों पर मुस्तैद हैं और बावर्ची खाने में देगें ठनठना रही हैं आबदार खाने की वैसीही तयारी है कोरी २ ठिलियां रूपेकी घड़ोंचियों पर साफियों से बँधी कटोरों से ढकी रक्खी है आगे चौकी पर डोंगे कटोरे व मय थाली सर पोश धरे बर्फ के आबखोरे लग रहे हैं और शोरे की सुराहियां हिल रही हैं गरज़ जब सब असबाब शहाना

मौजूदहैं और कंचनियां भांड भगतिये कलावन्त कवाल अच्छी पोशाक पहने साजके सुर मिलाये हाजिरहैं फकीर ने उस जवान को लेजाकर मसनद पर बिठाया और दिलमें हैरान था कि या ईलाही इतने अरसे में यह सब तैयारी क्यों कर हुई हर तरफ देखता था लेकिन उस परीका निशान कहीं न पाया इसी जुस्तजू में एक मर्तबः बवरची खाने की तरफ जा निकला देखता हूं तो वह नाजनीन एक मकान में गलमें कुरती पांव में तहूपोशी सिर पर सफेद रूमाली ओढ़े हुए सादी खोजादी बिन गहने पाते बनी हुई खबर गीरी ज्याफत में लग रही है।

शैर—नहीं मुहताज जेवरका जिसे खूबी खोदा ने दी।
कि जैसे खुशनुमा लगता है देखो चांद बिन गहने॥

औरत ताकीद खाने को रह एक को कर रही है खबर दार बामजेहो और आब नमक बूवास दुरूस्त हो इस मेहनत से वह गुलाबसा बदन पसीने में डूब रही है मैं पास जाकर तसद्दुक

हुआ और इस होशियारी को सराहकर दुआएं
खुशी से देने लगा वह यह सुनकर खुशामद
त्योरी चढ़ाकर बोलो आदमी से ऐसे ऐसे काम
होते हैं कि फरिश्तों की मजाल नहीं मैंने ऐसा
क्या काम किया है जो तू इतना हैरान होरहा है
बस बहुत बात बनानी मुझे खुश नहीं आती
भला कहसो कह क्या आदमियत है कि मेहमान
को अकेला बैठाकर इधर उधर फिरते हो वह
अपने जी में क्या कहता होगा अलहजा मजलिस
में बैठा कर मेहमान की खातिर दारी कर और
उसके माशूक को भी बुलवा कर उसके पास बिठला
ज्योंहीं फकीर उस जवान के पास गया और गरम
जोशी करने लगा इतने में दो गुलाम साहब
जमाल सुराही और जाम जड़ाऊ हाथ में लिये
रूबरू आये शराब पिलाने लगे इसमें मैंने उस
जवान से कहा मैं सब तरह से मुखलिस और
खादिम हूं बेहतर यह है कि वह साहब जमाल
कि जिसकी तरफ दिल साहब का मायल है

तशरीफ लावें तो बड़ी बात है अगर फरमाओ तो आदमी बुलाने के खातिर जावे यह सुनते ही खुश होकर बोला बहुत अच्छा इस वक्त तुमने मेरे दिल की बात कही मैंने एक खोजेको भेजा जब आधी रात गई वह चुड़ैल खासे चूंडूल पर सवार होकर बलाए नागहानी से आ पहुंची फकीर ने लाचार खातिर से मेहमान के इस्तकबाल करके निहायत जल्दी से बराबर उस जवान के ला बिठाया जवान उसके देखते ही ऐसा खुश हुआ जैसे दुनियां की न्यामत मिली वह भुतनी उस जवान परीजादे के गले लिपटगई सचमुच यह तमाशा हुआ जैसे चौदहवीं रातके चांदको गहन लगता है जितने मजलिसये आदमी थे अपनी अपनी अंगुलियाँ दातों में दबाने लगे कि क्या कोई बला इस जवान पर मुसल्लत हुई सबकी उस तरफ निगाहथी तमासा मजलिस का छोड़कर उसका तमासा देखने लगे एक शख्स बोला यारों इश्क और अकल में जिद है जो कुछ अक्ल में नहीं यह काफिर इश्क को

कर दिखाये लैलोको मजनू की आंखों से देखा सबोंने
कहा सच यही बात है यह फकीर बमूजिब हुक्म
के मेहमानदारी में मशगूल हरचन्द हम प्याले हम
निवाले होने को मजबूर होता था पर ये हरगिज़
उस परी के खौफ के मारे दिल खाने पीने या शैर
तमाशेको तरफ रुजू न करता था और उजर मेहमान
दारी का करके उसके शामिल न होता इसी कैफि-
यत से तीन रोज गुजरे चौथी रात वह जवान निहा-
यन ज़ोश से मुझे बुलाकरके कहने लगा अब हम
भी रुखसत होंगे तुम्हारी खातिर सब अपना करो-
बार छोड़ कर तीन दिन से तुम्हारी खिदमत में
हाज़िर हैं तुम भी तो हमारे पास एक दम बैठकर
हमारा दिल खुश करो मैंने अपने जीमें ख्याल किया
अगर इस वक्त कहना इसका नहीं मानता तो अज़ुर्दा
होगा पस नये दोस्त और मेहमान की खातिर
रखनी ज़रूर है तब यह कहा साहब का हुक्म बजा
लाना मंज़ूर हैं यह सुनते ही मुझको जवान ने
प्याला तवाजे किया और मैंने पी लिया फिर तो

ऐसा पैहम दौर चला कि थोड़ी देरमें सबआदमी मजलिसके कैफी होकर बेखबर होगए और मैं भी बे बेहोश होगया जब सुबह होगई आफताब दो नेजे चढ गया तब मेरी आंख खुली तो देखा मैंने न वह तैयारी है न वह मजलिस न वह परी फक्त खाली हवेली पड़ी है मगर एक कोने में एक कम्मल लपेटा हुआ धरा है जो उसको खोलकर देखा तो वह जवान और वह रंडी दोनों सिर कटे पड़े हैं यह हालत देखकर हवास जाते रहे अक्ल कुछ काम नहीं करती यह क्या था और क्या हुआ यानी हर तरफ देख रहा था इतनेमें एक ख्वाजेसरा जिसे ज्याफत के कामकाजमें देखाथा नजर पड़ा फकीर को उसके देखनेसे तसल्ली हुई अहवाल उस वारदात का पूछा उसने जवाब दिया तुझे इस बात के तहकीक करने से क्या हासिल जो तू पूछता है मैंने भी अपने दिल में गौर की सच तो कहता है फिर एक जरा तअम्मुल करके मैं बोला खैर न कहो भला यह तो बताओ वह माशूका किस मकान में है तब उसने

कहा अलबत्ता जो मैं जानता हूँ कह दूँगा लेकिन
मुझसा अकलमन्द आदमी वे गरजी हजूर के दो
दिन की दोस्ती पर बेतकल्लुफ होकर सोहबत शराब
पीनेकी करै यह क्या मानीर खता है फकीर अपनी
हरकत से और उसकी नसीहत से बहुत नादिम
हुआ सिवाय इस बात के ज़बान से कुछ न निकला
फिलहकीकत अब तो तकसीर हुई माफ कीजिये
बारे महल्ले ने मेहबान होकर उस परीके मकान का
निशान बताया और मुझे रुखसत किया आप उन
दोनों जखमियों को गाड़ने दाबने की फिक्र में
रहा मैं तुहमत से इस बात के अलग रहा और
इश्तियाक़ उसपरीके मिलने के लिये घबराया हुआ
गिरता पड़ता ढूंढ़ता शामके वक्त उसी कूचेमें उसी
पतेसे जो पहुंचा और नजदीक दरवाजेके एक गोशेमें
सारी रात तड़फते कटी किसी की आमदरफ्त आहट
न मिली और कोई अहवाल पुरसा मेरा न हुआ उसी
बेकसीकी हालत में सुबह होगई जब सूरज निकला
उस कानकेबालाखानेकेएक खिड़कीसे वह माहरू मेरी

तरफ़ देखने लगी उस वक़्त आलम खुशीका जो मुझपर गुज़री दिलही जानता है शुक्र खुदा किया इतने में एक खोजे ने मेरे पास आकर के कहा इसो मसजिदमें तु बैठशायद तेरी मतलब इस जगह बर आये और अपने दिलकी मुराद पाये फकीर उसके फ़रमाने से वहाँ से उठकर उस मसजिद में जारहा लेकिन आँख दरवाजे की तरफ़ लगरही थी कि देखिये परदे गैबसे क्या जाहिर होना है तमाम दिन जैसे रोजदार शाम होनेका इन्तजार खैंचता है मैंने भी वह रोज बेक़रारी में वैसेही काटी बारे जिस तरह से शाम हुई और दिन पहाड़ सा छाती पर से कटी एक बारगी वही ख्वाजेसरा जिसने उस परीके मकान का पता दिया था मसजिद में आया बाद फ़रागत नमाज मग़रब के मेरे पास आकर उस रफीकने किसबगज़ोरी नियाज का महरम था निहायत तसल्ली देकर हाथ पकड़ लिया और अपने साथ ले चला जाते २ एक बग़ीचा में बैठाकर कहा यहां रहो जब तक तुम्हारी आरज़ू बर आवै और

रुखसत होकर शायद मेरीइल्तिमास हजूर में कहने गया मैं उस बाग के फूलों की बहार और चांदनी का आलम और हौजनहरोंमें फव्वारे सावन भादोंके उछलने का तमाशा देखरहा था लेकिन जब फूलोंको देखता तब उस गुलबदन का ख्याल आता जब चांदपर नजरपड़ता तब उस माहरूका मुखड़ा याद आता यह सबबहार उसके बगैर मेरी आँखों में खारथी बारे खुदा उसके दिल को मेहरबान किया एक दमके बाद वह परी दरवाजे जैसे से चौदहवीं रात का चांद बनाव किये गले पिशवाज बादले को संजाफ मोतियों का दरो द मन टंका हुआ और सिरपर ओढनो जिसमें आंचल प हजूलहरगोखरू लगा हुआसिरसे पांवतक मोतियों मेंजड़ीहुई रौशपर आकर खड़ीहुई उसकेआनेसेतगेताजगीनये सिरसेउसबागको और इस फकीर के दिलको होगई एक दम इधर उधर सैर कर गोशे नशी में मसनद मुर्गाक पर तकिया लाय कर बैठी मैं दौड़ कर परवाने की तरह जैसे शमअ के गिर्द फिरता है तसद्दुक हुआ और गुलाम

के मानिन्द दोनों हाथ जोड़कर खड़ा हुआ इसमें वह खोजा मेरी खातिर बतौर शिफारिश के अर्ज करने लगा मैंने उस महल से कहा बन्दा गुनहगार तकसीरवार है जो कुछ सजा मेरे लायक ठहरे सो हो वह परी अजबस कि नाखुश थी बद दिमाग़ी से बोली कि अब इसके हक़ में यही भला है कि सौ तोड़े अशर्फियों के लेवे और असबाब दुरुस्त करके अपने वतनको सिधारे मैं यह बात सुनतेही काठ हो गया और सूख गया कि अगर कोई मेरे बदन को काटे तो एक बूंद खून की न निकले और तमाम दुनियां आंखों के तले अँधेरी लगने लगी और एक आह नामुरादी की बेइख्तियार जिगर से निकली आंसु टपकने लगे सिवाय खुदाके उस वक्त किसी का तवक्का नहीं मायूस महज़ होकर इतना बोला टुक अपने दिलमें गौर फ़रमाइये अगर मुझ कम-नसीब को दुनियां का लालच होता तो अपना जानोमाल हजूर में न खोता क्या इकरारगी हक खिदमत गुज़ारी का और जाँनिसारी का आलम से

उठ गया जो मुझ कमबख्त पर इतनी बेमेहरी फ़र्माई और अब मेरे तईं भी जिन्दगी से कुछ काम नहीं माशूक की बेवफाई से बिचारे आशिक नीमजाँ का निबाह नहीं होता यह सुनकर तीखी हो त्यौरी चढ़ाकर खफगी से बोली चे खुश आप हमारे आशक है मेंडकी को जुकाम हुआ ऐ बेवकूफ अपने हौसले से ज्यादा बातें खाम ख्याल हैं छोटा मूं बड़ी बात चुपरह यह निकम्मी बातचीत न कर अगर किसी और से यह हरकत बेइमानी की होतो परवरदिगार की कसम उस की बोटियां काटकर चीलहों को बाटती पर क्या करूं तेरी खिदमत याद आती है अब इसी में भलाई है कि अपनी राहले तेरी किस्मत का दाना पानी हमारी सरकार में यहीं तलक था फिर मैंने रोते २ कहा अगर मेरी तकदीर में यही लिखा है कि अपने दिलका मकसद न पाऊँ और जंगल पहाड़ में सिर टकराता फिरूं तो लाचार हूं इस बात में भी दिक्क हो कहने लगी मेरे तईं भी यह चोंचला और रमूज की बातें पंसद नहीं

आती इस इशारेको गुफ्तगू के जो लायक हो उससे जाकर कह फिर उसी खफगी के आलम में उठ कर अपने दौलतखाने को चली मैंने बहुतेरा सिरपटका मगर मुतवज्जह न हुई लाचार मैं भी उस मकान से उदास और नाउम्मेद होकर निकला गरज़ चालीस दिन तक यही नौबत रही जब शहरके कूच गरदीसे उकताता जंगलमें निकल जाता जब वहां से घबराता शहर की गलियों में दीवाना सा आता न दिन को खाता न रात को सोता जैसे धोबी का कुत्ता घर का न घाट का जिन्दगी इन्सानका खाने पीनेसे है आदमी अनाजका कोड़ा है ताकत बदन में मुतलक न रही अपाहज होकर उसी मसजिद की दीवारके तले जा पड़ा कि एक रोज वही ख्वाजेसरा जुमाको निमाज पढ़ने आया मेरे पास से चला मैं यह सैर आहिस्ता: २ नाताकती से पढ़ रहा था —

शैर—इस दर्द दिल की मौत हो या दिल को तावे हो।
किसमत में जो लिखा है या इलाही शिताब हो॥

अगरचे जाहिर में सुरत मेरी तबदील होगई

थी चेहरे की यह शकल बनी थी जिसने पहले मुझे देखा था वह भी तो पहचान न सकता था। कि वही आदमी है लेकिन वह महला आवाज दर्द को सुन-कर मुतवज्जह हुआ मेरे तईं बगौर देखकर अफ़सोस किया और मेहरबानीसे मुखातिब हुआ कि आखिर यह हालत अपनी पहुँचाई मैंने कहा अब जो हुक्म हुआ सो हुआ माल से भी हाजिर था जान भी तस-द्दुक की उसकी खुशी यों ही तो क्या करूं यह कहकर खिदमतगार मेरे पास छोड़कर मसजिद में गया नमाज और खुतबेसे फ़रागत कर जब बाहर निकला फ़कीर को एक म्याने में डालकर अपने साथ खिदमत में उसपरी बेपरवा को ले जाकर चिक के बाहर बैठाया अगरचे मेरी सूरत कुछ बाकी न थी पर मुद्दत तक शबोरोज उस परी के पास निफाक रहने का हुआ जान बूझकर बेगाना होकर ख्वाजेसे बूझने लगी यह कौन है उस मर्द आदमीने कहा यह वही कमबख्त बेनसीब हैं जो हजूर को खफ़गी और आताब में पड़ा था उसी सबब से इसकी यह सूरत बनी है

इश्क की आग से जला जाता है हरचन्द आंसुओं के पानी से बुझाता है पर वह दूनी भड़कती है कुछ कुछ फ़ायदा नहीं होता अलावः अपनी तक़सीर की खिजालत से मुआ जाता है परी ने ठठोली से फ़रमाया क्यों झूठ बकता है बहुत दिन हुए उसको खबर वतन तक पहुँचने की मुझे खबरदारों ने दी है वल्लाह आलम यह कौन है और तू किसका ज़िकर करता है उस दम ख्वाजेसरा ने हाथ जोड़कर इल्तमास किया अगर जानकी अमा पाऊँ तो अर्ज़ करूँ फ़रमाया कह तेरी जान तुझे बख्शी ख्वाजेसरा बोला आपकी जान कदरदान वास्ते खुदा के चिलवन को दरम्यान से उठाकर पहचानिये और इसकी बेकसी हालतपर रहम कीजिये नाहकशनासी खूबही अब इसके हालतपर कुछ तर्स खाइये वनाह और जाय सवाबकी है आगे अदब जो मिजाज में आवे सो बेहतर है इतने कहने पर मुस्कुराकर फ़रमाया भला कोई होगा इसे दार शफ़ामें रक्खो जब भला चंगा होगा तो इसकी अहवालकी पुरशीस

की जायगी खोजेने कहा अगर अपने दस्तखास से गुलाब इसपर छिड़कें और जबान से कुछ फरमाइये तो इसको अपने जीने का भरोसा बंधे नाउम्मेदी बुरी चीज है दुनियां बउम्मेद कायम है इस पर भी उसपरीने कुछ न कहा यह सवाल जवाब सुनकर मैं भी अपने जीनेसे उकता रहा था बेधड़क बोल उठा कि अब इसतौर की जिन्दगी को दिल नहीं चाहता पांव तो गोरमें लटका चुकाहूं एक रोज़ मरना है और इलाज मेरा बादशाहज़ादीके हाथ, करें यान करें आरे खुदाने उस संग दिल दिलको नरम किया मेहरबान होकर फरमाया जल्द बादशाही हकीमों को हाज़िर करो वोही तबीब आकर हाज़िर हुये नब्ज़ का तरह देख र बहुत गौर की आख़िरश तजवीज़ में ठहरा कि यह शख्श कहीं आशिक हुआ है सिवाय वस्ल माशूक के इसका कुछ ऐलाज नहीं जिस वक्त वह मिले यह सेहत पावे जब हकीमों की भी ज़बानी यही मर्ज मेरा साबित हुआ और हुक्म किया कि इस जवान को गर्म पानी में ले जाओ निहला कर

खासी पोशाक पहनाकर हुजूरमें ले आओ वोहीं मुझे बाहर लेगये नहलाकर अच्छी पोशाक पहना खिद-मतमें परीके हाज़िर किया तब वह नाज़नी तपाक से बोली तूने मुझे बैठे बिठाये नाहक बदनाम और रुसवा किया अब और क्या चाहता है जो तेरे दिल में है साफ़ बयानकर यह फिकरा सुनकर मेरा उस वक्त में यह आलम हुआ कि शादी मर्ग हो जाऊँ खुशी के मारे ऐसा फूला कि जामेके अन्दर न समाता था और सूरत शकल बदल गई शुक्र खुदा का किया और इससे कहा इस दम सारी हकीमी आप पर खतम हुई मुझसे मुर्देको एक बात में जिन्दा किया है देखो तो इसवक्तसे उस वक्त तक रे अहवाल में क्या फर्क होगया यहकर कर तीनबार गिर्द फिरा और सामनेही खड़ा हुआ और हजूर से यों हुक्म होता है कि जो तेरे जी में हो सो बन्दः को हफ्त अक़लीम की सल्तनत से ज्यादा यही है कि ग़रीब नेवाज़ी करके इस आजिज़को क़बूल कीजिये और अपनी क़दमबोसीसे सरफ़राज कीजिये एक लह-

यह तो सुनकर गोतेमें हुई फिर किनवियोंसे देखकर कहा बैठो तुमने खिदमत और वफ़ादारी ऐसी की है जो कुछ कहो सो फबती हैं और अपने भी दिल पर नक्श है खैर हमने कबूल किया उसी दिन अच्छी सायत और शुभ लगन में चुपके २ काज़ी ने निकाह पढ़ादिया बाद इतनी मेहनत और आफ़-तके खुदाने यह दिन दिखाया कि मैंने अपने दिल का मुद्दा पाया लेकिन जैसी दिल में आरजू उस परी से हम बिस्तर होने की थी वैसीही दिल में बेकली उस वारदात अजीब के मालूम करने की थी कि आजतक मैंने कुछ न समझा कि यह परी कौनहै और यह हबशी साँवला सजीला जिसने एक पुरज़े कागज पर इतनी अशर्फियों की बिदरी मेरे हवाले की कौन था और तैयारी ज्याफत की बादशाहों के लायक एक पहर में क्यों कर हुई और वे दोनों बेगुनाह उस मजलिस में क्यों मारे गये और सबब खफगी और बे मुरव्वती का बावजूद खिदमत गुजारी और

गाज बरदारी के मुझपर क्यों हुआ और फिर एक बारगी इस आजिज़ को यों सर बुलंद ग़रज़ इसी वास्ते बादरस्म और रसूमात निकाह के आठ दिन तक बावस्फ़ इश्तियाक क़स्द मुआशरत को न किया रात को साथ सोना सुबह को योंही उठ खड़ा होना एक दिन ग़ुसल करने के लिये मैंने ख़वास को कहा कि थोड़ा पानी गरम करदे तो न्हाऊँ मल्का मुसकरा कर बोली किस बिरते पर तत्ता पानी मैं ख़ामोश हो रहा लेकिन वह परी मेरी हरकत से हैरान हुई बल्कि चेहरे पर आसार ख़फ़गी के नमूद हुए यहां तलक कि एक रोज़ बोली तुम भी अजब आदमी हो या इतने गर्म या इतने ठंढे इसको क्या कहते हैं अगर तुम्हें कुव्वत न थी तो क्यों ऐसी कच्ची हविस पकाई उस वक्त मैंने बेधड़क होकर कहा ऐजानी मुसफी शर्त है आदमी को चाहिये कि इन्साफ से न चुके बोलो अब क्या इन्साफ रह

गया है जो कुछ होना था सो हो गया फकीर ने
कहा वाकई वही आरज़ू और मुराद मेरी यही थी
सो मुझे मिली लेकिन दिल मेरा दुब्धा में है
और दो दिला में आदमी की खातिर परेशान रहती
है उसमें कुछ नहीं हो सक्ता इन्सानियत से खारिज
हो जाता है मैंने अपने दिल में यह कौल किया
था कि बाद निकाह के ऐन दिल की शादी है
बाजी २ बातें जो ख्याल में नहीं आती और नहीं
खुली हज़ूर से पूछूंगा कि जबान मुबारिक से उसका
बयान सुनूं तो जी को तसकीन हो उस परी ने
चीं जबीं होकर कहा क्या खूब अभी से भूल गये
वह याद करो बारहा हमने कहा है कि हमारे काम
में हरगिज़ दखल न कीजिये और किसी बात के
दरपै न हूजिये खिलाफ मामूल यह बे अदबी करनी
क्या लाजिम फकीर ने हंसकर कहा जैसी और
बेअदबियाँ माफ करने का हुक्म है एक यह भी
सही वह परी नजर बदलकर बैठी इतनी सुन आग
बबूला बन गई और बोली अब तो बहुत सिर चढ़ा

है जा अपना काम कर इन बातों से तुझे क्या फायदा होगा मैंने कहा दुनियां में अपने बदन को शरम सबसे ज्यादा होती है लेकिन एक दूसरे का वाकिफकार होता है पस जब ऐसी चीज दिल पर ख्याल रक्खी तो और कौन सा भेद छुपाने लायक है मेर इस रमज को वह परी ख्याल से दरियाफ्त कर २ कहने लगी यह बात सच्ची है पर जी में यह सोच आता है अगर मुझ निगोड़ी का राज फाश हो तो बड़ी कयामत मचे बोला यह मजकूर है बन्दे की तरफ से यह ख्याल दिल में न लावो और खुशी से सारी कैफियत जो बीती है फ़रमाओ दिल से हरगिज मैं जबान तक न लाऊँगा किसी के कान में पड़ना क्या इमकान है जब उसने देखा अब सिवाय कहने के इसे अजीज से छुटकारा नहीं लाचार होकर बोली इन बातों के कहने में बहुतसी खराबियाँ हैं तू खामख्वाह दरपै इसके हुआ खैर मेरी खातिर अजीज है इसलिये मेरी सरगुज्श्त बयान करती हूं तुझे भी इसका पोशीदा रखना जरूर है

खैर शर्तें गरज बहुतसी ताकीद कर २ कहने लगी
कि मैं बदबख्त मुल्क दमिश्क के सुल्तान की बेटी
हूं और वह सुलतानों से बड़ा बादशाह है सिवायी
मेरे कोई लड़का बाला उसके यहां नहीं हुआ जिस
दिन से मैं पैदा हुई मां बाप के साये में नाजो
नियामत और खुशी से पली जब होश आया तब
मैंने अपने दिलको खूबसूरतें और नाजनियों के
साथ लगाया चुनानचे सुथरी परीज़ाद हमजोली
उमराज़ दिया मुसाहबत में और अच्छी क़बूल
सूरतें हम उम्र खवासें सहेलियाँ खिदमत में रहती
थीं तमाशा नाच और रंग का हमेश देखा करती
दुनियाँ केभलें बुरेसे कुछ काम न था अपनी बेफ़िक्रीके
आलम में देख कर सिवाय खुदा के शुक्र के कुछ
मुंह से न निकलता था इत्तिफ़ाक़न खुदबखुद ऐसी
तबीअत हुई न मुसाहबत किसी की भाई न मजलि-
सखुशी की खुश आई सौदाई सा मिज़ाज होगया
दिल उदास और हैरान न किसी की सूरत अच्छी
लगे न बात कहने सुनने को दिल चाहे मेरी यह

हालत देखकर दाई दादा छू २ अन्ना सबको सब मुतफ़िक्कर होवें और क़दम पर गिरने लगी यही ख्वाज़ेसरा नमकहलाल कदीम से मेरा महरम और हमराज़ है इससे कोई बात मख़फ़ी नहीं मेरी बहशत देखकर बोला अगर बादशाह ज़ादी थोड़ासा शरःबत वरकुल ख्याल का नोशजा फरमावें तो यक़ीन है तबीयत बहाल हो जाय और फ़रहत मिज़ाज में आये उसके इसी तरह के कहने से मुझे भी शौक़ हुआ तब मैंने फरमाया जल्द हाजिर करो महली बाहर गया एक सुराही उसी शरबत की तकल्लुफ से बनाकर लड़के के हाथ लिवाकर आया मैंने पिया जो कुछ फ़ायदा उसका बयान किया था वैसा ही देखा उस वक्त उस खिदमत के इनाम में एक भारी खिलकत खोजे को इनायत किया और हुक्म किया कि एक सुराही हमेशा बिला नागा हाज़िर किया कर उस दिन से यह मुक़र्रर हुआ कि ख्वाजे सरा सुराही उसी छोकरे के हाथ लिवा लावे और बन्दी पी जावे जब उसका नशा तुलू होता तो

उसकी लहर में उस लड़के से ठट्ठा मज़ाक़ कर २ दिल बहलाता थो वह भी जब ढीठ हुआ तब अच्छी २ मीठी २ बातें करने लगा और अचम्भे की नक़लें लाई बल्कि आहऊह भी भरने और सिसकियां लेने सूरत तो उसकी तरह दार लायक़ देखने की थी कि बेइख़्तियार जी चाहने लगा मैं दिल के शौक़ से और अठखेलियों के ज़ोक़ से हर रोज़ इनाम बख़्शने लगा पर कमबख़्त वैसेही कपड़ों से जैसे हमेशा पहले रहता था हजूर में आता बल्कि वह लिबास भी मैला कुचैला हो गया एक दिन मैंने पूछा तुझे सरकार से इतना मिला पर तू ने अपनी सूरत को वैसी ही परेशान बना रक्खी क्या सबब है वह रुपये कहां खर्च किये या जमा कर रक्खे लड़के ने यह ख़ातिरदारी की बातें जो सुनी मुझसे अपना अहवाल पुर्सां पाया आंसू डबडबाकर कहने लगा कि जो कुछ आपने इस गुलाम को इनायत किया सब उस्ताद ने ले लिया मुझे एक पैसा नहीं दिया कहां से दूसरे कपड़े बनाऊं जो हजूर में पहन कर

आऊं इसमें मेरी तकसीर नहीं लाचार हूं इस गरीब के कहने पर उसका मुझे तर्स आया वोहो ख्वाजे-सरा को फरमाया आज से इस लड़के को अपनी सुहबत में तरबियत कर और लिबास अच्छा तैयार कराकर पहना और लड़कों में बेफायदा खेलने कूदने न दे बल्कि अपना खुशी यह है कि आदाब लायक खिदमत हजूर के सीखे और हाज़िर रहे ख्वा-जेसरा मुआफ़िक फ़रमाने के बजा लाया और मेरी मरजी जो इधर देखी निहायत उसकी खबर गारी करने लगा थोड़े दिनों में फ़राग़त और खुशी और खुर्रमी के सबब से उसका रंग रोगन कुछ का कुछ होगया और कांचली सी डाल दी मैं अपने दिल को हरचन्द संभालता पर उसका फिर की सरत दिल में ऐसी चुभ गई थी यह जो चाहता था कि अपनी मारे प्यार के उसे कलेजे में डाल रक्खूं और आंखों से जुदा न करूं आखिर उसको मुसाहबत में दाखिल किया और खिलअत तरह बतरह की जवाहर और कपड़े रंग बरङ्ग के पहना कर देखा

करती वारे उसके नजदीक रहने से आंखों के सुख कलेजे की ठण्डक हुई हरदम उसकी खातिरदारी आखिर को मेरी यह हालत पहुँची कि अगर एक दम कुछ जरूरी काम को मेरे सामने से जाता तो चैन न होता और कई वर्ष के वह जवान हुआ मसे भींगने लगी छबि दूनी दुरुस्त हुई तब उसकी चरचा बाहर दरबारियों में होने लगी दरवान ख्वा-वल और चोबदार उसको महल के अन्दर आने जाने से मने करने लगे आखिर उसका आना मौकूफ हुआ मुझे तो बगैर देखे कल न पड़ती थी एक दम पहाड़ था बस यह अहवाल नाउम्मेदी का सुना ऐसी बद हवासी होगई गोया मुझ पर कयाम टूटी और यह हालत हुई न कुछ कह सक्ती हूं न उन बिन रह सक्तीहू कुछ बस नहीं चल सकता इलाही क्या करूं अजब तरह का कलक हुआ मारे बेकरारी के उसी महली को जो मेरी भेदी था बुलाकर कहाकि गौर और परदाख्त उस लड़के को मंजूर है बिलफैल सलाह वक्त यह है कि हजार अशर्फी पूंजी देकर

चौक चौराहे में दूकान जौहारोंकी करवा दो तो तिजारत करके उसके नफेसे अपनी गुजरान किया करें फरागत और मेरे महलके करीब एक हवेली अच्छे नकशे की रहने के लिये बनवादो लौंडी गुलाम नौकर चाकर जो जरूरी हों मोल लेकर और दरमहा मुकर्रर कर के उसके पास रख दो और किसी तरह से बेआराम न हो ख्वाजेसरा ने उसके बूदवाश और जौहारीपने और तिजारत की सब तैयारी कर दी थी थोड़े अरसे में उसको दूकान ऐसी चमकी और नमूद हुईकि खिलअते फाखरा और जवाहर बेश कीमत सरकार में बादशाह को और अमीरों की दरकार बमतलूब होती उसके ही बाहम पहुंचती आहिस्ता २ यह दूकान जमी कि जो तोफा हरएक मुल्कका चाहिये वहीं मिले सब जवाहरियों का रोज गार उसके आगे मंदा हो गया गरज उस शहर में उसको कोई बराबरी नहीं कर सकता बल्कि किसी मुल्कमें वैसा कोई न था इस कारोबार में उसने तो लाखों रुपये कमाये पर जुदाई उसकी रोज बरोज नुकसान

मेरे तन बदन का करने लगी कोई तदबीर बन न आई कि उसको देखकर अपने दिलको तसल्लीकरूँ आखिर को उसी वाक़िफकार महली को बुलाकर और कहा कोई ऐसी सूरत बन आये कि ज़रा सूरतमैं देखूं और अपनी जान को सबर दूं मगर यह तदबीर है कि एक शख्स उसको हवेली से खुदवाकर महल में मिलाओ हुक्म करते ही कई दिनोंमें ऐसी नक़ब तैयार हुई कि जब सांझ हो तो चोर यह ख्वाजेसरा उसी राह से ले आता तमाम रात शराबका ख़ुराक ऐसी अशरतमें कटती मैं उसके मिलने से आराम पाती वह हमें देखने से खुश होता जब फजरका तारा निकलता पहले उसी राह से उस जवान को घर पहुंचा देता इन बातों के सिवाय उस खोजे के और दो दाइयां जिन्होंने मुझे दूध पिलाया था और पाला था चौथा आदमी कोई वाक़िफ न था मुद्दत तक इसीतरहसे गुजरी एकरोज का जिक्र है कि मुआफिक मामूल के खोजा उसको बुलाने गया देखे तो वह जवान फिक्रमन्दसा चुपका

बैठा है महलो ने पूछा आज खैर है क्यों ऐसे दिल गीर हो चलो हजूर ने याद फरमाया है उसने हरगिज जवाब न दिया ख्वाजेसरा अपना सा मुँह लेकर अकेला फिर आया अहवाल उसका अर्ज किया मेरे तईंजो शैतान खराब करने पर था उस पर भी मुहब्बत उसकी दिल से न भूली अगर यह जानती कि इश्क और चाह ऐसे नमक हराम बेवफा की आखिर को बदनाम और रुसवा करेगी और नाम नामूस सब ठिकाने लगेगा तो उसी दम उस काम से बाज आती और तोबः करती फिर उसका नाम न लेती न अपना दिल उस बेहया को देती। पर होना तो यों था इस लिये हरकत बेजा उसकी खातिर मैं न लाई और उसके न आने का माशूकों का चोचला और नाज़ समझा उसका नतीजा यह देखा कि इस सरगुजश्त से बगैर देखे भाले तू भी वाक़िफ हुआ न हुआ मैं कहां और तू कहां खैरजो हुआ इस खर दिमागी पर उस गधे के ख्याल दुबारा ख्वाजेके हाथ पेगाम भेजा अगरतू इस

वक्तन आयेगा तो मैं किसी न किसी ढबसे वहीं आती हूं लेकिन मेरे आने में बड़ी कहावत है अगर यह भेद खुले तो तेरे हक्में बहुत बुरा है ऐसा काम न कर जिस में सिवाय रुसवाई के कुछ फल न पाया और उसके सिवाय फायदा नजर न आया बेहतर यही है कि जल्द चला आ नहीं तो मुझे पहुँचा जान जब यह सन्देसा गया और इश्तियाक मेरा बदरजे कमाल देखा भोंड़ी सी सूरत बनाए हुए नाजनखरे से आया जब मेरे पास बैठा तब मैंने उससे पूछा कि आज रुकावट और खफगी का क्या बाइस है इतनी सोखी गुस्ताखी कभी न की थी हमेशः बिला उजर हाजिर होता था तब उसने कहा गुम-नाम गरीब हजूर की तवज्जह से और दामिन दौलत की बायस इस मकदूर को पहुँचा आराम से जिन्दगी कटती है आपके जानोमाल को दुआ करता हूं यह तकशीर बादशाही के माफ करने के भरोसे इस गुनहगार से सरजद हुई उम्मेद वार अफू का हूं वह तो जानो दिल से उसे चाहती थी

उसकी बनावट की बातों को मान लिया और शरा-रत पर नजर न की बल्कि दिलदारी से पूछा क्या तुझको ऐसी मुशकिल दरपेश आई जो ऐसा मुतफिक्कर हो रहा हैं उसको अर्ज कर उसकी भी तदबीर हो जायगी गरज उसने खासकारी की राह से कहा कि मुझको सब मुशकिल है और आपके रूबरू सब आसान है आखिर को उसके फहवाय कलाम और बहुत कहावत से यह खुला कि एक बाग निहायत सरसब्ज़ और इमारत आली हौज तालाव कुएँ फुव्वारा समेत गुलाम की हवेली के नजदीक नाफ शहर में बिकाऊ है और उस बाग के साथ एक लौंडी भी कि इलम मौसीकी में खूब सलीका रखती है लेकिन यह दोनों बाहम बिकती हैं न इकला बाग जैसे ऊँट के गले में बिल्ली जो कोई यह बाग लेवे उस कनीज को भी कीमत देवे और तमाशा यह है कि बाग का मोल लाख रुपये और उस बांदी का मोल पांच लाख फिदवी से इतने रुपये बिलफेल सरंजाम नहीं हो सक्ते। मैंने उसका

दिल बहुत बेइख्तियार शौक में उनकी खरीदारी के पाया कि इस वास्ते दिल हैरान और खातिर परेशान था बावजूदे कि रूबरू मेरे पास बैठा था तब भी चेहरा उसका मलीन और दिल उदास था मुझे तो खातिरदारी उसकी हरघड़ी और हर पल मंजूर थी उसवक्त ख्वाजेसरा को हुक्म हुआ कि कल सुबह को कीमत उस बाग की लौंडा समेत चुका कर कबाले बाग का और खत कनीजक का लिखा कर उस शख्स के हवाले करो और मालिकको ज़र कीमतखज़ाने आमरह से दिलवादो इस परवानगी के सुनतेही आदाब बजालाया और मुँह पर रूहत आई सारी रात उसी क़ायदे में जैसे हमेशः गुज़रती थी हँसी खुशी से कटी फ़जर होते ही वह रुखसत हुआ ख्वाजो ने मुवाफ़िक फ़रमाने के उस बाग को और लौंडी को खरीद करदिया फिर वह जवान रातको मुवाफ़िक मामूलके आया जाया करता एक रोज बहार के मौसम में कि मकान भी दिलचस्प था बदली घुटरही बूँदिया पड़ती थी बिजली कौंद

रही थी और हवा नर्म नर्म बहती थी गरज अजब कैफियत उस दम थी हुवाब और गुलाबियां ताकों पर चुनी हुई नज़र पड़ी दिलने चाहा कि एक घूंटलूं जब दो तीन प्यालों की नौबत पहुँची वोंही ख्याल उस बाग नौ खरीद का गुजरा कमाल शौक हुआ कि एक दम इस आलम में वहां की सैर किया चाहिये कमबख्ती आवे ऊँट चढ़े कुत्ता काटे अच्छी तरह बैठे बिठाये एक दाई को साथ लेकर सुरंग की राह से उस जवान के घर गई वहां से बाग़ की तरफ चली देखा तो ठीक उस बाग की बहार बहिश्त की बराबरी करती है कतरे शबनम के दरख्तों के सर सब्ज़ पत्तों पर पड़े हैं गोया जमुर्द के पेड़ों पर मोती जड़े हैं और सुरखी फूलोंकी उस अब में अच्छी लगती है जैसे शामको शफ़क फूले हैं और लबालब नहर मानिन्द फर्श आईने के नज़र आती है और मौजें लहराती हैं ग़रज उस बाग़में हरतरफ सैर करती फिरती थी कि दिन होचुका स्याही शाम की नमूद हुइ इतने में वह जवान एक गोशे पर नज़र आया

मुझे देख बहुत अदब और गर्मजोशी से आगे बढ़कर मेरा हाथ अपने हाथ पर धर कर बारहदरी की तरफ लेगया जब मैं वहां गई तो वहां के आलम ने सारे बाग की कैफियत को दिल भुला दिया यह रोशनी का ठाठ था जो बजा कुमकुमे चिरागान कंदील और फानूस ख्याल शमे नजलिस हैरान और फानूसे रोशन थी कि शब्बरात बावजूद चांदनी और चिरागन के उस के सामने अंधेरी लगती एक तरफ आतिशबाजी फूलझड़ी अनार दाऊदा पहुँचना मुराबरीद महताबी हवाई चरखी मुंहफूलजाय जुही पिटांरिसता छूटते थे इस अरसे में बादल फट गया और चाँद निकल आया बऐन हो जैसे नाफरमान जोड़ा पहने हुए कोई माशूक नजर आजाता है बड़ी कैफियत हुई चाँदना छिटको हैं जवान ने कहा अब चलकर बाग के बाला खाने पर बैठिये मैं ऐसी अहमक हो गई थी जो वह निगोड़ा कहता सो मान लेती अब यह नाच नचाया कि मुझको ऊपर लेगया वह कोठा ऐसा बुलंद था कि तमाम शहर के मकान और

बाजार के चिरागान गोया पांई बाग थे मैं उस
जवान के गले में हाथ डाले हुये खुशी के आलम
में बैठी थी इतने में एक रंडी निहायत भोंडी से
निकल शराब का शीशा हाथ मे लिये हुए आ
पहुँची मुझे उस वक्त उसका आना बहुत बुरा
लगा और उसकी सूरत देखने से दिल में होलां उठा
तब मैंने घबरा कर जवान से पूछा यह तोफा इल्लत
कौन है तू ने कहां से पैदा की वह जवान हाथ
बांध कर कहने लगा यह वही लौंडी है जो इस बाग
के साथ हजूर की इनायत से खरीद हुई हमने
मालूम किया कि इस अहमक़ने बड़ी ख्वाहिश से
उसको लिया है शायद इसका दिल उस पर माय
ल है इसी खातिरसे पेंचताब खाकर मैं चुपकी
होरही लेकिन दिल उसी वक्त से मुकद्दर हुआ और
ना खुशी मिजाज पर छागई तिस कयामत उस
ऐसे तैसेने यह किया को उसी छिनाल को बनाया
उस वक्त मैं अपनी लोहू पीती थी और जैसे पूती
को कौए के पिंजरे में बन्द करता है न जाने की

फुरसत पाती थी और न जाने को जी चाहता था किस्से मुख्तसर वह शराब बूंद की बंद थी जिसके पानी से आदमी हैवान हो जाता है दोचार जाम पैदर पै उसी उजावके जवान को दिये और आधा प्याला जवान की मिन्नत से मैंने भी जहर मार पिया आखिर वह वेहया भी बद मस्त होकर उस मरदूद से वेहूदा अदाएं करने लगा और वह चेला भी नशे में बेलिहाज हो चली और नाशाकूत हरकत करने लगी मुझे यह गैरत आई अगर उस वक्त जमीन फटती तो मैं समाजाऊं लेकिन उसकी दोस्ती के बाइस मैं इस पर भी चुपहो रही पर वह तो असल का पाजी था मेरे इस दर गुजर ने को न समझा नशे की लहर में और भी दो प्याले चढ़ गया कि रहता सहता होश था वह भी गुम हो गया और मेरी तरफ से मुतलक धड़काजी से उठाया वेशरमी से मुहबत के गलवे मेरे रोबरू उस वेहया ने उस वंदोड़ से सुहबत की और वह पछेल पाई भी उस हालत में नीचे पड़ी हुई नखरे

तखे करने लगी और दोनों में चूमा चाटी होने लगी न उस बेवफा में वफा न उस बेहया में हया जैसी रूह वैसे फरिश्ते मेरी उस वक्त यह हालत थी जैसे औसर चूके डोमनी गाये ताल बेताल अपने ऊपर लानत करती थी कि लबो पर जान आई जी की यह सजा पाई आखिर कहां तक सहू मेरे सिर से पांव तक आग लग गई और अंगारों पर लोटने लगी इस गुस्से और तेशमें यह कहावत कही बैल न कूदी कूदा गौन यह तमाशा देखे कौन यह कहती हुई वहाँसे उठी वह शराबी अपनी खराबी दिल में सोचा अगर बादशाहजादी इस वक्त नाखुश हुई तो कलमेरा क्या हाल होगा और सुबह क्या कयामत होवेगी अब बने तो इसका काम तमाम कर डालूं यह इरादा गैबानी की सला से जीमें ठहराकर गले में पटका डालकर मेरे पाउं आकर पड़ा और पगड़ी सिर से उतार मिन्नत और जारी करने लगा मेरा दिल तो उसपर लट्टू हो ही रहा था जिधर लिये फिरता उधर फिरती थी और चक्की की तरह

मैं उसके अख्तियार में थी जो कहता था सो करती थी ज्यों त्यों मुझे बहला कर फुसलाकर फिर बिठाया और उसी शराब दो आतिशी के दो चार प्याले भर २ कर आप भी पिये और मुझे भी दिये एक तो गुस्से के मारे जलभुनकर कबाब होही रही थी दूसरे ऐसी शराब पी जल्द बेहोश होगई कुल हवास बाकी न रहे तब उस बेरहम नमकहराम कर संग दिल ने तलवारसे मुझे घायल किया बल्कि अपनी दानिस्त में मार चुका उसदम मेरी आंख खुली तो मुंह से यह निकला खैर जैसा हमने किया वैसा पाया लेकिन अपने तईं मेरे उस खून नाहक से बचाओ मुबादा हो कोई ज़ालिम तेरा गिरे बागीर, मेरे लोहू को तू दामिन से जो हुआ सो हुआ। किसी से यह भेद जाहिर न कीजियो। और हमसे यहां तक दरगुजर न की फिर उसको खुदा के हवाले करके मेरा जी डूब गया मुझे अपनी सुधबुध कुछ न रही शायद उस कसाईने मुझे मुर्दा ख्याल करके उस सन्दूक में डाल करके किले की दीवारके तले लटका

दिया तूने देखा मैं किसी का बुरा न चाहती थी लेकिन यह खराबियां किस्मत में लिखी थी मिटा नहीं कर्म की रेखा इन आंखों के सबब यह कुछ देखा अगर खूबसूरतों के देखने का दिल में शौक न होता तो वह बदबख्त मेरे गले का तौक न होता अल्लाह ने यह काम किया कि तुझको वहां पहुंचा दिया सो और सबब मेरी जिंदगी का हुआ अब हया जीमें आती है कि यह रुसवाइयां खैंच कर अपने तईं जीति न रक्खुंगी किसी को मुंह न दिखाऊं पर क्या करूं मरने का अख्त्यार अपने हाथ में नहीं खुदाने मार कर फिर जिला दिया आगे देखें क्या किस्मत में बदा है जाहिर में तो तेरी दौड़ धूप और खिदमत काम आई जो वैसा जख्मों से शफ़ापाई तूने जानो माल से मेरी खातिरदारी की और जो कुछ अपनी बिसात थी हाजिर की उन दिनों तुझने खर्च और दो दिला देखकर वह कगज शैदी बाहर को जो मेरा खजानची है लिखा उस में यही मजमून था कि मैं खराफियत से अब फलाने मकान

में हूँ मुझे बदताले की खबर बोल्दे शरीफ की खिद-
मत में पहुंचाइयो उसने तेरे सो दो किश्तियां नक़द
की खर्च की खातिर भेज दी और जब तुझे यह
खिलअत और जवाहर की खरीद को यूसुफ सौदा-
गर की दूकान भेजा मुझे यह भरोसा थी कि वह
काम हौसले हर एक से जल्द आशना हो बैठता है
तुझे भी अजनवी जानकर अग़लब है कि दोस्ती
करने के लिये इतरा कर दावत ज्याफत करेगा सो
मनसुबा मेरा ठीक बैठा जो कुछ मेरा दिल में ख्याल
आया था उसने वैसा ही कि तु जब उससे क़ौल
व करार फिर आने का करके मेरे पास आया और
महमानों की हकीकत और उसका हजिद होना
मुझ से कहा मैं अपने दिल में खुशी हुई जब तू
उसके घर में जाकर खावे पीवेगा तब अगर तूभी
उसको महमानी की खातिर बुलायेगा इसलिये तुझे
ल्द रुखसत किया तीन दिन के पीछे जब तू वहाँ
से फरागत करके आया और मेरे रूबरू उज्र गैर
जिहा री आशरमिंदगी से लाया मैंनेतेरी तरफकी के

लिये फ़र्माया कुछ मुजयका नहीं जब उसने रजा दी तब तू आया लेकिन बेशरमी खूब नहीं कि दूसरे का अहसान अपने सर पर रक्खे और उसका बदला न चुकावे अब तू भी जाकर उस को इस्तदुआ कर और अपने साथही ले आ जब तू उसके घर गया तब मैंने देखा कि यहाँ कुछ असबाब महमानदारी का तैयार नहीं अगर वह आ जाय तो क्या करूँ लेकिन यह फ़ुरसत पाई कि यह मुल्कमें कदीम से से बादशाहों का यह मालूम है कि आठ महीने कारोबार मुल्की और माली के वा मुल्कगोरी में बाहर रहते हैं और चार महीने मौसम बरसात के किले मुबारक में जलूस फ़रमाते हैं इन दिनों दो चार महीने से बादशाह यानी वली नियामत मुझ बद-बख्त के बँदोबस्त की खातिर मुल्कगोरी को तशरीफ ले गये हैं जब तक त उस जवान को साथ लेकर आये शादी बहार ने मेरा अहवाल खिदमत में बाद-शाह बेगमके कि वाल्दे मुझ नापाक की है अरज किया फिर मैं तकसीर और गुनाह से खिजल होकर

उनके रूबरू जाकर खड़ी हुई और जो सर गुजश्त
थी सब बयान की हरचँद उन्होंने मेरे गायब होने
की कैफियत दूरंदेशी और महमानदारी से छुपा
रक्खी थी कि खुदा जाने इसका अंजाम क्या हो यह
रुसवाई जाहिर करनी खुब नहीं मेरे बदले मेरे ऐबों
को अपने पेट में रख छोड़ा था लेकिन मेरी तलाश
में थी जब मुझे इस हालत में देखा और सब माजरा
सुना आंसू भर आई और फरमाया कमबख्त नाशु-
दनी तुझे जान बुझकर नामो निशान सारा बाद-
शाहत का खोया हजार अफसोस और अपनी
जिन्दगी से भी हाथ धोया काशके तेरी एवज में
पत्थर जनती तो सबर आता अब भी तोबः कर जो
किस्मत में था सो हुआ अब आगे क्या करेगी
जीवेगी मैंने निहायत शर्मिन्दगी से कहा मुझ बेह-
याके नसीबों में यही लिखा था जो इन बदनामी
और खराबी में ऐसी २ आफतों से बचकर जीती
रहूंगी इससे मरना ही भला है अगरचे कलंक का
टीका माथे पर लगा पर ऐसा काम नहीं किया कि

जिसमें मा बापके नामको ऐब लगे अब यह बड़ा दुख है कि वे दोनों कहया मेरे हाथ से बच जायँ आपसमें रंगरलियां मचाये और मैं उनके हाथों से यह कुछ दुख देखूं हैफहै कि मुझसे कुछ न हो सके यह उम्मेदवार हूं कि खानसामा को परवानगी हो तो असबाब ज्याफत की बखूबी तमाम इस कमबख्त के मकान में तैयार करैं तो मैं दावत के बहाने से उन दोनों बदबख्तों को बुलाकर उनके अमला को सजा दूं और ऐवज लूं जिस तरह उसने मेरे ऊपर हाथ छोड़ा और घायल किया मैं भी दोनों पुरजे २ करूं तब मेरा कलेजा ठंढा हो नहीं तो इस गुस्से की आगमें फुक रही हूं आखिर जलभुनकर भुभुनहो जाऊंगा यह सुनकर अम्मा ने आत्मा के दर्द से मेहरबान होकर ऐश्पोशी को और सारा लवाजिमा ज्याफतका उसी ख्वाजेसरा के साथ जो मेरा महरम है करदिया सब अपने २ कारखाने में आकर हाजिर हुए शामके वक्त उस मुए को लेकर आया मुझे उस छिनाल बांदी को भी आना मंजूर था चुनाचे

फिर तुमको ताकीद कर कर उसे भी बुलवाया वह भी आई और मजलिस जमी शराब पीपी कर सब बदमस्त और बेहोश होगए और उनके साथ तू भी कैफी होकर मुर्दासा पड़ा मैंने किलमाकनाको हुक्म दिया कि उन दोनों का सिर तलवारसे काट डाल उसने वो एकही दम में तलवार निकाल दोनों के सिर काट बदन लाश कर दिये और तुझ पर गुस्से का यह सबब था कि मैंने इजाज़त ज्याफत की दी थी कि वह दोनोंकी दोस्ती पर एतमाद करके सरीक मयखोरी का हुआ अलक़िस्से यह तेरी हिमाक़त अपने तई पसंद न आई कहने लगी कि तू पीकर बेहोश हुआ तब तवक्के रिफाकत कि तुझ से क्या रही यह तेरी ख़िदमत के हक़ सेही मेरी गर्दन पर है कि जो तुझसे ऐसी हरकत हुई है तो माफ करता हूं मैंने अपनी हकीक़त इंइब्तदासे तहातक कह सुनाई अब भी दिलमें कुछ और जोश बाकी है जैसे मंने तेरी खातिर करके तेरे कहने का सब तरह कबूल किया तू भी मेरी फरमाना इसी सूरत से अमल

में लाना सलाह वक्त यह है कि अब इस शहर में रहना मेरे और तेरे हक़ में मना नहीं आगे तू मुख्त्यार है या माबूद अल्लाह शाहजादी इतना फ़रमाकर चुप होरही फ़कीर तो दिलोजानसे उससे हुक्म को सब चीज पर मुकद्दम जानता था और उसकी मुहब्बत के जाल में फंसा था बोला जो मरजी मुबारिक में आये सो बेहतर है जब शाहजादी ने मेरे तईं फरमाबरदार और खिदमतगार पूरा पाया तो फ़रमायादो घोड़े चालाक और जाबजां कि चलने में हवासे बातें कर बादशाह के खास अस्तबल से मगवाकर तैयार कर मैंने वैसेही परीजाद चार मुर्दे के घोड़े चालाक जीन बँधवाकर मंगवा लिये जब थोड़ीसी रात बाकी रही बादशाहजादी मर्दाना लिबास पहन और पांचो हथियार बांध कर एक घोड़े पर सवार हुई और दूसरे घोड़े पर मैं हथियार बांध कर चढ़ बैठा और एक तरफ़ की राह ली जब रात तमाम हुई और फजर होने लगा तब एक पोखरेके पास पहुँचे उतरकर मुंह हाथ धोये जल्दी कुछनाश्तः करते फिर सवार होकर चलें कभी

मालिक कुछ बातें करती और यों कहती कि हमने तेरी खातिर शर्मों हया मुल्को मालमा बाप सब छोड़ा ऐसा न होकि तु उस जालिम बेवफाकी तरह सलूक करे मैं कुछ अहवाल इधर उधर का राह काटने के लिये कहता और उस का भी जवाब देता कि बादशाजादी सब आदमी एक से नहीं होते उस पाजी के नुतफे में खलल होगा उससे ऐसी हरकत सरजद हुई और मैं ने तो जानोमाल तुम पर तस- द्दुक किया और तुमने मुझे हर तरह सरफराजी व खुशी अब मैं बन्दा बगैर दामों का हूं मेरे चमड़े की अगर जूतियां बनवा कर पहनो तो मैं आह न करूं ऐसी २ बातें बाहम होती थी और रात दिन चलने से काम थी कभी जो मांदगी के सबब से कहीं उतरते तो जंगल के चरिंद और परिंद शिकार करते हलाल करके नमकदान से निकाल कर चकमक से आगे झाड़ भूनभान कर खा लेते और घोड़ों को छोड़ देते वह अपने मुँह घासपात चरचरा के अपना पेट भर लेते एक रोज ऐसे कफे-

दश्त मैदान में जा निकले जहाँ बस्ती का नाम न था और आदमी की सूरत नजर न आती थी इस पर भी बादशाह जादी की रिफाकत के सबब से दिन ईद और शबरात मालूम होती थी जाते २ एक दरिया के देखने से कलेला पानी होता रास्ते में मिला किनारे पर खड़ा होकर जो देखा तो जहाँ तक निगाह ने काम किया पानी ही था कुछ थल बेड़ा न पाया इस समुन्दर से क्यों कर पार उतरें या इलाही एक दम इसी सोच में खड़े रहे आखिर यह दिल में लहर आई कि मालिक को यहीं बैठा कर मैं तलाश में किश्ती के आऊँ जब तक असबाब गुजारे का हाथ आवे तब तक वह नाजनीन भी आराम पावै तब मैंने कहा ऐ मालिकः अगर हुक्म होय तो घाट बाट इस दरिया की देखूं फरमाने लगी मैं बहुत थक गई हूँ और भूखी प्यासी हो रही हूं मैं जरा दम ले लूँ जब तक तू पार चलने की तदबीर कर उस जगह एक दरख्त पीपल का था बड़ा छत्ता बाँधे हुए कि अगर हजार सवार

आवें तो धूप और मेह में उसके तले आराम पावें वहां उसको बैठाकर मैं चला और चारो तरफ देखता था जहाँ भी जंगल पहाड़ या दरिया में निशान इन्सान का पाऊँ बहुतेरा सिर मारा पर कही भी न पाया आखिर मायूस होकर वहाँ से फिर आया तो उस परी को पेड़के नीचे न पाया उस वक्तकी हालत क्या कहूं कि सूरत जाती रही दीवाना बावला होगया कभी दरख्त पर चढ़ जाता और डाल डाल पात २ फिरता कभी चिंघाड़ मारकर अपनी बेकसी पर रोता कभी पश्चिम से पूरब को दौड़ा जाता कभी उत्तर से दक्खिन को फिर आता गरज बहुतेरा खाक छानी लेकिन उस गौहर नायाब की निशानी न पाई जब मेरा कुछ बस न न चला रोना और खाक सरपर उड़ता हुआ तमाशा हर कहीं करने लगा दिल में यह ख्याल आयाकि शायद जिन या दव उस परी को उठाकर ले गया और मुझे यह दाग देगया उसके मुल्क से कोई उसके पीछे लगा चला आया उसको अकेला पाकर मना मनु कर फिर श्याम की तरफ ले

गया फिर ऐसे खयालों में घबरा कर कपड़े फेंक फांक दिये नंगा मनुङ्गा फकीर बनकर स्यामके मुल्क में सुबह से शाम तक ढूंढ़ता फिरता और रात को कहीं पड़रहता सारा जहान ढून्ढमारा अपनी बादशाहजादी का नामो निशान किसी से न सुना गायब होने का मालूम हुआ तब दिलमें यह आया कि जब उस जानका तूने पता पाया तो अब जीना भी हैफ है किसी जंगल में एक पहाड़ नजर आया तब उसपर चढ़ गया और इरादा किया कि अपने तईं गिरादूँ फिर एक दममें सिर मुंह से टकराते टकराते फूट जायगा तो ऐसा मुसीबत से जी छूट जायगा यह दिलमें कहकर चाहता हूं अगर अपने तईं गिरादूँ बल्कि पांवभी उठ चुके थे कि किसीने मेरा हाथ पकड़ लिया इतने में होश आगया देखता हूँ तो एक सवार सब्ज पोश मुहपर नकाब डाले मुझसे फरमाता है कि क्यों तू अपने मरने का कस्द करता है खुदा के फजल से नाउम्मेद होना कुफ्र है जब तक साँस है तब तक आस है और अब थोड़े दिनों में

रूह के मुल्क में तीन दुरवेश तुझसे देखे ऐसी ही मुसीबत में फँसेहुए और एसही तमाशे देखेहुए तुझ से मुलाकात करेंगे और वहाँ के बादशाह का आजादबख्त तनाम है उसको भी एक बड़ी मुश-किल दरपेश है जब वह भी तुम चारों फकीरों के साथ मिलेगा तो हर एक के दिलके काम तलब और मुराद जो है बखूबी हासिल होगी मैंने रकाब पकड़ कर बोसा दिया और कहा ऐ खुदा के वली तुम्हारे इतने ही फ़रमाने में मेरे दिलको इज्तराब तसल्ली हुई लेकिन तुमको खुदाकी कसम यह फ़र माइये आप कौन हैं और इस्मशरीफ क्या है तब उन्होंने फरमाया कि मेरा नाम मुर्तजाअली और यह मेरा काम है कि जिसको जो मुशकिल सख्त-पेश आवै तो मैं उसको आसान करूं इतना फ़रमा कर नजरों से पोशीदा होगये वारे इस फकीर ने अपने मौला मुश्किल कुशा की विसारत से खातिर जमा होकर कस्द कुस्तुनतुनियाँ का किया राह में जो कुछ मुसीबत किस्मत में लिखी थीं खैंचता हुआ

उस बादशाहज़ादी के मुलाकात के भरोसे खुदाके फ़ज़ल से यहां तक आ पहुँचा और अपनी खुश नसीबी से तुम्हारी खिदमत में मुशर्रफ हुआ हमारी तुम्हारी आपस में मुलाक़ात तो हुई बाहम मुहब्बत और बातचीत मयस्सर आई अब चाहिये बादशाह आज़ादबख्त से भी रूशनाश और जान पहचान हो बाद उसके मुकर्रर: बाहम पांचो अपने मक़सद दिलको पहुँचेंगे तुम भी दुआ मांगो और आमीन कहो हादी इस हैरान सर गर्दान की सर गुज़श्त यह थी जो हुजूर में कह सुनाई अब आगे देखिये कि कब वह मेहनत और ग़म हमारा बादशाहजादी के मिलने से खुशी व खुर्रमी से बदल हो आज़ादबख्त एक कोनेमें छुपा हुआ चुपके ध्यान लगाये पहले दरवेश की माजरा सुनकर खुश हुआ फिर दूसरे दरवेश की हकीकत को सुनिये ॥

शैर दूसरे दरवेश की।

जब दूसरे दरवेशके कहने की नौबत पहुँची वह दोज़ानू हो बैठा और बोला।

बैत। ऐ यारो इस फ़कीर का टुक माजरा सुनो।
मैं इब्तदा से कहता हूं ताइन्तहा सुनो॥
जिसका इलाज कर नहीं सका कोई हकीम।
हैगा हमारा दर्द निपट लादवा सुनो॥

ऐ दलक़पोशो यह बादशाहज़ादा फ़ारिसके मुल्कका है हर फ़न के आदमी वहां पैदा होते हैं चुनाचे अस्फ़हान निस्फ़ जहान मशहूर है हफ्त अक़लीम में उस अक़लीम के बराबर कोई वलायत नहीं कि वहां का सितारा आफ़ताब है और सातवा कवा क़िवमें तथ्यार आज़िम है आब हवा की खुश और लोग रोशन तबअ और साहब सलीके होते हैं और मेरे किब्लःगाह ने जो बादशाह उस मुल्क के थे लड़कपन से कायदे और कानून सल्तनत के तर्बीयत करने के वास्ते बड़े बड़े दाना उस्ताद हर एक इल्म और कसब के चुन कर मेरी अतालीकी के लिये मुकर्र किये थे तो तालीम कामिल हर नौअकी पाकर काबिल हुआ खुदा के फ़ज़ल से चौदह वर्ष के सन साल में माहर हुआ गुफ्तगू माकूल नशिस्त बरखास्त पसन्दीदः और जो कुछ बादशाहों

को लायक और दरकार है सब हासिल किया। और यही शौक शबोरोज था कि काबिल की सुहबत में किस्से हर एक मुल्क के और अहिवाल उलुलअज्म बादशाहों और नाम आवरोंका सुना करूं एक रोज मुसाहब दाना में कि खूब तवारीख़ दान और जहां दीदः था मज़कूर किया कि अगर्चे आदमी की जिंदगी का कुछ भरोसा नहीं लेकिन अक्सर वस्फ ऐसे हैं कि उनके सबब से इन्सान का नाम कयामत ज़बानों पर बखूबी चला जायगा मैंने कहा अगर थोड़ा साअहिवाल मुफ़स्सिल बयान करो तो मैं भी सुनूं और उस पर अमल करूँ तब वह शख्स हातिमताई का किस्सा इस तरह से कहने लगा।

किस्सा हातिमताई।

हातिम के वक्त में एक बादशाह अरब का नाफिल नाम था उसको हातिम के साथ बसबब नाम आवरी के दुशमनी कमाल हुई बहुत लश्कर जमा कर लड़ा। हातिमका खातिर चढ़ आया हातिम तो खुदा तर्स और

नेकमर्द था यह समझा कि अगर मैं जङ्ग की तैयारी करूँ तो खुदा के बन्दे मारे जांय बड़ी खूंरेजी होगी इसका अजाब मेरे नाम लिखा जायगा यह बात सोच कर तनेतनहा अपनी जान लेकर एक पहाड़ की खोह में जा छुपा जब हातिम के गायब होने की खबर नौफिल को मालूम हुई सब असबाब और घरबार हातिम का कुर्क किया और मनादी करवादी की जो कोई ढूंढ़ ढांढ़ कर पकड़ लावे पांचसौ अशर्फी बादशाह की सरकार में इनाम पावे यह सुनकर सबको लालच हुआ और जुस्तजू हातिम की करने लगे एक रोज एक बूढ़ा और उसकी बुढ़िया दो तीन बच्चे छोटे छोटे साथ लिये हुए लकड़ी तोड़ने के वास्ते उस गार के पास जहां हातिम पोशीदा था पहुँचे और लकड़ियां उस जंगल से चुनने लगे बुढ़िया बोली अगर हमारे दिन कुछ भले आते तो हातिम को कहीं हम देख पाते और उसको पकड़ कर नौफल के पास ले जाते तो वह पांचसौ अशर्फी देता हम आराम से खाते इस दुखधंधेसे छूट जाते

बुड्ढेने कहा क्या बड़बड़ करती है हमारी किस्मत में यही लिखा है रोज़ लकड़ियां तोड़ें और सिरपर धर बाजार में बेचें तब रोटी मयस्सर आवे या एक रोज़ जंगल से घर तक ले जावें अपना काम कर हमारे हाथ हातिम काहे को आवेगा और बादशाह हमे इतने रुपये दिलावेगा औरत ने ठंढी सांस भरी और चुपकी होरही यह दोनों की बातें हातिम ने सुनी मर्दमी और मुरव्वत से बईद जाना कि अपने तईं छुपाये और जानकों बचाये और इन दोनों बेचारों को मतलब तक न पहुँचाये सच है अगर आदमी में रहम नहीं वह इन्सान नहीं और जिस के जीमें दर्द नही वह कसाई है।

शैर-दर्द दिल के वास्ते पैदा किया इंसान को।
बरन सायत के लिये कुछ कम न थी करोबियां॥

गरज़ हातिम की जवांमर्दी ने कबूल न किया कि अपने कानो से सुन कर चुप हो रहे वोहीं बाहर निकल आया और उस बुड्ढे से कहा कि ऐ अजीज हातिम मैं ही हूं मेरे तईं नौफल के पास ले चल

वह मुझे देखेगा जो कुछ रुपये देने का इकरार किया है देवेगी पीरमर्द ने कहा सच है इस सूरत में भलाई और वह मेरी अलबत्तः है लेकिन वह क्या जाने तुझ से सलूक करे अगर मार डाले तो मैं क्या करूं यह मुझ से हर्गिज न हो सकेगा कि तुझ इन्सान को अपनी तमाम को खातिर दुशमन के हवाले करूं यह माल कितने दिन खाऊँगा और कब तक जीऊंगा आखिर मर जाऊंगा तब खुदा को क्या जवाब दूंगा हातिम ने बहुतेरी मिन्नतें की कि तू मुझे ले चल मैं अपनी खुशी से कहता हूं और हमेशा इसी आरज़ू में रहता हूं कि मेरा जानोमाल किसी के काम आवे तो बेहतर है लेकिन बूढ़ा किसी तरह राजो न हुआ कि हातिम को ले जाये और इनाम पाये आखिर लाचार होकर हातिम ने कहा अगर तू मुझे यों नहीं ले जाता तो मैं आप से आप बादशाह के पास जाकर कहता हूं कि इस बूढ़े ने मुझे जङ्गल में एक पहाड़ की खोह में छुपा रक्खा था वह बूढ़ा हंसा और बोला भलाई के बदले बुराई

मिले तो या नसीब इस खदल के सुवाल व जवाब आदमी और भी आन पहुँचे भीड़ लग गई उन्होंने मालूम किया कि हातिम यही है तुर्त पकड़ लिया और हातिम को ले चले वह बूढ़ा भी अफ़सोस करता हुआ पीछे पीछे साथ हो लिया जब नोफिल के रूबरू ले गये उसने पूछा इसको कौन पकड़ लाया एक वदजात संग दिल बोला कि ऐसा काम सिवाय हमारे कौन कर सक्ता है यह फतह ह । नाम है हमने अर्शपर झण्डा गाडा है और एक लन्तरानी वाला डोंग मारने लगा कि मैं कई दिन से दौड़ धूप कर जङ्गल से पकड़ लाया हूं मेरी मेहनत पर नजर कीजिये इस तरह अशर्फियों के लालच से हर कोई कहता था कि यह काम मुझसे हुआ वह बूढ़ा चुपका एक कोने में लगा हुआ सब की सेखियां सुन रहा था जब अपनी दिलावरी और मर्दानगी सब कह चुके तब हातिमने कहा बादशाहसे अगर सच बात पूछो तो यह वह बूढ़ा जो सब से अलग खड़ा है मुझ को लाया

है मगर क़याफ़ः पहचानते हो तो दरियाफ़्त करो और मेरे पकड़ने की खातिर कौल किया है पूरा करो कि सरीह डील में जवान हलाल है मर्द को चाहिये जो कहे सो करे नहीं तो जीभ हैवान को भी खुदा ने दी है फिर हैवान में और इन्सानमें क्या तफ़ावत है नौफ़लने उस लकड़हारे बूढ़े को पास बुला कर पूछा कि सच कहे असल क्या है हातिम को कौन पकड़ लाया उस बिचारे ने सिर से पांव तक जो गुज़रा था सारा २ कह सुनाया और कहा हातिम मेरी खातिर आप से चला आया है नौफ़िल यह हिम्मत हातिम की सुनकर मुतअज्जिब हुआ कि बलवेते री सखावत अपनी जानकी खतरा न किया जितने झूठे दावेहातिम के पकड़ लानेका करते थे हुक्म किया कि उनको मुश्कें बांधकर पांच सौ असर्फ़ी के बदले पांच पांच सौ जूतियां उनके सिर पर लगाओ भेजा निकल पड़े वोंहीं तड़ २ पैज़ारें पड़ने लगी एकदम में सिर उनके गंजे होगये सच है झूठ बोलना ऐसा ही गुनाह है कि कोई गुनाह उसको

नहीं पहुंचाता है खुदा सबको इस बला से महफूज रक्खे और झूठ बोलने का चसका न दे बहुत आदमी झूठ मूठ बके जाते हैं लेकिन आजमाने के वक्त सजा पाते हैं गरज उन सबको मुवाफिक उनके इनाम देकर नोफिल ने अपने दिल में ख्याल किया कि हातिम से शख्स को कि आलम को उस से फौज पहुंचौना है और मुहताजों को खातिर अपनी जान से दरेग नहीं करता और खुदा की राह में सरता पां हाजिर है दुश्मनी रखनो और उसका मुद्दई होना मर्द आदमियत जवामर्दी से बईद है वोही हातिम का हाथ बड़ी दोस्ती और गर्म जोशी से पकड़ लिया क्यों न हो तुम ऐसेही हो तवाजे व ताजीमन करके पास बिठलाया हातिमका मुल्क और इमलाक और माल व असबाब जो कुछ जब्त किया था वोही छोड़ दिया नये सिरसे सरदारी कबीले को उसने दी और उस बूढ़े को पांचसौ अशर्फियां खजाने से दिलवादी वह दुआ देता हुआ चला गया। जब यह माजरा हातिमका

मैंने तमाम सुना जोमें गैरत आई और यह ख्याल गुजरा कि हातिम अपनी कौम का फक्त रईस था जिसने एक सखावत के बाइस यहनाम पैदा किया कि आज तक मशहूर है मैं खुदाके हुक्से बादशाह तमाम ईरान का हूं अगर इस न्यामत से महरूम रहूं तो बड़ा अफसोस है फिलवाके दुनिया में कोइ काम बड़ा दादो दिहिश से नहीं इसवास्ते कि आदमी जो कुछ देता है उसका एवज आकबत में लेता है अगर कोई एकदाना बोता है तो उससे कितना कुछ पैदा होता है यह बात दिलमें ठहरा कर मीर इमारत बुलवा कर हुक्म किया कि एक मकान अलीशान जिस के चालीस दरवाजे बुलन्द और बहुत कुशादः हो बाहर शहर के बनवाओ थोड़े अर्सेमें वैसाही एमारत बनी की वह जैसी चाहता था बनकर तैयार हुई और उस मकान में हररोज हरवक्त फजर से शामतक मुहताजों और बेकसों के तईं रुपये अशर्फियां देती और जोकोई जिस चीजका सवाल करता मैं उससे मालोमाल

करता गरज चालीस दरवाजों से हाजिनमंद आते और जो चाहते सो ले जाते एक रोजका यह ज़िक्र है कि एक फकीर सामने दरवाजे से आया और सवाल किया मैंने एक अशर्फी उसे दी फिर वही दूसरे दरवाजे से होकर आया और एक अशर्फियां मांगी मैंने पहचान कर दर गुजर की इसी तरह हरएक दरवाजे से आता और एक २ अशर्फी बढ़ानाशुरू किया और मै भी जान बूझकर अजान हुआ और उसके सवाल के मुआफिक दिया किया आखीर चालीसों दरवाजों की राहसे आकर चालीस अशर्फियां मांगी मैंने वह भी दिलवादी इतना लेकर वह दुरवेश फिर पहले दरवाजे से घुस आया और सवाल किया मुझे बहुत बुरा मालूम हुआ मैंने कहा सुन ऐ लालची तू कैसा फकीर है कि हरगिज फकीर के तीनों हरफों से भी वाकिफ नहीं फकीरअमल उनपर चाहिये फकीरबोला भलादातातुम्ही बताओ मैंने कहा (फे)से फाका(कि)से किनाअत(रे) से रियाज़त निकलती है जिसमें यह बात नहीं

वह फकीर नहीं इतना जो तुझे मिला है उसको
खा पीकर आइयो और जो मांगे सो ले जाइयो
यह खैरात अहतियाज रफे करने वाले हैं न कि
जमा करने के लिये ऐ हरीस चालीस दरवाजे से
तूने एकअशर्फी से चालीस अशर्फी तक ली उसका
हिसाब तो कर कि रेवड़ी के फेर की तरह कितनी
अशर्फियां हुई इसपर भी तुझे फिर हिर्स पहले दरवाजे
से आई इतना माल जमा कर क्या करेगा फकीर को
चांहिये कि एक रोज का फिक्र करे दूसरे दिन फिर
नई रोजी रजाक देने वाला मौजूद है अब हया और
शर्म पकड़ सब्र व कनाअत को काम फरमा यह बात
सुनकर खफ़ा और बद दिमाग़ हुआ और जितना
मुझसे लेकर जमा किया था सब जमीन में डाल दिया
और बोला बाबा इतना गरम मतहो अपनी कयानन
लेकर रखछोड़ो फिर सखावतका नाम न लीजियो
सखी होना बहुत मुशकिल है तुम सखावत का
बोझ नहीं उठा सक्ते उस मंजिल को कब पहुंचोगे
अभी दिल्ली दूर है सखीके तीन हर्फ हैं पहले उन

पर अमल करो तब सखी कहलावे तब तो मैं डर
और कहा भला दाता उसके माने मुझे बताओ
कहने लगा [सीन] से समाई और [खे] से
खौफ इलाही और [ये] से याद रखना अपनी
पैदायश और मरने को जब तलक इतना न होवे तो
सखावत का नाम न ले और सखी का दर्जा बड़ा
है अगर बदकार हो तो भी दोस्त खुदा है फकीर ने
बहुत मुल्कों की सैर की है लेकिन सिवाय बसरे की
शाहजादी के कोई सखी देखने में न आया सखा-
वत का जोमा खुदा उस औरत पर किता किया
है और सब नाम चाहते हैं पर वैसा काम नहीं
करते यह सुन कर मैंने बहुत मिन्नत की और कसमें
दीं कि मेरी तकसीर माफ करो और जो चाहिये सो
लो मेरा दिया हरगिज न लिया और यह कहता
हुआ चला अब अगर अपनी सारी बादशाहत मुझे
दो तो उसपर भी न थूकूँ और न धार मारूं वह तो
चला गया पर बसरे की बादशाहजादी की तारीफ
सुनने से दिल बेकल हुआ किसी तरह कल न थी

अब यह आरजू हुई कि किसी सूरत से बसरे चलकर उसको देखा चाहिये इस अर्से में बादशाहने वफात पाई और मैं तख्तपर बैठा और सल्तनत मिल गई पर वह ख्याल दिलसे न गया वजीर और अमीरों से जो पायतख्त सल्तनतके और अरकान मुमलकत के थे मशवरत की कि सफर बसरे का किया चाहता हूं अपने काममें मुस्तैद रहो अगर जिन्दगी है तो सफर की उम्र कोताह होती है जल्द फिर आता हूं कोई मेरे जानेपर राजी न हुआ लाचार दिल तो उदास हो रहा था एक दिन बगैर सबके कहे सुने चुपके वजीर बातदबीर को बुलाकर मुखतार और वकील मुल्क अपना किया और सल्तनत का मदा-रुल महाम बनाया फिर मैंने गेरुआ वस्त्र पहिन फ-कीरी भेप कर अकेले राह बसरेकी ली थोड़े दिनों में उसकी सरहद में जा पहुँचा तबसे यह तमाशा देखने लगा कि जहां रात को जाकर मुकाम करता नौक-चाकर उसी मुल्क के इस्तकबाल कर एक मकानमें उतार और जितना लवाजमा ज्याफत होता बखूबीमौजूद

करते और खिदमत में दस्तबस्ते पयाम रात मौजूद रहते दूसरे दिन दूसरी में भी यही सूरत पेश आई इस आराम से महीनों की राह तैकी आखिर बसरे में दाखिल हुआ।

किस्सा बसरे की शाहजादी का।

वोहीं एक जवान शकील खुशलिबासने खूब साहब मुरव्वत की दानाई उसके क़याफे से जाहिर थी मेरे पास आया और निपट शीरीं जबान से कहने लगा कि मैं फकीरों का खादिम हूं हमेशा इसी तलाश में रहा हूं कि जो कोई फकीर व मुसाफिर या दुनियां दार इस शहर में आवे मेरे घर में क़दमरंजे फरमावे सिवाय एक मकान के यहां और परदेशी के रहने की जगह नहीं है आव तशरीफ ले चले और इस मुकाम को जीनत बखशिये और मुझे सरफराज कीजिये फकीर ने पूछा साहब का इस्मशरीफ क्या है बोला इस शुभ नाम का नाम बेदारबख्त कहते हैं उसकी खूबी और तमल्लुक

देखकर यह आजिज़ उसके साथ चला और उसके मकान में गया देखा तो एक इमारत आलीशान लवाज़िम शाहाने से तैयार है एक दालान में जाकर उसने बिठाया और गर्म पानी मंगवाकर हाथ पाँव धुलाये और दस्तरख्वान बिछवा कर मुझ तनहा के रूबरू बकावल एक तोरेका तोरा चुन दिया चार मुशकाब एक में यखनि पुलाव दूसरे में कोरमां पुलाव तीसरेमें मुतंजन पुलाव चौथे में कूकू पुलाव और एक काब ज़र्दे के कई तरह के कलिये दुपियाज़े नरगिसी बादामी रोगन जोश और रोटियां कई तरह की बाकरखानी शीरमाल गाव दीदे गाव ज़बां नान नियामत पराठे और कबाब कोफते के तले मुर्ग के खागीने मगलूब सबदंग दमपुख्त हलीम हिस्से समोसे बरफी कबूला फिरनी शीर बिरंज मलाई हलुवा फालूदा पन भत्ता नमश आप सोरहसाक उरूस लौजियात मुरब्बा अचारदान दही की कुलफियां यह नियामतें देखकर मेरी रूह भर गई जब एक २ निवाला हर एक से लिया

पेट भरगया हाथ खाने से खींचा वह शख्स मसर
हुआ कि साहब ने क्या खाया खाना तो सब अमानत
धरा है बे तकल्लुफ और नोशजां फरमाइये मैंने
कहा खाने में क्या शर्म है खुदा तुम्हारा खाना
आबाद रक्खे जो मेरे पेटमें समाया सो मैंने खाया
लो आप खरीद कर और जायके की उसकी क्या तारीफ
करूं कि अब तक जबान चाटता हूं और जो डकार
आती सो मुतरज्जिब दस्तरख्वान उठा जेर अंदाज
का सोये मखमल या मुकसोका बिछाकर चिलमची
आफताब तिजाई लाकर वेसन देकर गरम पानी से
मेरे हाथ धुलाये फिर पानदान जड़ाऊ में गिलो
रियां सोनेकी पखरियों से बंधी हुइ और चौकड़ो में
गिलोरियां चिकनी सुपारियां और लौंग इलाइचियां
रूपेके वरकों में मढ़ी हुई लाकर रक्खा जब पानी
पीने को मांगता सुराही बर्फ में लगी हुई
आवदार ले आता जब शाम हुई काफूरी शमें रोशन
हुई वह अजीज बैठा हुआ बातें करता रहा जब
फिर रातगईबोला कि आप छपरखट में कि जिसके आले

दलदार पेशगीर खड़ा है आरामकीजिये फकीरने
कहा ऐसाहब हम फकीरोंकोएक बोरिया या मृगछाला
बिस्तर के ज़िये बहुत है खुदा ने तुम दुनियां दारों
के वास्ते बनाया है कहने लगा यह सब असबाब
दुरवेशों की खातिर है कुछ मेरा माल नहीं बजिद
होने से उन बिछौनों पर कि फूलों की भी सेज से
नरम थे जाकर लेटा दोनों पोटियों की तरफ गिल-
दान और चंगेर फूलोंकी चुनी हुई ऊद सोज और
लखलखे रोशन थे जिधर करवट लेता दिमाग मोअ-
त्तर होजाती इस आलम में सो रहा जब सुबह हुई
नाश्तेको भी बादाम पिश्ते अंगूर अंजीर नाशपाती
किशमिस अनार छुहारे और मेवे का शरबत ला
हाजिर किया इसी तौर से तीन दिन रात रहा चौथे
दिन रुखसत मांगी हाथ जोड़ २ कर कहने लगा
शायद इस गुनहगार से साहबकी खिदमतगारी में
कुछ कसूर हुआकि जिसके बाइस मिजाज तुम्हारे
मुकद्दर हुआ मैंने हैरान होकर कहा बराय खुदा यह
क्या मजकूर है लेकिन मेहमानो की शर्त तीन दिन

तलक है सो मैं रहा ज्यादे रहना खूब नहीं और अलावः यह फकीर वास्ते सैर के निकला है अगर एकही जगह रह-जाय तो मुनासिब नहीं इसलिये इजाज़त चाहते हैं तुम्हारी खातियां ऐसी नहीं कि जुदा होने को जी चाहे तब वह बोला जैसी मरज़ी एक सायत तवक्कुफ कीजिये कि बादशाह जादी के हुजूर में जाकर अरज करूँ और तुम जाया चाहते हो तो कुछ असबाब ओढ़ने बिछाने का और खाने के बासन रूपे सोने के और जड़ाऊ इस महमान खाने में हैं यह सब तुम्हारा माल है इसको साथ ले जाने की खातिर जो फरमाओ तदबीर की जाय मैंने कहा लाहौल पढ़ो हम फकीर न हुए भाट हुए अगर यही हिर्स दिल में होती तो हम फकीर काहे को होते दुनियांदारी क्या बुरी थी उस अजीज ने कहा अगर यह अहवाल मलकः सुने तो खुदा जाने मुझे इस खिदमत से तगय्यर करके क्या सलूक करे अगर तुम्हें, ऐसी ही बेपरवाही है तो इन सबको एक कोठरी में अमानत बन्दकर दर

वाजे को सरव मुहर करदो फिर जो चाहे सो की-
जियो मैं न क़ुबूल करता था और वह भी न मान-
ता था लाचार यही सलाह ठहरा कि सब असवाब
को बन्द करके क़ुफ्ल लगा दिया और मुन्तजर
रुखसत का हुआ इतने में एक ख्वाजेसरा मोतबिर
सिरपर सरपेंच और गोशपेंच कमरबन्ध बांधे एक
आसा सोने का जड़ाऊ हाथ में और साथ उसके
कई खिदमतगार माकूल उहदे लिए इस शान
शौकत से मेरे नजदीक आया ऐसी २ मेहरबानी
और मुलामियत से गुफ्तगू करने लगा कि जिस
का बयान नहीं कर सकता फिर बोला ऐ मियां
अगर तवज्जः।कर्म करके इस मुश्ताक के ग़रीब
खाने को अपने करम की बरकत से रौनक बख्शो
तो बन्दः नवाजी और गरीबपरवरी से बईद नहीं
शायद शाहजादी सुने कि कोइ मुसाफिर यहां
आया था उसकी तवाजे मदारत किसी ने न की
वह योंही चलागया तो इस वास्ते वल्लाः आलम
मुझपर क्या आफत लाये और कैसी क़यामत

उठाये बल्कि हर्फ़ जिन्दगी पर है मैंने इन बातों को न माना तो ख्वाहमख्वाह मुतय्यन करके मेरे तईं और एक हवेली में कि पहले मकान से बेहतर थी लेगया उसने मिजमान के मानिन्द तीन दिनरात दोनों वक्त वैसेही खाने सुबह और तीसरे पहर शरबत और टिपनखातिर मेवे खिलाये और बासन नुकरी व तिलाई और फर्श फरूश और असबाब जो कुछ मौजूद था मुझे लगा कि इन सबके मालिक तुमहो मुख्तार हो चाहे सो करो मैं यह बातें सुन कर हैरान हुआ और चाहा किसी तरह यहां से रुखसत होकर भागूं मेरे बसरे को देखकर वह महली बोला ऐ खुदा के बन्दः जो तेरा मतलब या आरजू हो सो मुझसे कह। तो हुजूर में जाकर मल्कः के अरज करूँ मैंने कहा फकीरी के लिबास में दुनियाँ का माल क्या मांगूं तुम बगैर मांगे देते हो मैं इनकार करता हूं तब वह कहने लगा कि हिर्स दुनियाँ के जी से नहीं गई चुनाचः किसी कवि ने यह कविता कहा है ॥

कवित्त—नख बिन कटा देखे सीस भारी जटा देखे जोगी जनफटा देखे छार लाये तन में। मौनी अनमोल देखे सेवड़ा सिर छोल देखे करत तपस्या देखे बनखण्डी बन में॥ बीर देखे शूर देखे सब गुनी और क्रूर देखे माया के भरपूर देखे भूल रहे धन में। आदि अन्त सुखी देखे जन्मही के दुखी देखे पर वे न देखे जिनके लोभ नाहीं मन में॥ १॥

मैंने यह सुनकर जवाब दिया कि यह सच है पर मैं कुछ नहीं चाहता अगर फरमाओ तो एक रुक्का सरब महर अपने मतलब का दूं जो हजूर मल्कः के पहुंचादो तो बड़ी मेहरबानी है गोया दुनियाँ का माल मुझको दिया. बोला बसरो चश्म क्या मुजायका है एक रुक्का लिखकर पहले शुक्र खुदा का फिर अबहाल कि यह बन्दे खुदा. कई रोज से शहर में वारिद है और सरकार से सब तरह की खबरगीरी होती है जैसी जो बयान और नेकियां मल्कः की सुनकर इश्तियाक़ देखने का हुआ था उससे चार चन्द पाया अब हुजूर के अरकान दौलत यों कहते हैं जो मतलब और तमन्नाय तरी हो. सो जाहिर कर इस वास्ते हिजाबनेः जो दिलकी आरजू है सो अरज करता हूं कि दुनियाँ

के माल का मुहताज नहीं अपने मुल्क का मैं भी बादशाह हूं फ़क्त यहां तक आना और मेहनत उठाना आपके इश्तियाक़ के सबब हुआ जो तने तनहा इस सूरत से आ पहुंचा हूँ अब उम्मेद है कि हुजूर की तवज्जेः से यह खाकनाशीं अपने मतलब दिलीको पहुँचे तो लायक है आगे जो मरज़ी मुबारिक में आवे अगर यह इल्तमास खाक सारे को कबूल न होगी तो इस तरह खाक छानता फिरेगा और इस जान बेकरार को आपके इश्क में निसार करेगा मजनूं और फ़रहाद के मानिन्द ज़ंगल या पहाड़ पर रहेगा यह मुद्दा लिखकर उस खोजे को दिया उसने बादशाहजादी तक पहुंचा दिया बाद एक दम के फिर आया और मेरे तईं बुलाया और अपने महल की ड्योढ़ी पर लेगया वहाँ जाकर देखा तो एक बुड्ढी सी औरत साहब ल्याक़त सुनहरी कुर्सी पर गहना पहने हुए बैठी है और कई खोजे खिदमतगार मुकल्लिफ़ पहने हुए हाथ बाँधे सामने खड़े हैं मैं उसे मुखतार जान,

कर और देरी न समझ कर दस्त बस्ता हुआ उस मामाने बहुत मेहरबानी से सलाम लिया और हुक्म किया आओ बैठो खूब हुआ जो तुम आये तुम्हों न मलके के इश्तियाक़ अशमाक़ का रुक्का लिखा था मैं शर्म खाकर चुपका हो रहा और सिर नीचा करके बैठा एक सायत के बाद बोली कि ऐ जवान बादशाहजादी ने सलाम कहा है और फरमाया है मुझको खाविन्द करने से कुछ ऐब नहीं तुमने मेरी दरख्वास्त की लेकिन अपनी बादशाहत का बयान करना और इस फकीरी में अपने तईं बादशाह समझना और उसका गरूर करना निपट बेजा है इस वास्ते कि सब आदमी आपस में एक हैं लेकिन फजीलत दीन इसलाम का अलबत्ते और है और मैं एक मुद्दत से शादी करने की आरजूमन्द हूँ और जैसे तुम दुनियां से बेपरवा हो मेरे तईं भी हक़ताला ने इतना माल दिया है कि जिसका कुछ हिसाब नहीं पर एक शर्त है पहले महर अदा करलो और महर शाहजादी की एक बात है जो

तुमसे होसके मैंने कहा मैं सब तरह हाज़िर हूँ जान व माल से देरग नहीं करने का वह बात क्या है कहो तो मैं सुनू तब उसने कहा आज के दिन रह जाओ कल तुम से कह दूंगी मैंने खुशी से कबूल किया और खुशवक़्त होकर बाहर गया दिन तो गुजरा जब शाम हुई मुझे एक ख्वाजेसरा महल में बुलाके लेजाकर देखे तो अकाबर आलम व फाजिल साहब शुरू जमा हैं मैं उसी जल्से में जाकर बैठा इतने में दस्तरख्वान बिछाया गया और खान अकसाम २ के शीरीं और नमकीन चुने गये वह सब खाने लगे और मुझे भी तवाजे करके शरीक किया जब खाने से फरागत हुई एक दाई अंदर से आई और बोली कि वह रोज़ कहां है उसे बुलाओ ऐसा बोल वोहीं हाजिर किया उस की सूरत मर्द आदमी कीसी और बहुत बहुत सो कनलियाँ रूपे सोने की कमर से लटकी हुई सलामालेक करके मेरे पास बैठा वही दाई आकर कहने लगी कि ऐ बहरोज तूने जो कुछ

देखा है मुफस्सिल बयान कर वह रोज ने यह दास्तान कहना शुरू किया और मुझसे मुखातिब होकर बोला पे अजोज हमारी बादशाह जादो के सरकार में हजारों गुलाम हैं कि सौदागरी के काम में मुतय्यन हैं उनमें से एक मैं भी अदना खाने जाद हूं हर एक मुल्ककी तरफ लाखों रुपये का असबाव जिन्स देकर रुखसत फरमाते हैं जब वह वहाँ से फिर आता तब उस से उस देशका अह-वाल हजूर में पूछते हैं और सुनते हैं एक बार यह इत्तिफाक हुआ कि यह कमतरीन तिजारत को खातिर चला और शहर नोमरोज में पहुंचा वहाँ के बाशिन्दो को देखा तो सब लिबास स्याह है ऐसा मालूम होता था कि उनपर कुछ बड़ी मुसीबत पड़ी है उसका सबब जिनसे पूछता हूँ कोई जवाब न देता उसी हैरत में कई रोज गुजरे एक रोज ज्यों हीं सुबह हुई तमाम आदमी छोटे बड़े लड़के बुड्ढे गरीब गने शहर के बाहर चले एक मैदान में जाकर जमा हुए और उस मुल्क का बादशाह

भी सब अमीरों को साथ लेकर सवार हुआ और वहां गया तब सब कतार बाँधकर खड़े हुए मैं भी उसके दरम्यान खड़ा तमाशा देखता था यह मालूम होता था कि वह सब किसी की इन्तजार देख रहे हैं एक घड़ी के अर्से में दूसरे एक जवान परीजाद साहब जमाल पन्द्रह सोलै बरस का सनो साल गुल करता हुआ और कफ मुँह से जारी जर्द बैलको सवारी एक हाथ में कुछ लिये मुका-बिल खलकुल्ला के आया और अपने बैल से उतरा एक हाथ में नाथ और एक हाथ में नंगी तलवार लेकर दो जानू बैठा एक गुलाम गुलअं-दाम परी चेहरा उसके हम राह था उसको उस जवान ने वह चीज जो हाथ में दी वह लेके सिरसे हर एक को दिखाता जाता था लेकिन यह हालत था कि जो कोई देखता था वे अख्त्यार डाढें मार कर रोता था उसी तरह सबको दिखाता और रुलाता हुआ सबके सामनेसे होकर अपने खाविन्दके पास फिर गया उसके जातेही वह जवान उठा और इस गुलाम

का सिर शमशेर से काटकर और सवार होकर जिधर से आया उधरको चला सब खड़े देखा किया जब नजरों से गायब हुआ लोग शहर की तरफ फिरे मैं हर एक से माजरे की हकीकत पूछताथा बल्कि रुपयोंका लालच देता था और खुशामदकरता कि मुझे जरा बतादो कि यह जवान कौन है और इसने यह क्या हरकतकी और कहां से आया और कहां गया हर्गिज किसी ने न बतलाया और न कुछ मेरे ख्यालमें आया यह ताअज्जुब देखकर जब यहाँ आया और मलकाके रूबरू इजहार किया तबसे बादशाहजादी भी हैरान होरही है और उसी की करने की खातिर दो दिलोहो रही है लिहाजा महर अपना यही मुकर्रर किया है कि जो शख्स अजूबे की खबर लाये उसको पसन्द फरमाये और वह मालिक सारे माल व मुल्क और मुल्कः का होवे यह माजरा तुमने सब सुना अपने दिलमें गौर करो अगर तुम उस जवान की खबर लासको कस्दमुल्क नीमरोज का करो और जल्द रवानाहो नहीं तो

इनकार करो अपने घरकी राह लो मैंने जवाब दिया
कि अगर खुदा चाहे तो जल्द उसकी अहवाल
सिरसे पाँव तक दरियाफ्त करके बादशाहजादी के
पास आ पहुँचता हूँ और कामयाब होताहूँ औरजो
मेरी किस्मत बदहै तो उसका कुछ इलाज नही लेकिन
किम मकलःइसका कौल व करार करें कि अपने
कहने से न फिरे और बिलफेल एक अन्देशे मुश
किल मेरे दिलमें खलस कर रहा है अगर मलक
गरीब नवाजी और मुसाफिर परवरी से हुजूर में
बुलायें और परदे से बाहर बिठलाये और मेरी
इल्तमास अपने कानों से सुने और उसका जवाब
अपनी जबान से फरमावे तो मेरी खातिर जमाहो
और मुझसे सब कुछ होसके यह मेरे मतलबकी बात
उस मामाने रोबरू उमपरी पैकर के अर्जकी बारे
कदरदानी की राह से हुक्म किया कि उन्हें बुलाओ
दाई फिर बाहर आई और मुझे अपने साथ जिन
महलों में बादशाहजादी थी लेगई क्या देखता हूं
दुरूयासफ़ बांधे दस्तबस्ता सहेलियां और खवासे

और उदवि गनियाँ कलम कीनान तुरकनियाँ हब
शनियाँ कशमीरनियां जवाहरमें जड़ी वह देखि-
य खेंड़ीहै इन्द्रकाआखाड़ा और कलेजा धड़कने लगा
वजीर अपने तई थाँभा उनको देखता भालता और
सैर करता हुआ आगे चला लेकिन पाँव सौ सौ
मनके होगये जिसको देखुं फिर यह जी न चाहे कि
आगे जाऊँ एक तरफ चिलवन पड़ीथी और मूढ़ा
जड़ा बिछवा रक्खा था और एकचौको भी संदल की
बिछीथी दाईने मुझे बैठनेकी इशारतकी में मूढ़ पार
बैठ गया और वह चौकी पर बैठकर कहने लगी कि
लो अवजो कहना है सो जो भ' कहो मैंने मुलक
की खुबियोंको और अदल इन्साफ दाददिहिशको
पहले तारीफकी फिर कहने लगा जबसे मैं इन
मुल्ककी सरहद में आया हर एक मञ्जिल में यही देखा
कि जावजा मुसाफिर खाना: और इमारतें अच्छी बनी
हुई हैं और आदमी हरएकउहदे के तईनात हैं कि
खबरगीरी मुसाफिरो और मुहताजों की करते हैं
मुझे भी तीन दिन हर एक मुकाममेंगुजरे चौथे

दिनजब रुखसत होने लगा तब भी खुशो से किसी
ने कहा जाओ और जितना असबाब उस मकान
में था शतरंजी कालीन सीतल पाटी मंगलकुटी
दीवारगीरी छत परदे चिलवने सायवान नमगीरे
छपरखटमय गिलाफ और कचा तोशाक बाला पोश
से जबन्द चादरा तकिये गुल तकिये मसनद गावत
किये देग् डेग् चे पतीले तवाक् रकावी तशतरी चमचे
बकावली कफगीर तामवख्श सरपोश सीनी ख्वान
तोरे पोश अबखोर बजहरे सुराही लगनापानदान
चौघड़ेचँगेर गुलाबपाश ऊदसाज आफताबा चिल-
मची सब मेरे हवाले किया कि यह तुम्हारा मालहै
चाहे अबलो नहींतो एक कोठरी में बन्दकर अपनी
मुहर करो जब तुम्हारी खुशी होगी फिरते हुए लेते
जाइयो मैंने योंही कहा कि उस में हैरत यह है
कि मुझसे फकीर तन तनहासे यह सलूक हुआतो
ऐसे गरीब हजारों तुम्हारे मुल्कोंमें आते जाते होंगे
पस अगर यही हरएक से मेहमानदारी की तौर
रहता होगा तो मुबलिग बे हिसाब खर्च होता

होगा पस इतनी दौलत कि जिसका यह सर्फ है कहां से आये और कैसी है अगर गंज कारूं होय तो भरी नफा न करे और कैसी है अगर सल्तनत पर निगाह कीजे तो उसकी आमद फक्त बावरची खाने के खर्च को भी किफायत न करती होगी और खर्चों का तो क्या जिक्र है अगर मल्कः की जबान से सुनूं तो खातिर जमा हो कस्द मुल्क नीमरोज का करूं और ज्यों त्यों वहां जा पहुँचूं फिर सब अहवाल दरियाफ्त करके मल्कः की खिदमत में बशर्ते जिन्दगी बारदीगर फिर आऊँ यह सुनकर मल्कः ने अपनी जबान से कहा कि ऐ जवान अगर तुझे आरजू कमाल है कि यह बात दरियाफ्त करे तो आज के दिन भी मुकाम करे शाम को तुझे हजूर में तलब करके जो कुछ अहवाल इस दौलत व जमाल का है बेकम व कास्त कह जायगा मैं यह तसल्ली पाकर अपनी इस्तकामत के मकान पर आकर मुन्तजर था कि कब शाम हो कि मेरा मतलब तमाम हो इतने में ख्वाजे सरा कितने

चौगोशे तोड़ेपोश पड़े गुलामों के सिरपर धरे आ कर मौजूद हुआ और बोला कि हुजूर से ओलस खास इनायत हुआ है इसको तनावल करो जिस वक्त मेरे सामने खोले बूसे दिमाग मोअत्तर हो गया और रूह भर गई जितना खासका खा लिया बाकी उन सबोंको उठा दिया शुक्र नियामत कह भिजवाया वारे जब आफताब तमाम दिनका मुसाफ़िर थका हुआ गिरता पड़ता अपने महलमें दाखिल हुआ और महताब दीवान खाने में मुसाहिबों को साथ लेकर निकल बैठा उस वक्त दाई आई और मुझसे कहने लगी कि चलो बादशाहजादी ने यादफरमा या है मैं उसके हमराहहो लिया खिलअत खासमें लेगई रोशनी को यह आलमथा कि शबे कदरकी भी वहाँ कदर न थी और बादशाही फर्श पर मसनद मुग़क बिछी मुरस्से गाव तकिया लगा हुआ और उसपर एक शमियानी मोतियों की झालर की जड़ाऊँ इसतादों पर खड़ा हुआ और समाने मसन दके जवाहिर के दरख्त फूल पात लगे हुए गोया

ऐन मैन कुदरती सोने की कियारियोंमें जमे हुए और दोनों तरफ दाये बाये शार्गिद पेशें और मुज राई दस्तबस्त बअदब आँखें नीची किये हुए हाजिर थे और तवायफ और गायन साजों के सुर बनाये हुए मुन्तजिर यह सामान और यह तैयारी करे फिर देखकर अक्ल ठिकाने न रही दाई से पूछा कि दिनका वह जेबायश और रातको यह आरायश दिन ईद और रात शब्बरात कहा चाहिये बल्कि दुनियां के बादशाह हफ्त अकलीम को यह ऐश मयस्सर न होगा हमेशा यही सूरत है दाई कहने लगी कि हमारी मलिकः का जितना कारखाना तुमने देखा यह सब इसी दस्तूर से जारी है इसमें हरगिज़ खलल नहीं बल्कि रोज अफ़जू है तुम यहां बैठो मलकःदूसरे मकान में तशरीफ रखती है जाकर खबर करूँ, दाई यह कहकर गई और उन्हीं पावों फिरआई कि चलो हुजूरमें मुजरे उस मकान में जातेमैं भौचक रहगया न मालूम दरवाजा कहां और दीवार किधर है इस वास्ते हलबी आईने कद आदम

चारो तरफ लगे और उनके दरवाजों में हीरे मोती जड़े हुए थे एक में नजर आया तो यह मालूम होती कि जवाहर का सारा मकान है एक तरफ परदा पड़ा था उसके पीछे मलिकः बैठी थी वह दाई परदे से लगकर बैठी और मुझे भी बैठनेको कही तब दाई मलिकः के फरमाने से इसतौर कहने लगी कि सुन ऐ जवान दाना सुल्तान इस अकलीम का बड़ा बादशाह था उसके घरमें सात बेटियां पैदाहुईं एक रोज बादशाह ने जशन फरमाया ये सातों लड़कियां सोलह शृङ्गार बारह अभिरन बाल बाल मोती पिरो कर बादशाह के हुजूर में खड़ी थीं सुल्तान के जीमें कुछ आया तो बेटियों की तरह देखकर फरमाया अगर तुम्हारा बाप बादशाह न होता और किसी गरीब के घर तुम पैदा होती तो तुम्हें बादशाहजादी और मलिक कौन कहता शुक्र खुदा का करो कि शाहजादियां कहलाती हो तुम्हारी वह सारी खूबियां मेरे दमसे हैं छः लड़कियां एक जबान होकर बोलीं कि जहां पनाह जो फरमाते

हैं बजा है और आपकी सलामती से हमारा भला लेकिन यह मलिकः जो सब बहनों में छोटी थी पर अकल व शऊर में उस उम्र में भी गोया सब से बड़ी थी चुपकी खड़ी रही इस गुफ्तगू में बहनोंकी शरीक न हुई इसवास्ते कि यह कलमा कुफ्र का है बादशाह ने नज़र ग़ज़ब से इनकी तरफ देखकर कहा बीबी तुम कुछ न बोली इसका क्या बाइस है तब मलकः ने दोनों हाथ रूमाल से बाँधकर अरज की कि अगर जानकी अमा पाऊँ और तकसीर माफ़ हो तो यह लौंड़ी अपने दिल की बात गुजारिश करे हुक्म हुआ कि कह क्या कहती है तब मलकः ने कहा कब्ले आलम आपने सुनाहै कि सच बात कड़वी लगती है सो इस वक्त में अपनी जिन्दगी से हाथ धोकर अरज करती हूँ और जोकुछ मेरी किस्मत में लिखने वाले ने लिखा है उसका मिटाने वाला कोई नहीं किसी तरह नहीं टलने का।

बैत—ख्वाह तुम पांव घिसो या कि रखो सरव, सजू।
बात पेशानी की जो कुछ है सो पेश आती है॥

जिस बादशाह आली उलतलाक ने आपको बादशाह बनाया उसीने मुझे भी बादशाहजादी कहलवाया उसकी कुदरत के कारखाने में किसी का अख्त्यार नही चलता आपकी ज़ात हमारी वली नियामत और किब्लः और काबा है हज़रत के क़दम मुबारिक की खाक हो अगर सुरमा करूँ तो बजा है मगर नसीब हर एक का हर एक के साथ है बादशाह यह सुनकर तेश में आये और यह जवाब दिल पर सख्त गिरां मालूम हुआ बेजार होकर फरमाया छोटा मुँह बड़ी बात अब इसकी यह सजा है कि गहना पाती जो कुछ इसके हाथ और गले में है उतार लो और एक म्याने में चढ़ाकर जङ्गल में कि जहाँ नाम निशान आदमजाद का न हो छोड़ आओ देखें इसके नसीबों में क्या लिखा है बमूजिब हुक्म बादशाह के उस आधीरात में कि ऐन अन्धेरी रात थी मलिक को कि जो जेरी मोरी में पलीथी और सिवाय अपने महलके दूसरी जगह न देखी थी महरी लेजाकर एक तो क्यो जिक्र है

छोड़कर चलेआये मलकः के दिलपर अजब हालत गुजरती थी कि एक दममें क्या था और क्या होगा या फिर अपने खुदा की जनाब में शुक्र करती और कहती तू ऐसा ही बेनियाज़ है जो चाहा सो किया और जो चाहता है सो करता है और जो चाहेगा जबतलक नथुनों में दम है तुझसे नाउम्मेदी होती इसी अन्देशेमें आंख लगगई जिसवक्त सुबह होने लगी मलकः की आँख खुलगई पुकारी कि वजू का पानी लाना फिर एकबारगी रातकी बातभट याद आई कि तूँ कहां और यहबात कहां यह कहकर उठकर तअ-मुल किया और दुगाने शुक्र का पढ़ा ऐ अजीज मलकः की इस हालतके सुननेसे छाती फटती है उस भोले भाले जी से पूछो चाहिये कि क्या कहता होगा गरज इस म्याने में बैठी हुई खुदासे लौलगा रहीथी और यह कवित्त उस दम पढ़ती थी।

क०—जब दांत न थे तब दूध दियो जब दांत दिये कहा अन्नन देहै ॥
जो जल में थल में पशु पक्षी की सुध लेत सो तेरी हु लेहै ॥
अरे काहे के सोच करे मन मूरख सोच किये कुछ काम न ऐहै ।
जान को देत अजान को देत जहान को देत सो तोहूं को देहै ॥

सच है जब कुछ बन नहीं आता तब खुदा ही याद आता है नहीं तो अपनी तदबीर में हर एक लुकमान और बूअली सीना हैं अब खुदा के कारखाने का तमाशे देखो इसी तरह तीन दिन साफ गुजर गये मलकः के मुँहमें एक खीलभी उड़कर न गई वह फूल सा बदन सूखकर कांटा होगया और वह रङ्ग जो कुन्दनसा दमकता था हल्दी सा बनगया मुँह में फेफड़ी सी बँध गई आंख पथरा गई मगर एक दम अटक रहा था कि वह आता कि वह आता था जब तक सांस तब तक आस चौथे रोज सुबह को एक दरवेश खिजरे किसी सूरत नूरानी चेहरा रोशन दिल आकर पैदा हुआ मलकः को उस हालत में देखकर बोला ऐ बेटी अगरचे तेरा बाप बादशाह है लेकिन तेरी किस्मत में यही बदा था अब इस फकीर बुड्ढे को खादिम समझ और अपने पैदा करनेवाले का रात दिन ध्यान रख खुदा खूब करेगा फ़कीर के कूच कोलमें जो टुकड़े भीख के मौजूद थे मलकः के रोबरू रख और पानी

की तलाश में फिरने लगा देखा एक कुआं तो है पर डोल रस्सी कहां जिससे पानी भरै थोड़े पत्ते दरख्त से तोड़कर दोना बनाया और अपनी सेली खोलकर उसमें बांधकर पानी निकाला और मलकः को कुछ खिलाया पिलाया वारे टुक होश हुआ उस मर्द खुदा ने बेकस और बेबस जानकर बहुत सी तसल्ली दी ख़ातिर जमा की और आपभी रोने लगा मलकः ने जब ग़मख्वारी और दिलदारी उसकी बेहद देखी तब उनके भी मिज़ाज को उस्तकलाल हुआ उस रोज से उस पीरमर्द ने यह मुकर्रर किया कि सुबह को भीख मांगने के लिये शहर में निकल जाता जो टुकड़ा पारचा पाता तो मलकः के पास ले आता और खिलाता इस तौरसे थोड़े दिन गुजरे एक रोज मलकः ने तेल सिर में डालने और कंघी चोटी करने का कस्द किया ज्योंही मुबाफ खोला चुटिया में एक मोती का दाना गोल आबदार निकल पड़ा मलक ने उस दरवेश को दिया और कहा शहर में इसको बेच लाओ वह फकीर उस

जौहर को बेंचकर उसकी कीमत बादशाहजादो के पास ले आया तब मलक: ने हुक्म किया कि एक मकान मुवाफिक गुजरान के इस जगह बनवाओ फकीर ने कहा ऐ बेटो नीव दीवार की खोदकर थोड़ी सी मिट्टी जमाकर एक दिन में पानी लाकर गाराकर घर की बुनियाद दुरुस्तकर दूँगा मलक ने उसके कहने से मिट्टी खोदना शुरू की जब एक गज आमीक जो गढ़ा खोदा जमीन के नीचे से एक दरवाजा नमूदार हुआ मल्क ने उस दर को साफ किया बड़ा घर जवाहिर और अशर्फियों से मामूर नजर आया मलिक: ने पांच चार लप अशर्फियों को लेकर फिर बंद किया और मिट्टी ऊपर से हम वार करदी इतने में फकीर आया मालिक ने फरमाया राजमजूर और कारीगर अपने काम के उस्ताद और मजूर जल्दी से बुलाओ जो इस मुकाम पर एक इमारत बादशाहाना कि ताक कसराका जुत्फ हो और फकीर अमनसे सबकत लेजायें और शहर पनाह किले और बाग और बावड़ी और एक मुसा-

फिर खाना कि ख़ासानो होजल्द तैयार करो लेकिन
पहले नक्शा उनका एक कागजपर दुरुस्त कर के
हजरमें लाये जो पसन्द किया जाय फकीरने ऐसाही
कारकुन और कारकरदह जीहोशलाकर हाजिरकिये
मुवाफिक फरमानेके तामीर इमारतकी होने लगी और
नौकर चाकर हरएक कारखाने जात की खातिर चुन
चुन कर फहमीद और वादयानत मुलजिम होने लगे
उस इमारत आलीशानकी तैयारीकी खबर रफते २
बादशाहजुल सुबहानीके जो किवलगाह मलिक के
थे पहुँचा सुनकर मुतअज्जिब हुए और हर एक से
पूछने लगेकि यह कौन शख्स है जिसने यह महलात
बनाने शुरू किये हैं उसकी कैफियत से कोई वाकिफ
न था जो अर्ज करे सभोंने कानों पर हाथ रक्खा के
कोई गुलाम नहीं जानता कि इसका बानी कौनहै तब
बादशाहने एक अमीर को भेजा और पैगाम दिया
कि मैं उन मकानों के देखने को आया चाहता हूं
और यह भी मालूम नहीं कि कहां की बादशाह
जादी हो और किस खानदान से यह सब कैफियत

दरियाफ्त करना अपने तईं मन्जूर है ज्योंही मलिक ने यह खुश खबरी सुना दिलमें बहुत शाद होकर अरजी लिखा कि जहां पनाह सलामत हुजूर के तशरीफ लाने की खबर तरफ गरीब खाने के सुन-कर निहायत खुशी हासिल हुई और सबब हुरमत और इज्जत कनीज का हुआ जहेतालै उस मकान के कि जहां कदम मुबारिक की निशान पड़े और वहाँ के रहने वालों पर नामन दौलत साया करे और नजर तवज्जे से वह दोनों सरफराज होवें यह लौंडी भेदवार है कि कल पंज शम्बह: रोज मुबारिक है और मेरे नजदीक बेहतर है रोज नौरोज से है आपको जात मुशावह आफताबके हैं तश-रीफ फरमाकर अपने नूर से इस जर्रहव व मिकदार की कदर व मंजिलत बखशिये और जो कुछ आजिज से हो सके नौशजा फरमाइये यह ऐन गरीब नवाजी और मुसाफिर परवरी है ज्यादे हद अदब और इस उम्मदेह को नवाजह कर रुखसत किया बादशाहने अरजी से कहला भेजा कि हमने

तुम्हारी दावत कबूल की अलबत्ते आयेंगे मलक ने नौकरों और कारबारियों को हुक्म किया कि लवाज़िमा ज़्याफ़त का ऐसे सलीके से तैयार हो कि बादशाह देखकर और खाकर बहुत महज़ूज़ हो और आला अदना जो बादशाह की रकाब में आये सब खा पीकर खुश होजाय मलक के फ़रमाने और ताकीद करने से सब क़िस्म के खाने सलोने और मीठे उस ज़ायके के तैयार हुये कि अगर बामनकी बेटी खातीतो कलमा पढ़ती जबशाम हुई बादशाह हिन्दी तख़्त परसवार होकर मलक के मकान की तरफ़ तशरीफ़ लाये मलक अपने खवास और सहेलियों को लेकर इस्तक़बाल के वास्ते चली ज्योंहीं बादशाह के तख़्त पर नज़र पड़ी इस अदब से मुजरा शाहाना किया कि यह क़ायदा देखकर बादशाहको औरभी हैरतने लिया और उसी अन्दाज से जलूस करके बादशाह को तख़्त मुरस्से पर ला बिठाया मलक ने सवालाख रुपये का चबूतरा तैयार करवा रक्खा था और एक सो एक किश्ती जवाहिर और असरफ़ी और पश-

मीनाऔर नूरवाफी और रेशमीतिल्लावाफी और दरदोजा की लगा रक्खा था और जंजीर फील और दस रास और अस्प ऐराकी और रमनी मय साज मुरस्से के तैयार कर रक्खे थे नजर गुजरानी और आप दोनों हाथ बाँधे रूबरू खड़ीरही बादशाहने बहुत महरबानीसे फरमाया कि तुम किस मुल्ककी शाहजादी हो और यहां किस सूरतसे आना हुआ मलकःने आदाब बजा लाकर इल्तमासकि यह लौंड़ा वही गुनहगारहै जोगजब सुल्तानीके बाइस इस जंगलमें पहुँची और यह सब तमाशा खुदाका है जो आप देखते हैं यह सुनतेही बादशाहके लोहूने जोश मारा उठकर मुहब्बत से गले लगा लिये और हाथ पकड़ के अपने तख्त के पास कुरसी बिछवाकर हुक्म बैठने का किया लेकिन बादशाह हैरान और मुतअज्जिब बैठेथे फरमाया बादशाह बेगमको कहोकि बादशाहजादियों को साथ लेकर जल्द आये जबवह आई मा बहनों ने पहिचाना और गले मिलकर रोई और शुक्र किया मलकः ने अपने वाल्दह को और बेओं हमशीरोंके

स्वरह इतना कुछ नक़द और जवाहिर रक्खा किखजाने
तमाम आलम उसके पासंग में न था फिर बादशाह
ने सबको साथ बिठाकर खासा नोश फ़रमाया तबतक
जहांपनाह जीते रहे इसी तरह गुज़री कभी २ आप
आते और कभी मलका को भी अपने साथ महलों
में लेजाते जब बादशाहने रहलत फ़रमाई सलतनत
उस अक़लीम की मलकः को पहुँची कि इनके सिवा
दूसरा कोई लायक़ कामके न था ऐ अज़ीज़ सरगुज़श्त
यह है जो तूने सुनी पस दौलत खुदा दाद को हरगिज़
ज़वाल नहीं होता मगर आदमी की नियत दुरुस्त
जितना चाहिये बल्कि खर्च करो उतनीही बरकत होती
है खुदा की कुदरतमें तअज्जुब करना किसी मजहबमें
रवा नहीं दाई ने यह बात कहकर कहा कि अब
अगर क़स्द वहांके जाने का और उसकी ख़बर
लानेका दिलमें मुक़र्रर रखते हो तो जल्द रवाना हो
उसने कहा इसी वक्त मैं जाताहूं और खुदा चाहै तो
जल्द फिर आताहूं आखिर रुख़सत होकर और फ़ज़ल
इलाही पर नज़र रखकर उस सिम्त को चला बरस

दिनके बाद मैं हर्जमर्ज खैंचता हुआ शहर नीमरोज में जा पहुँचा जितने वहाँ के आदमी हजारी बजारी नजरपड़े स्याहपोश थे जैसा अहवाल सुना था अपीनी आँखोंसे देखा कई दिनोंके बाद चाँदरात हुई पहिली तारीख सारे लोग उस शहरके छोटे बड़े लड़के बाले उमरीव बादशाह औरत मर्द एक मैदानमें जमा हुए मैं भी अपनी हालत में सरमर्दान और कसरतके साथ अपने माल व मुल्कसे जुदा फकीरकी सुरत बना हुआ खड़ा देखता था कि देखिये परदेगैबसे क्या जाहिर होता है इतने में एक जवान गाव मुँहमें कफ भरे जोश बखरोश करता हुआ जंगल मेंसे बाहर निकला यह आजिज जो इतनी मेहनत करके उसके अहवाल दरियफ्त कर ने की खातिर गया था ।

किस्सा मुल्क नीमरोजकी शाहजादीका

देखते ही उसके हवास फाख्ता होकर हैरान खड़ा रह गया जवान मर्दकदीस के कायदे पर जोर काम करता था करके फिरगये और खलकत शहरकी तरफ मुत वज्जह हुई जब मुझे होस आया तब मैं पछिताय

कि यह क्यो तुजसे हरकत हुई अब महीना भर फ़िराक़ देखना पड़ा लाचार सबके साथ चला आया उस महीने को माह रमजा के मानिन्द एक दिन गिन कर काटा वारे दूसरी चाँद रातआई मुझे गोया ईद हुई गुरें को फिर बादशाह समेत वहीं जाकर मौजूद हुआ तब मैंने दिलमें मुसम्मिइरादा किया कि अबकी बार जो हो अपने तई सँभालकर इस माजरे अजीबको मालूम कियाचाहिये नागाह जवान बदस्तूर जर्द बैल जीन बाँधे सवार हो आ पहुँचा और उतर कर दो जानू बैठा और एक हाथमें नंगी तलवार और एक हाथमें बैल की नाथ पकड़े और मर्तबान गुलाम को दिया गुलाम हर एक को दिखा कर ले गया आदमी देखकर रोनेलगे उसजवानने अमृतावन को फोड़ा और गुलामके एक तलवार ऐसी मारी कि शिरजूदा होगया औरसवार होकर मुड़ा मैं उसके पीछे जल्द कदम उठा कर चलने लगा शहर के आदमियों ने मेरा हाथ पकड़ा और कहा यह क्या करता है क्यों जान बूझकर

मरता है अगर ऐसी ही तेरा दम नाक में आया है तो बहुतेरी तरह मरने की हैं मर रहो हरचन्द मैंने मिन्नत और ज़ोर भी किया कि किसी सूरत से उनके हाथ से छूटूं छुटकारा न हुआ दो चार आदमी लिपटगये और पकड़ेहुये शहर की तर्फ ले आये अजब तरह कलक हुआ फिर महीना भरे गुजरा जब वह भी महीना तमाम हुआ और सुलह को दिन आया सुबह वह उसको उसी सूरतसे सारे आलम का वहां अजदहाम हुआ मैं अलग से नमाज के वक्त उठ कर आगे ही जंगल से जो ऐन उस जवान की राह पर था घुस कर छुप रहा कि यहां कोई मेरा मजाहम न होगा यह उसी कायदे से आया और वही हरकतें करके सवार हुआ और चला मैंने उसका पीछा किया और दौड़ाता धूपता साथ हो लिया उसी अजीज ने आहट से मालूम किया कि कोई चला आता है एकबारगी बाग मोड़कर एक नारा मारा घुड़का और तलवार खैंच कर सिर पर आपहुँचा चाहता था कि हम्लाकरें

मैंने निहायत अदब से ठहर कर सलाम किया और हाथ बांध कर खड़ा रहा वह काइदः दान मुतकल्प हुआ कि ऐ फकीर तू नाहक मारा गया होता पर बच गता तेरी हयात कुछ बाकी है जा कहां आता है और जड़ाऊं मोतियों का आवेज लगा हुआ कमर से निकाल कर मेरे आगे फेंका और कहा इस वक्त मेरे पास कुछ नक्द मौजूद नहीं जो तुझे दूँ इसको बादशाह के पास लेजा जो तू मागेगा सो मिलेगा ऐसी हैबत और ऐसी रोब मुझ पर गालिब हुआ कि लौटने को कुदरत न चलने को ताकत मुह में घोघो बँघ गई पाँव भारी हो गये इतना कह कर वह गाजीमर्द नारा मारता हुआ चला मैंने दिल मेंकहा हरचन्द वादा वाद रह जाना तेरे हक में बुरा है फिर ऐसा वक्त न मिलेगा अपनी जान से हाथ धोकर मै भी रवाना हुआ फिर वहभी फिरा और बड़े गुस्से से डाटता और मुकरर इरादा मेरे कतल का किया मैं ने सिर झुकादिया औरसोगन्ध दीकि ऐ रुस्तम इस वक्त ऐसो ही एक सैफ मार किदो

टुकड़े हो जवें एक तस्मो बाकीन रहे और इस हैरानी
तबाही से छुट जाऊँ मैंने अपना खून माफ किया
वह बोला कि ऐ शैतान की सूरत क्यों अपना खून
नाहक मेरी गर्दनपर चढ़ाता है और मुझे गुनह
गार बनाता है जा अपनी राह ले क्या जान
तुझको भारी पड़ा है मैंने उसका कहा न माना
और क़दम आगे धरा फिर उसने दीदो दानिस्ते
आना कानी की और मैं पीछे लग लिया जाते
जाते दो कोस झाड़ जंगल तै किया बाद उसके एक
चार दीवारी नज़र आई वह जवान दरवाजे पर गया
और एक नारा मुहीब मारा वह दर आपही आप
खुल गया वह अन्दर पैठा मैं बाहर खड़ा रहा इलाही
अब मैं क्या करूँ हैरान था वारे एक दम के बाद गुलाम
आया और पैगाम लाया कि चल तुझे रोबरू बुलाया
है शायद तेरे शिरपर अजलका फरिस्ता आया है
क्या तुझे कम्बख्ती लगा था मैंने कहा जले नसीब
और बेधड़क उसके साथ अन्दर बाग के गया आखिर
एक मकानमें लेगया जहां वह बैठा था मैंने उसे देख

कर फ़रासी सलाम किया उसने इशारात बैठनेको
की मैं अदब से दो जानूं हो बैठा देखता क्या हूं
वह अकेला एक मसनद पर बैठा है और हथियार
जरगरी के आगे धरे हैं और झाड़ जमुर्दका तैयार
कर चुका है जब उसके उठाने का वक्त आया जितने
गुलाम शहनशींके गिर्द पेश हाजिर थे हुजरी में
छुपगये मैं भी मारे पसोपेश के एक कोठरी मैं जा
घसा वह जवान उठ कर सब मकानों कुण्डियां चढ़ा
कर बाग के कोने की तरफ़ चला और अपनी
सवारी के बैल को मारने लगा उसके चिल्लाने
को आवाज़ मेरे कान में पड़ी कलेजा कांपने लगा
लेकिन इस माजरे के दरियाफ्त करने की ख़ातिर
यह सब आफतें सही थी रहते २ दरवाज़ा खोल
कर एक दरख्त की टेनीकी आड़ में जाकर खड़ा
हुआ और देखने लगा जवान ने वह सोंटा जिस
से मारता था हाथ से डाल दिया और एक मकान
का कुफ़ल कुन्जी से खोला और अन्दर गया फ़िर
वोंही बाहर निकल कर नरगाव की पीठ पर हाथ

फेरा और मुँह चूँमा और दाना घास खिलाकर इधर को चला मैं देखते ही दौड़कर जल्द कोठरी में जा छुपा उस जवान ने जंजीरे सब दरवाजों की खोल दी सारे गुलाम बाहर निकले और जर अन्दाज और सिलफची आफताव लेकर हाजिर हुए वह बजूकर नमाजकी खातिर खड़ा हुआ जब नमाज अदा कर चुका पुकारा कि वह दरवेश कहाँ है अपना नाम सुनते ही दौड़कर मैं रूबरू खड़ा हुआ फरमाया बैठ मैं तसलीम कर बैठा खासा आया पहले उसने तनावल फरमाया फिर मुझे इनायत किया मैंने भी खाया जब दस्तर खान बढ़ाया हाथ धोये गुलामों को रुखसत दी कि जाकर सो रहो जब कोई इस मकान में न रहा तब मुझसे हम कलाम हुआ और पूछा ऐ अजीज तुझ पर क्या ऐसी आफत आई है जो तू अपनी मौत को ढूंढ़ता फिरता है मैंने अपना अहवाल आगाज से अंजाम तक जो कुछ गुजरा था तफसीलवार कह सुनाया और आपकी तवज्जे से उम्मेद है कि अपनी मुराद

को पहुँचूँ उसने यह सुनते ही एक ठंढी सांस भरी और बेहोश हुआ और कहने लगा यारे खुदाया इश्क के दर्द से तेरे सिवा कौन वाकिफ है। और यह कहा जाके पांव न जाय बिवाँई। वह क्या जाने पीर पराई॥ इस दर्द को कदर जो दर्द मन्द होय सो जाने।

शैर—आफतों का इश्क को आशिक से पूछा चाहिये।
क्या खबर फासिक को सादिकसे पूछा चाहिये॥

बाद एक लहमेके होश में आकर एक आह जिगर सोज़ भरी कि सारा मकान गूंज गया तब मुझे यकीन हुआ यह भी इसी इश्क की बला में गिरफ्तार है और उसी मर्जका बीमार है तब तो मैंने दिल चला कर कहाकि मैंने अपना सब अहवाल अर्ज किया अब तवज्जे फ़रमाकर अपनी सर गुजस्तसे बन्देको मुत्तला फ़रमाइये तो बमकदूर अपने पहले तुम्हारे वास्ते सही करूँ और दिलका मतलब कोशिश करके हाथ में लाऊँ अलकिस्से वह आशिक सादिक मुझको अपना हमराज और हम

दर्द जानकर इस सूरत से बयान करने लगा कि सुन ऐ अज़ीज मैं बादशाह ज़ादा जिगर सोज़ इस अक़लीम नीम रोज़ का बादशाह हूं यानी किब्लेगाह ने मेरे पैदा होने बाद नजूमी और रम्माल और पंडित जमा किये और फ़रमाया कह वाल शाहजादे के नसीब के देखो जांचो और जन्मपत्री दुरुस्त करो और जो कुछ होना हो हकीकत पल पल घड़ी २ और पहर पहर दिन दिन महीने महीने वर्ष वर्ष को हजूर में मुफ़स्सिल अर्ज करो बमूजिब हुक्म बादशाह के सब ने मुत-फ़क़ हो अपने अपने इल्म की रू से ठहराय और साध कर इल्तमास किया खुदा के फ़ज़ल से ऐसी नेक साअत और शुभ लगन में शाहजादे का जन्म और तवल्लुद हुआ कि चाहिये सिकन्दर कीसी बादशाहत करे और नौशेरवां सा आदिल हो जितने इल्म और हुनर हैं उनमें कामिल हो और जिस कौम की तरफ़ दिल उसका मायल हो वह बखूबी हासिल हो सखावत और सुजाअत में

ऐसा नाम पैदा करे कि हातिम और रुस्तम को लोग भूल जायें लेकिन चौदह वर्ष तक सूरज और चांद के देखने से एक बड़ा खतरा नजर आता है बल्कि यह विश्वास है कि जनूनी और सौदाई हो कर बहुत आदमियों का खून करे और बस्ती से घबराये और जंगल में निकल जाये और चरन्द व परन्द के साथ दिल बहलाये वह ताकीद रहे कि रात दिन आफ़ताब व माहताब को न देखे बल्कि आसमान की तरफ़ निगाह भी न करने पाये इतनी मुद्दत खैर आफियत से काटे तो फिर सारी उमर सुख और चैन से सल्तनत करे यह सुनकर बादशाह ने इसी लिये इस बाग़ की बुनियाद डाली और मकान मुतअद्दद एक नकशे के बनवाये मेरे तईं तैखाने में पलने को हुक्म किया और ऊपर एक बुर्ज नमदे का तैयार करवाया तो धूप और चांदनी उस में से न छने दाई दूध पिलाई और अन्ना छूछू और कई खवासों के साथ बड़ी मुआ-ज़िज़त से उस मकान आलीशान में परवरिश

पाने लगा और एक उस्ताद दानाकार अज़मूदा वास्ते मेरी तबियत के मुतय्यन किया तो तालीम हर इल्म और हर हुनर की और महुक्कहफ्त कलां लिखनेकी करी और जहां पनाह हमेशा मेरे खबरगीर रहते दमबदम की कैफियत रोज मर्रह हजूर अर्ज होती मैं उस मकान को आलम दुनियां जान कर खिलौनों और रङ्ग बिरङ्गके फूलोंसे खेला करता औरतमाम जहान की नियामतें खाने के वास्ते मौजूद थीं जो चाहता सो करता दस वर्ष की उम्र तक जितनी काबलियतें और सनअतें थीं तहसील की थीं एक रोज उस गुंवज के नीचे रोशन दान से एक फूल अचंभे का नजर पड़ा कि देखते २ बड़ा होता जाता था मैंने चाहा कि हाथ में पकड़ लुं ज्यों ज्यों मैं लम्बा हाथ करता था वह ऊंचा होता जाता था था मैं हैरान होकर उसे तक रहा था वोहीं एक आवाज कह कहे की मेरे कान में आई उसके देखने को गर्दन उठाई देखा तो नम्दा चीर कर एक मुखड़ा चांद कासा निकल रहा है देखते उसको

मेरे अकेल होश जाते रहे फिर अपने तईं संभाल कर देखा तो एक मुरस्सेका तख्त परीज़ादे के कांधे पर मुतअल्लिक खड़ा है और एक तख्त नशीं ताज जवाहर का सिर पर और खिलत झलाबोर बदन का पहने हाथ में याकूत का प्याला लिये और शराब पिये हुए बैठी है और तख्त बुलंदी आहिस्ते आहिस्ते नीचे उतर कर उस बुर्ज से आया तब परीने मुझे बुलाया और अपने नजदीक बिठाय और बातें प्यार की करने लगी और मुंह से मुंह लगाकर जाम शराब गुले गुलाब का मेरे तईं पिलाया और कहा आदमीज़द बेवफा होता है लेकिन दिल हमारा तुम्हें चाहता है यकदम ऐसे २ अन्दाज नाजकी बातें कहो कि दिल मेरा मोहब हो गया और खुशी ऐसी हासिल हुई जिंदगानी का मजा पाया और यह समझा आज तू दुनियां में आया हासिल यह है कि मैं तो कहूं किसी ने यह आलम मन देखा होगा न सुना होगा उस मजे में खातिर जमा से हम दोनों बैठे थे कि करायल

में गुखेला लगा अब उस हादिसः नाग हानी का माजरा सुनो कि वहीं चार परीजादों ने आसमान पर से उतर कर कुछ माशूकः के कान में कहा सुनते ही उसका चेहरा मुतग्य्यर हो गया मुझसे बोली कि ऐ प्यारे दिल तो चाहता था कि कोई दम तेरे साथ बैठ कर दिल बहलाऊँ और इसी तरह आज मैं तुझे अपने साथ ले जाऊं पर यह आसमान दो शख्सों को एक जगह आराम से और खुशीसे रहने नहीं देता ले तेरा खुदा मिहरबान है यह सुनकर मेरे हवास जाते रहे और तुती हाथ से उड़ गई मैंने कहा अजी अब फिरकब मुलाकात होगी यह क्या तूने गजब की बात सुनाई अगर जल्द आओगी तो मुझे जीता पाओगी नहीं तो पछिताओगी या अपना ठिकाना नाम व निशान बताओ कि मैं ही उस पते पर ढूंढते अपने तई तुम्हारे पास पहुंचाऊं परी यह सुनकर बोली दो बार शैतान के कान भरे तुम्हारी हमेशा बिस्तसाल की उम्र होवै अगर जिंदगी है तो फिर मुलाकात हो रहेगी

मैं जिन्नो के बादशाह की बेटी हूं और कोहक़ाफ में रहती हूं यह कह कर तख्त उठाया और जिस तरह उतारा था वोहीं बुलन्द होने लगा जब तलक सामने था मेरी और उसकी चार आंखें होरही थीं जब नजरों से गायब हुआ यह हालत हो गई जैसे परी का साया होता है अजब तरहकी उदासी दिल पर छागई अक्ल व होश रुखसत हुआ दुनियां आंखों के तले अन्धेरी होगई हैरान व परेशान जार जार रोता और सिर पर खाक डालता कपड़े फाड़ता न खाने की सुध न भले बुरे की बुध ॥

शैर—इस इश्क की बदौलत क्या क्या खराबियां हैं ॥
दिल में उदासियां हैं और इज्जतमें खामियां हैं ॥

इस खराबीसे दाई और मुवल्लम खबरदार डरते २ बादशाहके रूबरू गये कि ये बादशाहजादे अलमी आनकाये हाल है मालूम नहीं खुद बखुद यह क्या गजब टूटा जो उनका आराम और खाना पीना छूटा तब बादशाह वजीर उमराव साहब तदबीर और हकीम हाजिक मुनजिब सादिक मुल्लास्याने खुष

दरवेश मालिक मजनू अपने साथ लेकर उस बाग में रौनक अफ़जा हुए मेरी बेकरारी और नाले व जारी देखकर उनको भी हालत इजतराबकी होगई आबदीदः होकर बेइख्तयार गलेमें लगा लिया और उसकी तदबीर को खातिर हुक्म किया हकीमों ने कुव्वत दिल और खलल दिमाग के वास्ते नुसखे लिखे और मुल्लाओं ने नकूशवतावाज पिलाये और पास रखने को दिये दुआये पढ़ कर फूंकने लगे और नजूमी बोले कि सितारोंकी गर्दिशके सबब यह सूरत पेश आई है उसका सदका दीजिये गरेज अपने २ इल्मकी बातें कहते पर जो गुजरती थी मेरा दिलही सहता था किसीकी रुई और तदबीर मेरे तकदीर के आगे काम न आई दिन बदिन दीवानगी का जोर हुआ मेरा बदन बेआबोदाने के कमजोर हो चला रात दिन चिल्लाना और सिर पटकनाही बाकी रहाउस हालतमें तीन साल गुजरे चौथे वर्ष एक सौदागर सैर व सफर करता हुआ आया हर एक मुल्क के तोफे तहायफ अजीब व

गरीव व जहांपनाह हजूरमें लाया मुलाजमत हासिल
की बादशाहने बहुत तवज्जह फरमाई और अहि-
वाल पुरसी उसकी करके पूछाकि तुमने बहुत मुल्क
देखे कहीं कोई हकीम कामिलभी नजर पड़ा किसी
से मजकूर उसका सुना उसने इल्तमास किया किब्बे
आलम गुलामने बहुत सैरकी लेकिन हिन्दुस्तान में
दरियो के बीच एक पहाड़ है वहां एक गुसाईं जटा
धारीने बड़ा मंडप महादेवका और संगीन और आग
बड़ी बहारका बनाया है उसमें रहताहै और यह
कायदा है कि बर्सवें दिन शिवरातके रोज आपने
स्थानसे निकल कर दरियामें तैरताहै स्नान के बाद
जब अपने आसन पर जाने लगता है तब बीमार
और दर्दमंद देश देश और मुल्क २ के दूर २ से
आते हैं दरवाजे पर जमा होते हैं उनका बड़ा भीड़
होता है वह महंत जिसे इस जमाने का अफलातून
कहा चाहिये कारूर और नब्ज देखता हुआ और
हर एकको नुसखा लिखकर देता हुआ चला जाता
है खुदा ने ऐसा दस्त शफा उसको दिया है दवा

पीतेही असर होताहै और वह मर्ज बिल्कुल जाता रहताहै यह माजरा मैंने बचश्म खुद देखा और खुदाकी कुदरतको याद कियाकि ऐसेबन्दे पैदा किये हैंअगर हुक्म होयतो शाहजादे अलामयानको उसके पास ले जायें उसको एक नजर दिखायें उम्मेद कवी है जल्द शफाय कामिलहो और जाहिर में भी तदबीर अच्छी है कि हर एक मुल्ककी हवा खाने में और जाबजा के आबोदाने से मिजाज में फरहत आता है बादशाहको भी उसकी सलाह पसंद आई और खुश होकर फरमाया बहुत बेहतर शायद उनका हाथ रास लाये और मेरे फरजन्दके दिलसे दहशात जाय एक अमीर मोतबिर जहां दीदःकार अजमूदा को और उस अमीर को मेरी रकाबमें तईनात किया और असबाब जरूरी साथ कर दिया निदाहे बजरे मोरपंखी पलवार चल के खेत उलाक पठलियां पर मय सरंजाम सवार होकर के रुखसत किया चलके उस ठिकाने पर जा पहुँचा नई हवा और नया दाना पानी खाने पीने से कुछ मिजाज ठहरा लेकिन खा-

मोशी का यही आलम था और रोनेसे काम दम बदम याद उसपरी की न भूलता था अगर कभी बोलता तो यह बैत पढ़ता।

बैत-न जानूं किस परीरूकी लगी आंख।
अभी तो था चंगा मेरा दिल॥

बारे जब दो तीन महीने गुज़रे उस पहाड़ पर क़रीब चार हज़ार मरीज़ जमा हुए सब यही कहते थे कि अब खुदा चाहे तो गुफाई अपने मठ से निकलेंगे और सब को उनके फ़रमाने से शफ़ा होगी अलकिस्से जब वह दिन आया सुबह को जोगी मानिन्द आफ़ताब के निकल आया और दरिया में नहाया और पार जाकर फिर आया और भभूत भस्म तमाम बदन में लगाया और गोरा बदन मानिन्द अङ्गारे के राख में छुपाया और माथे मलियागिर का टीका दिया लंगोट बाँध कर अङ्गोछा कांधे पर डाला बालों का जूड़ा बाँधा मूछों पर ताव देकर चढ़वा जूता पहना उसके चेहरे से यह मालूम होता था कि सारी दुनियाँ उसके नजदीक कुछ क़दर नहीं रखता

एक क़लम दान जड़ाऊ बग़ल में लेकर एक २ की तरफ़ देखता हुआ और नुसखा लिखता हुआ मेरे नजदीक आ पहुँचा जब मेरी उसकी चार नजर हुई खड़ा रहकर ग़ौर में गया और मुझ से कहने लगा हमारे साथ आवो हमराह हो लिया जब सबकी नौबत हो चुकी मेरे तईं बाग़ के अन्दर ले गया और एक मुकं़ते खुश नक़्शे खि़लवत ख़ाने में मुझे फ़रमाया कि यहाँ तुम रहा करो और आप अपने स्थान में गया जब एक चिल्ला गुज़रा तो मेरे पास आया और आगे की निसबत मुझे खुश पाया तब मुस्करा कर फ़रमाया कि इस बाग़ीचे में सैर किया करो और जिस मेवे परजी चले खाया करो और एक कुलफी चीनी की माजून भरी हुई दी कि इतने में से छःमासे बिलानाफ़ः हमेशा नहा धो नोश जान फ़रमाया करो यह कह वह तो चला गया और मैंने उसके कहने पर अमल किया हर रोज क़ुव्वत बदन में और फ़रहत दिलको मालूम होने लगी लेकिन हज़रत इश्क़ को कुछ असर न हुआ उस परी की

सूरत नज़रों के आगे फिरती थी एक रोज ताक़ में एक जिल्द किताब की नज़र आई उतार कर देखा तो सारे इल्म दुनियां के उसमें जमा किये थे गोया दरिया को कूजे में भर दिया था हर घड़ी उसका मुताला किया करता इल्म हिकमत और तसवीर में निहायत कुव्वत बहम पहुंचाई इस अर्से में दिन गुज़र गया फिर वही खुशी का दिन आया जोगी अपने आसन पर से उठकर बाहर निकला मैंने सलाम किया उसने कलमदान मुझे देकर कहा साथ चलो मैं भी साथ हो लिया जब दरवाजे से बाहर निकला एक आलम दुआ देने लगा वह अमीर और सौदागर मुझे साथ देखकर गुसाईं के के कदमों पर गिरे और और अदाऐं शुक्र करने लगे कि आपकी तवज्जे से बारे इतना तो हुआ वह आदत पर दरिया के बाद तक गया और स्नान पूजा जिस तरह हर साल करता था फिरती वार बीमारों को देखता भालता चला आता था इत्ति-फ़ाकन सौदाइयों के गोल में एक जवान खूबसूरत

शकील कि जौफ़ से खड़े होने का ताकत उसमें न थी नज़र यड़ा मुझको कहा इसको साथ ले आवो सबके दारुदरपन करके खिलवत खाने में गया थोड़ी सी खोपड़ी उस जवान की तराश कर चाहा कि कनखजूरा जो मग्जपर था जम्बूर से उठा लेवे मेरे ख्याल में गुजरा और बोल उठा कि अगर दस्त पनाह आग में गर्म करके उसकी पीठ पर रक्खें तो खूब है आप से आप निकल आयेगा ज्यों २ खींचेगा तो मग्ज से गूदेको न छोड़ेगा फिर खौफ़ जिन्दगी का है यह सुन कर मेरी तरफ़ देखा और चुपका उठ बागके कोने में एक दरख्त की टेनी को पकड़ा जटा-की लटकी गलेमें फांसी लगाकर रहगया मैंने पास जाकर देखा तो वाह वाह यह तो मरगया यह अचम्भा देख कर निहायत अफ़सोस हुआ लाचार जीमें आया उसे गाड़दूं तो दरख्त से जुदा करने लगो दो कुंजियां उसकी लटों मे से गिर पड़ी मैंने उन्हें उठा लिया और उस गज खूबी

को दफ़न किया यह दोनों कुंजिया लेकर कुफ़्लों में लगाने लगा इत्तिफ़ा॰न दो हुजरों के ताले उन तालियों से खोल देखा तो जमीन छत तलक जवाहर भरा हुआ है और एक पेटी मखमल से मढ़ी हुई एक तरफ धरी है उसको जो खोला तो एक कि ाब देखी तो इस्मआज़म और हाज-रात जिन व परी और रूहों की मुलाकात और तसवीर आफ़ताब की तरकीब लिखी है ऐसी दौलत हाथ लगने से निहायत कुशी हासिल हुई और उन पर अमल करना शुरू किया दरवाजा बाग का खाल दिया अपने अमीर और साथ वालों को कि किश्तियाँ मँगवाकर यह सब जवाहर व नक्द व जिन्स और किताबें वार करली और एक नवारे पर आप सवार किया आते २ जब नजदीक अपने मुल्क के पहुँचा जहाँ-पनाह को खबर हुई सवार होकर इस्तकबाल किया और ईश्तियाक मेरे बेकरार होकर गले से लगा लिया मैंने कदम बोसी करके कहा कि इस खाक-

सार को क़दीम बाग में रहने का हुक्म हो तो बोले कि ऐ बरखुदार वह मकान मेरे नजदीक मन्हूस ठहरा लिहाजा उसकी मरम्मत और तैयारी मौकूफ की अब वह मकान लायक इन्सान के रहने के नहीं रहा और और जिस महल में जी उतरो बेहतर यह है कि क़िले में कोई जगह पसंद करके मेरी आँखों के रूबरू रहो और पाईं-बाग जैसा चाहो तयार करो सैरो तमाशा देखा करो मैने बहुत जिद और हठकर उस बाग को नये सिरे से तैयार करवाया और बहिश्त के मान्निन्द आरास्तःकर दाखिल हुआ फिर फरागत से जिन्नों की तसवीर की खातिर चिल्ले बैठा और तर्क हैवानात करकर हाजरात करने लगा जब चालीस दिह पूरे हुए तब आधी रात को एक ऐसी आँधी आई कि बड़ीबड़ी ईमारत गिर पड़ी और परीजादों का लश्कर नमूद हुआ एक तख्त हवासे उतरा उस पर एक सख्श शानदार मोतियों का ताज और खिलअत पहने बैठा था

मैंने अदब से सलाम किया और कहा ऐ अजीज़ यह क्या तूने नाहक दुन्द मचा रखी हम से तुझे क्या मुद्दा है मैंने इल्तमास किया कि आजिज़ बहुत मुद्दतों से तुम्हारी बेटी पर आशक है और इसलिये कहाँ से कहाँ खराब खस्ता हुआ जीते जी मुआ जिन्दगी से तङ्ग आया हूँ और अपनी जान पर खेला हूँ जो यह काम किया है आपकी जातसे उम्मेदवार हूँ कि मुझे हैरान बसर गर्दान अपनी तवज्जेसे सरफराज करो और उसके दीदार से ज़िंदगी और आराम बखशो तो बड़ा सवाब होगा यह मेरी आरजू सुनकर बोला कि आदमी खाकी और हम आतिशी इन दोनों में मुवाफिकत आनी मुश्किल है मैंने कसम खाई कि मैं उनके देखने को मुश्ताक हूँ और कुछ मतलब नहीं फिर उस तख्त नशींने जवाब दिया कि इन्सान अपने कौल व करार पर नहीं रहता गरज का वक्त सब कुछ कहता है लेकिन याद नहीं रखता यह बात मैं तेरे भले के लिये कहता हूँ कि

अगर तूने कभी कस्द कुछ और किया तो वह भी और तुम भी दोनों खराब खस्ता होगे बल्कि खौफ जानका है मैंने फिर दुबारा सौगंध याद की कि जिसमें कि बुराई होवे वैसा काम हर्गिज न करूंगा मगर एक नजर देखता रहूँगा यह बात होती थी कि यकायक वह परी जिसका मजकूर था निहायत ठस्से बनाव किये हुए आ पहुँची और बादशाह का तख्त वहाँ से चला गया तब मैंने बे अख्त्यार उस परी को जानकी तरह बगल में ले लिया और यह शेर पढ़ा।

शेर—कमां अबरू मेरे घर क्यों न आये।
कि जिसके वास्ते खैंचे हैं चिल्ले॥

इसी खुशी के आलम में बाहम उस बागमें रहनेलगा मारे डरके कुछ और ख्याल न करता था बालायें मजेसे लेता था और फक्त देखा करता था वह परी मेरे कौल व करारके निभाने पर दिल में हैरान रहती और बाजे वक्त कहती कि प्यारे तुमभी अपनी बातके सच्चेहो लेकिन एक नसीहत

मैं दोस्ती की राह से कहती हूं अपनी किताब से ख़बरदार रहो कि जिन्न किसी दिन तुम्हें ग़ाफ़िल पाकर चुराले जावेंगे मैंने कहा इसे अपनी जान के बराबर रखता हूं जि रोज शैतान बाग़लाना शौरत की हालत में यह दिलमें आया कि जो कुछ हो सो हो कहाँ तलक अपने तईं थाँभू उसने छाती से लगाया और क़स्द जमा अका किया वोहीं एक आवाज़ आई यह किताब मुझे दे कि उसमें इस्म आज़म है बेअदबी म कर और मस्ती के आलम में कुछ होश न रहा किताब बगल से निकाल कर बग़ैर जाने पहिचाने हवाले करदी और अपने काममें लगा वह नाज़नीन यह मेरी हरकत देखकर बोली ऐ ज़ालिम आख़िर चूका और नसीहत भूला यह कहकर बेहोश होगई और मैंने उसके सिरहाने एक देवको देखा कि किताब लिये खड़ा है चाहा कि पकड़कर ख़ूब मारूं और किताब छीनलूँ इतने में उसके हाथ से दूसरा देव ले भागा मैंने जो अफ़सूंयाद किये थे पढ़ने शुरू

किये यह जिन्न खड़ा था बैल बन गया लेकिन अफसोस परी जरा भी होशमें न आई और वही हालत बेखुदीकी उस दरपर रही तब मेरा दिल घबराया सारा ऐशतलख होगया उसे रोजसे आदमियों से नफरत हुई इस बाग के गोशे में पड़ा रहता हूं और दिलके भुलाने की खातिर यह अमृत बान जमुंद का झाड़दार बनाया करता हूं और हर महीने उस मैदान में इस बैल पर सवार होकर जाया करता हूं अमृत बान को तोड़कर गुलामको मार डालता हूं इस उम्मेद परकि सब मेरी हाल देखें और अफसोस खांय शायद कोई ऐसा बन्दा खुदाका मेहरबान होकर मेरे हकमें दुआ करै तो मैंभी अपने मतलबको पहुँचूं ऐ रफीक मेरे जनून और सौदेकी यह हकीकत है जो मैंने तुझे कह सुनाई में सुनकर आबदीदः हुआ और वालाकि ऐ शहजादे तूने वाकई इश्ककी बड़ी मेहनत उठाई लेकिन कसम खुदाकी खाता हूं किमैं अपने मतलबसे दर गुजरा अब तेरी खातिर जंगल

पहाड़ में फिरूँगा और मुझसेजो हो सकेगा सो करूँगा यह वाइदा करके उस जवान से रुखसत हुआ और पाँच बरस तक सौदाई सा वीराने में खाक छानता फिरा पर कुछ सुराग न मिला आ-खिर उकता कर एक पहाड़ पर चढ़ गया और चाहाकि अपने तईं गिरादूँ कि हड्डी पसली कुछ साबित न रहे कि वोही एक सवार बुरके पोश आ पहुँचा और बोला अपनी जान मतखो थोड़े दिनों के बाद तू अपने मकसद से कामयाब होगा साईं अल्लाह तुम्हारे दीदारतो मयस्सर होवे अब खुदा के फजलसे उम्मेदवार हूं किखुशी और खुर्रमी हासिल हो और सब नामुरादमुराद अपनी को पहुंचे जब दूसरा दरवेश भी अपनीसैर का किस्सा कह चुकारात आखिर होगई और वक्तसुबह शुरू होने पर आया बादशाह आजाद बख्त चुपका अपने दौलत खाने की तरफ रवाने हुआ महल में पहुँच कर नमाज आदाकी फिर गुसलखानेमें जा गुसल किया और खिलअत फाखरा पहनकर दीवान आममें

तख्त पर निकल बैठा और हुक्म किया कि एसावल जो चार फकीर फलाने मुकाम वारिद हैं उनको हजरत अपने साथ हजूर में ले आये बमूजिब हुक्म के चोबदार वहाँ गया देखा तो चारो बेनवा झाडा झटका फिर हाथ मुँह धोकर चाहते थे कि नाशता करें और अपनी राहलें चोबदार ने कहा शाहजी बादशाह ने चारों सूरतों को तलब फरमाया है मेरे साथ चलिये चारो दरवेश आपसमें एक २ को तकने लगे चोबदार से कहा बाबा हम अपने दि के मुख्तार हैं दुनियाँ के बादशाह से क्या काम है उसने कहा साईं अल्लाह मुजायका नही अगर चलो तो अच्छा है इतनेमें चारो को याद आया कि मौला मुर्तजा अलीने जो फरमाया था सो अब पेश आया खुश हुए और येसवाल के हमराह चले जब किलेमें पहुँचे रूबरू बादशाह के गये चारों कलंदरों ने दुआ दी कि बाबा तेरा भला हो बादशाह दीवान खाने में जा बैठा और दोचार खास अमीरों को बुलाया

और फ़रमाया कि चारों गुदड़ी पोशों को बुलाओ जब वहाँ गये बादशाह ने हुक्म बैठने का किया अहवाल पुरसी फ़रमाई और तुम्हारा कहाँ का इरादा है मकान मुरशिदों के कहाँ है उन्होंने कहा कि बादशाह की उम्र दौलत ज्यादह होवे हम फ़कीर हैं एक मुद्दत से खाने बदोश इसी तरह सरव सफ़र करते फिरते हैं वह मसल है फ़कीरों को जहाँ शाम हुई वहीं घर है और जो कुछ इस दुनियाँ नापायेदार में देखा है कहाँ तक बयान करें आजादबख्त ने बहुत तसल्ली और तशफ्फी की और खाने को मँगवाकर रोबरू अपने नाश्ता करवाया फ़ारिग जब हुए फिर फ़रमाया कि अपना माजरा वे कम कास्त मुझसे कहो जो मुझसे तुम्हारी खिदमत हो सकेगी कसूर न करूँगा फ़कीरों ने जवाब दिया कि हम पर जो बीती है न बयान करने की ताक़त है न बादशाह को सुनने की फ़ुरसत होगी इसको माफ़ कीजिये तब बादशाह ने तबस्सुम किया और कहा सब जहाँ तुम बिस्तरों पर बैठे अपना२

हाल कह रहे थे वहाँ मैं भी मौजूद था चुनाचे दो दरवेशों का अहवाल सुन चुका अब चाहता हूं दोनों जो बाकी हैं वह भी कहें और चन्द रोज खातिर जमा मेरे पास रहें कि कदम दुरवेशान रद्द बला है बादशाह से यह बात सुनतेही मारे खौफ़ के कांपने लगा और सिर नीचे करके चुपहो रहे ताकत गोयाई कीन रही आजादबख्त ने जब देखा कि अब आँखों मारे रोब के हवास नहीं रहे जो कुछ बोले। फरमाया कि इस जहान में कोई ऐसा शख्श न होगा जिस पर एक वारदात अजीब व गरीब न हुई होगी बावजूदे कि मैं बादशाहहूं लेकिन मैंने भी ऐसा तमाशा देखा है कि पहले मैं भी उसका बयान करता हूँ बखातिर जमा सुनो दुरवेशों ने कहे बादशाह सलामत आपका इलताफ़ फ़कीरों के हाल पर ऐसा है इरशाद फरमाइये।

किस्सा बादशाह आज़ादबख्त का

आजादबख्त ने अपना हाल शुरू किया और कहा--

रुबाई—ऐ शाहो बादशाह का तुम माजरा सुनो।

जो कुछ कि मैंने देखा है और मैं सुना सुनो ॥
कहता हूं मैं फकीरों की खिदमत में सर बसर।
अहिवाल मेरा खूब तरह दिल लगा सुनो ॥

मेरे किब्लेगाहने जब वफात पाई और मैं तख्त पर बैठा ऐनआलम शबाब था और यह सारा मुल्क रूम का मेरे हुक्म में था इत्तिफ़ाक़ से एक साल कोई सौदागर बदख्शां के मुल्क मे आया और असबाब तिजारतका बहुतसा लाया खबरदारों ने हजूर में खबर की कि ऐसा ताजर बड़ा आज तक शहर में नहीं आया मैंने उसको तलब फरमाया वह तुहफे हर एक मुल्कके लायक मेरे नजरके लेकर आया फिलवाके हर एक जिन्स ऊबफा नजर आई चुनांचे एक डिबिया एक लाल निहायत खुशरंग और आबदार कद व कीमत दुरुस्त और वज़न में पांच मिश्काल का मैंने बावजूद सल्तनत के ऐसा जवाहर कभी न देखा था और न किसीसे सुना था पसन्द किया सौदागर को बहुतसा इनाम और इक-राम दिया और सनद राहदारी की लिख दी कि इससे हमारे तमाम मुल्क में कोई मज़ाहम महसूल

का न दो और जहां जाय इनको आराम से रक्खे चौकी पहरे से हाजिर रहे इनको नुकसान अपना समझे वह ताजर हजूर में दरबार के वक्त हाजिर रहना और आदाब से सल्तनत के खूब वाकिफ था और औरत कोर खुश हो गई लायक उसकी उसके सुनने की थी और मैं उस लालको हर रोज जवाहर खाने से मगवाकर सरे दरबार देखा करता एक रोज दीवान आम में बैठा था और अमीर अरकान दौलत अपने २ पाये पर खड़े थे और हर एक मुल्क के बादशाहों के एलची मुबारिकबाद की खातिर जो आये थे वे सब भी हाजिर थे उस वक्त मैंने मुवाफिक मामूल के उस लालको मगवाया जवाहर खाने का दारोगा लेकर आया मैं हाथ में लेकर तारीफ करने लगा और फरंग के एलची को दिया उसने देखकर तबस्सुम किया और जमाने साजी से सिफतकी उस तरह हाथों हाथ हर एक ने लिया और सब एक जबान होकर बोले किब्ले आलम के बाइस यह मयस्सर हुआ-

है बोला किसी बादशाह के हाथ आज तक ऐसी रकम वेबहा नहीं लगी उस वक्त मेरे जिल्लेगाह का वजीर दाना था और उसी खिदमत पर सरफराज था फिजारत की चौकी पर खड़ा था आबाद वजालाया और इःतमास किया कि अर्ज किया चाहता हूं अगर जान बख्शी होवे मैंने हुक्म किया कि कह वह बोला जिल्ले आलम आप बादशाह हैं बादशाहों से बहुत बईद है कि एक पत्थर की इतनी तारीफ कर अगरचे रंग ढंग में संगमे लासानी है लेकिन सग है और इस दम सब मुल्कों के एलची दरबार में हाजिर हैं जब अपने २ शहर में जावेंगे अलब।। यह नकल करेंगे कि अजब बादशाह है कि एक लाल कहीं से पाया ह उसे तुहफा बनाया है कि हर रोज रोवरू मँगाता है और आप उसकी तारीफ कर कर सबको दिखाता है पसजो बादशाह राजा यह हवाल सुनेगा अपनी मजलिस में हँसेगा खुदामंद एक सौदागर जो नशातपुर में है उसमे बारह

दाने लाल के कि हर एक मान २ मिश्क़ाल का है पट्टे में नसब करके कुत्ते के गले में बांधे है मुझे सुनतेही गुस्सा हो आया और खिसियाना होकर फ़रमाया कि इस वज़ीर की गरदन मारो जल्लादोंने वोहीं उसका हाथ पकड़ लिया और चाहा कि बाहर ले जावें औरसूली चढ़ावें फ़रंग के बादशाह का एलची दस्तबस्ता रूबरू आकर खड़ा हुआ मैंने पूछा कि तेरा क्या मतलब है उसने अर्ज की कि उम्मेदवार हूं कि वज़ीर की तक्सीर से वाक़िफ़ हूं मैंने फ़रमाया कि झूठ बोलने से और बड़ा गुनाह कौनसा है खसूसन बादशाहों के रूबरू उसने कहा उसका दरोग़ साबित न हुआ शायद कि जो कुछ अर्ज की है सचहो बेगुनाह का क़त्ल करना दुरुस्त नहीं उसका मैंने यह जवाब दिया कि हरगिज अक़्लमें नहीं आताकि एक ताजर की नफ़े के वास्ते शहर बशहर और मुल्क बमुल्क खराब होता फिरता है और कौड़ी २ जमा करता है बारह

दाने लालके जो वजन सात सात मिश्कालके हैं कुत्ते के पट्टे में लगावे उसने कहा खुदाको कुदरत से तअज्जुब नहीं शायद की बादश ह ऐसे तुहफे सौदागरों और फकीरों के हाथ आते हैं कि यह दोनों हर एक मुल्क में जाते हैं और जहां से जो कुछ पाते हैं ले आते हैं सलाह दौलत यह है कि वजीर ऐसा ही तकसीर वार है तो हुक्म कैद का हो की वजीर बादशाहों की अकल होते हैं और वह हरकत सला तीनों से बदनुमा है कि ऐसी बात पर झूठ सांच इसका अभी साबित नहीं हुआ हुक्म कत्लका फरमाइये और उसकी तमाम उमरकी खिदमत और नमक हलाली भूलजाये बादशाह सलामत अगले शहरयारों ने बन्दी-खानः इसी सबब इजाद किया है कि बादशाह अगर सरदार या किसी पर गजबनाक हो तो उसे कैद करे कई दिनमें गुस्सा जाता रहेगा और बेत-कसीर उसकी जाहिर होगी बादशाह खून नाहक से महफूज रहेंगे कजे के रोज कयामत में माखूज न

मैंने कितनाहीं उसको कायल करने को चाहा. मगर उसने ऐसी माकूल गुफ्तगूकी कि मुझे लाजवाब किया तब मैंने कहा कि खैर तेरा कहना पजोर हुआ मैं खूनसे उसके दर गुजरा लेकिन जिन्दान में मुकैद रहेगा अगर एक साल के अरसेमें उसका सखुन रास्ता हुआ कि ऐसे लाल कुत्ते के गलेमें हैं तो उसकी निजात होगी और नहीं तो बड़े अजाबसे मारा जायगा फरमायाकि वजीरको बंदीखाने में लेजाओ यह सुनकर एलचीने जमीन खिदमतकी चूमी और तसलीमात की जब यह खबर वजीरके घरमें गई आह वावैला मचा और घर तमाम मातमसरा हो गया उस वजीर के एक बेटी थी बर्स पन्द्रह चौदह की निहायत खूबसूरत और काबिलन विस्तरख्वांद में दुरुस्त वजीर उसको बहुत प्यार करता और अजीज रखता था चुनांचे अपने दीवान खाने के पिछाड़ी एक रङ्ग महल उसकी खातिर बनवा दिया और लड़कियाँ उम्दों की उसकी मुसाहब में और खवास शकोल खिदमत में रहती थी उनसे हँसी खुशी

खेला करती थीं इत्तिफाकन जिस दिन वजीर को महबूस खाने में भेजा वह लड़की अपनी सहेलियों में बैठी थी और खुशी से गुड़िया का व्याह रचाया था और ढोलक पखावज लिये हुए रतजगे की तैयारी कररही थी और कढ़ाई चढ़ा कर गुलगुले और रह-सतलती बना रही थी एक बारगी उसकी माँ रोती पीटती सिर खुले पांव नंगे बेटी के घरमें गई और दोहथड़ा उस लड़की के सिर पर मारा और कहने लगी काश के तेरे बदले खुदा अन्धा बेटा देता तो मेरा कलेजा ठंढा होता वजीरजादी ने पूछा अन्धा बेटा तुम्हारे किस काम आता जो कुछ बेटा करता मैं भी कर सक्ती हूं अम्मा ने कहा खाक तेरे सिरपर बाप पर यह विपता बीती कि बादशाह के रूबरू कुछ ऐसी बात कही कि बन्दीखाने में कैद हुआ उसने पूछा वह क्या बात थी जरा मैं भी सुनूं तब उसकी मां ने कहा तेरे बापने शायद यह कहा है कि नेशापुरमें कोई सौदागर है उसने बारह अदद लाल बेबहा कुत्तेके पट्टेमें टांके हैं बाद-

शाह को बावर न हुआ उसने झूठा समझा और असीर किया आज के दिन बेटा होता हर तरहसे कोशिश कर इस बातको तहक़ीक़ करता और अपने बापका उपाय करता और बादशाहसे अर्ज मारूज करके मेरे खाविन्दको बन्दी खाने मे मुख-लिसी दिलवाता वजीर जादी बोली अम्मा जान तकदीर से लड़ा नहीं जाता चाहिये इन्सान को बलानागहानी में सब्र करे और उम्मेदवार फजल इलाही का रहे वह करीम है मुशकिल किसी की अटकी नहीं रखता और रोना धोना खुबनहीं मुबादा दुशमन और तरह बादशाह के पास लगावें और और लुतरे चुगली खावें कि बाइस ज्यादा खफगी का है बल्कि जहांपनाहके हकमें दुआ करा हम उसके खानेजाद हैं वह हमारा खाविन्द है वही गजब हुआ है वही मेहरबान होगा उस लड़कीने अलकमन्दीसे ऐसी २ तरह मा को समझाया कि कुछ उसको सब्र व करार आया तब अपने महल में गई और चुपकी हो रही जब रात हुई वजीर जादी ने दादा

को बुलाया उसके हाथ पाँव पड़ी बहुत सी मिन्न
तकों और रोने लगी और कहा मैं वह इरादा
रखती हूं कि अम्माजान का ताना मुझ पर न रहे
और मेरा बाप मुखलिसी पाये जो तू मेरा रफीक
हो तो नेशापुरको चलूं और उस ताजरको जिस
के कुत्ते के गले में लाल है देखकर जो बन आये तो
उसको लेकर आऊँ और अपने बाप को छुड़ाऊँ पहले
तो उस मर्दने इनकार किया आखिर बहुत कहने
सुनने से राजी हुआ तब वजीरजादीने फरमाया चुप
के चुपके असबाब सफर का दुरुस्त करो जिन्स तिजारत
के लायक नजर बादशाहों के खरीदकर और गुलाम
नौकर चाकर जितने जरूरहों साथले लेकिन यह बात
किसी पर न खुले दादाने कबूल किया और उसकी
तैयारी में लगा जब सब असबाब मुहैय्या किया
ऊँटों और खच्चरों पर लाद कर रवाने हुआ और
वजीरजादी भी लिबास मरदाना पहन कर साथ
जा मिली,हरगिज किसी को घरमें खबर न हुई जब
सुबह हुई वजीर के घर चरचा हुआ कि वजीरजादी

गायब है मालूम नहीं क्या हुई आखिर बदनामी के डर से मांने बेटी का गुम होना छुपाया वही वजीरजादी ने अपना नाम सौदागर बच्चा रक्खा मंजिल बमंजिल चलते २ नेशापुर में पहुंची कारवां सरायमें जा उतरी और सब अपना असबाब उतारा और रात को रही फजर को हम्माम करके और पोशाक पाकीजः जैसे रूम के बाशिन्दः पहनते हैं पहनी और शहर को सैर के वास्ते निकली जब आते १ चौक में पहुँची चौराहे पर खड़ी हुई एक तरफ दूकान जौहरी की बहुत से जवाहिर का ढेर पड़ा है और गुलाम लिबास फाखरा पहने दस्त बदस्त खड़े हैं और एक शख्स जो सरदार है बरस पचास एक की उसकी उम्र है तालअमन्दों कीसी खिलअत और नसीम आस्तीन पहने हुए और कई मुसाहब बावजअ नजदीक उसके कुरसियों पर बैठे हैं और आपस में बातें कर रहे हैं वह वजीरजादी जिसने अपने तईं सौदागर बच्चा मशहूर किया था उसे देखकर मुत अज्जिब हुई और दिल

में समझ कर खुश हुई कि खुदा झूठ न करे जिस सौदागर का मेरे वापने बादशाह से मजकूर किया है अगलब है कि यही हो वारे खुदाया इसका अहिवाल मुझ पर जाहिर कर इत्तिफाकन एक तरफ जो देखा तो एक दूकान है दो पिंजरे आहिनी लटकते हैं और उन दोनों में दो आदमी कैद हैं उनको मजून किसी सूरत हो रही है चरम उस्तख्वान बाकी है और सिर के बाल और नाखुन बढ़ गये हैं सिर औंधाये बैठे हैं और दो हबसी बद हैबत मुसले दोनों तरफ खड़े हैं सौदागर बच्ची को अचम्भा आया लाहौर पढ़ कर दूसरी तरफ जो देखा तो एक दूकान में कालीने बिछे हैं उन पर एक चौकी हाथी दांत की उस पर गदेला मखमल का पड़ा हुआ है एक कुत्ता जवाहर पट्टा गले में और सोने की जंजीर में बंधा हुआ बैठा है और दो गुलाम मर्द खूबसूरत उसकी खिदमत करते हैं एक तो मोरछल जड़ाऊ दस्त का लिये झलता है और दूसरा तारकशी का रूमाल हाथ में ले मुँह

और पाँव उसका पीछ रहा है सौदागर बच्चे ने खूब गौर कर देखा तो पट्टे में कुत्ते के बाहरों दाने लाल के जैसे सुने थे मौजूद हैं शुक्र खुदा का किया और फिक्र में गया कि किस सूरत से इन लालों को बादशाह के पास ले जाउँ और दिखा कर अपने बाप को छुड़ाऊ यह तो हैरानी में था और तमाम खलकत चौक और रास्ते की उसकी हुस्न जमाल देख कर हैरान थी और हक्का बक्का हो रही थी सब आदमी आपस में यह चर-चा करते थे कि आज तक इस सूरत शबीह का नजर नहीं आया उस ख्वाजे ने भी देखा एक खादिम को भेजा कि तू जाकर इस सौदागर बच्चे को मेरे पास बुलाला वह गुलाम आया और ख्वाजे का पैगाम लाया कि मेहरबानी फरमाइये तो हमारा खुदावन्द साहब का मुश्ताक है चल कर मुलाकात कीजिये सौदागर बच्चा तो यह चाहता ही था बोला क्या मुजायका ज्योंही ख्वाजे के नजदीक आया उस पर ख्वाजः को निगाह पड़ी एक बरछी

इश्क की सोने से मर्दी ताजीम को खातिर सरव कद उठा लेकिन हवास फाख्तां सौदागर बच्चा ने दरियाफ्त किया कि अब यह दाम में आया आपस में बगल गीर हुए ख्वाजे ने सौदागर बच्चे की पेशानी को बोसा दिया और अपने पास बराबर बैठा लिया बहुत सा खुशामद करके पूछा कि अपने नामें नसब से मुझे अगाह करो कहां से आना हुआ कहां का इरादा है सौदागर बच्चा बोला कि इस कमतरीन का वतन रूम है और कदीम से अस्तं बोल जादबूम है मेरे किबल गाहो सौदागर हैं अब बसबब पीरी के ताकत सैर व सफर को नहीं रही इस वास्ते मुझे रुखसत किया है कि कार व बार तिजारत का सीखूं आज तक मैंने कदम घरसे न निकला था यह पहलाही सफर दरपेश है दरियाकी राह से हवास न पड़ा खुश की राह से कस्द किया लेकिन इस्म आजम के मुल्क में आपके इखलाक और खूबियों का जो शोर है महज साहब की मुलाकात की आरजू में यहां तक आया हूं

बारे फज़ल इलाही से खिदमत शरीफ में मुशर्रफ़ हुआ और उससे ज्यादा पाया तमन्ना दिल की बर आई खुदा सलामत रक्खे अब यहां से कूंच करूंगा यह सुनतेही ख्वाजे की अकल होश जाते रहे बोला ऐ फरजन्द ऐसी बात मुझे न सुनाओ कोई दिन गरीब खाने में करम फरमाओ भला यह तो बतलाओ तुम्हारा असबाब और नौकर चाकर कहाँ हैं, सौदागर बच्चे ने फरमाया कि मुसाफिर का घर सरां है उन्हें मैं वहां छोड़कर आपके पास आया हूं ख्वाजे ने कहा भटियार खाने में रहना मुनासिब नहीं मेरा इस शहर में एतबार है और बड़ा नाम है जल्द बुलाओ मैं एक मकान तुम्हारे असबास के लिये खाली कर देता हूँ कुछ जिस लाये हो ? मैं देखूं ऐसी तदबीर करूं-गा कि यहीं तुम्हें बहुत सा नफा मिलेगा तुम भी खुश होगे और सफर के हर्ज मर्ज से बचोगे और मुझे भी चन्दरोज रहने से अहिसान मन्द करोगे सौदागर बच्चे ने ऊपरी दिल से अरज किया

लेकिन ख्वाजे ने पिजीरान किया और अपने गुमाश्ते को फ़रमाया कि कुछ भारबरदार जल्द भेजो और कारवां सराय से इनका असबाब मँगवा-कर फलाने मकान में रखवाओ सौदागर बच्चे ने एक जंगी गुलाम को उन के साथ कर दिया कि सब माल व मताअ लदवाकर ले आओ और आप शाम तक ख्वाजे के साथ बैठा रहा जब गुदड़ी का वक्त हो चुका और दुकान बढ़ाई ख्वाजा अपने घर को चला तब दोनों गुलामों में से एक ने कुत्ते को बगल में दूसरे ने कुरसी और गालीचा उठा लिया उन दोनों हबशी गुलामों ने उन पिंजरोंको मजदूरों के सिर पर धर दिया और आप पांचों हथियार बांधे साथ हो लिये ख्वाजा सौदागर बच्चे का हाथ लिये बातें करता हुआ हवेली में आया सौदागर बच्चे ने देखा कि मकान अलीशान लायक बादशाहों अमीरों के है लबे नहर फ़र्श चांदनी का बिछा है और मसनद के रूबरू अस-बाब ऐश का चुना है कुत्ते की संदली भी उसी

जगह बिछाई गई और ख्वाजा सौदागर बच्चे को लेकर बैठा तकल्लुफ़ नवाजे शराब की को दोनों पीने लगे जब सरो जोश हुए तब ख्वाजे ने खाना माँगा दस्तर ख्वान बिछा दुनियाँ की न्यामतें चुनी गईं पहले एक लगन में खाना लेकर सरपोश तिलाई ढाँप कर कुत्ते के वास्ते ले गये और एक दस्तर खान ज़रवफ्त का विछा कर उसके आगे धर दिया कुत्ते ने संदली से उतर जितना चाहा उतना खालिया और सोने की लगन में पानी पिया फिर चौकी पर जा बैठा गुलामों ने हाथ मुँह उसका पाक किया फिर तबाक और लगन को गुलाम पिंजरों के नजदीक ले गये और ख्वाजे से कुञ्जियां मांग कर कुल्फ कफशों के खोले और उन दोनों इन्सानों को बाहर निकाल कर कई सोंटे मार कर कुत्ते का जूठा उन्हें खिलाया और वही पानी पिलाया फिर ताले बन्द कर तालियां ख्वाजे के हवाले कीं जब यह सब हो चुका तब ख्वाजे ने खाना शुरू किया सौदागर बच्चे को यह हरकत पसन्द

न आई घिन खाकर खाने में हाथ न डाला हरचन्द ख्वाजे ने मिन्नत की उसने इन्कार ही किया तब ख्वाजे ने सबब उसका पूछा कि तुम क्यों नहीं खाते सौदागर बच्चे ने कहा यह हरकत तुम्हारी अपने तईं बदनुमा मालूम हुई इसलिये कि इंसान मशरफ उल मखलूकात है और कुत्ता निजसुल ऐन है पस खुदा के दो बन्दों को कुत्ते का जूठा खाना किस मजहब में दुरुस्त है फक्त यह गनी-मत नहीं जानते कि वो तुम्हारे कैद में हैं नहीं तो तुम और वह बराबर हो अब मेरे तईं शक आये कि तुम मुसलमान क्या जाने कौन हो कि कुत्ते को पूजते हो मुझे तुम्हारा खाना मुकरूह है जब तलक यह शुभा दिलसे दूर न हो ख्वाजे कहा ऐ बाबा जो कुछ तू कहता है मैं सब समझता हूँ और इसी खातिर बदनाम हूं कि इस शहर की खल-कतने मेरा नाम ख्वाजाः सग परस्त रक्खा है इसी तरह पुकारते हैं और मशहूर किया है लेकिन खुदा की लानत काफिरों मशरकों पर है ज्यों

कलमा पढ़ा सौदागर बच्चे की खातिर जमा की तब सौदागर बच्चे ने पूछा अगर मुसलमान हो तो इसका क्या बाइस है कि ऐसी हरकत करके अपने तईं बदनाम किया है ख्वाजे ने कहा ऐ फरजन्द नाम मेरा बदनाम है और दुगुना महसूल इस शहर में भरता हूँ इस वास्ते किसी पर यह भेद जाहिर न हो अजब यह माजरा है कि जो कोई सुने सिवाय गम और गुस्से के उसे कुछ और हासिल न हो तू भी मुझे माफ रख कि न मुझ में कुदरत कहने की और न तुझमें ताक़त सुनने की रहेगी सौदागर बच्चे ने अपने दिल में गौर किया कि मुझे अपने काम से काम है क्या जरूर है जो नाहक ज्यादह मुजब्बिज हूं बोला खैर अगर लायक कहने के नहीं तो न कहिये खाने में हाथ डाला और निवाला उठाकर खाने लगा दो महीने तक इस होशियारी और अकल मंदी से सौदागर बच्चे ने ख्वाजे के साथ गुज़रान की कि किसी पर हरगिज़ न खुला कि यह औरत है सब यह

जानते थे कि मर्द है और ख्वाजे से रोज़ बरोज़ ऐसी मुहब्बत ज्यादह हुई कि एक दम अपनी आँखों से जुदा न करता एक दिन ऐन में नोसे की सुहबत में सौदागर बच्चेने रोना शुरू किया ख्वाजे ने देखतेही खातिरदारी की और रूमाल से आंसू पोछने लगा और सबब गिरिये का पूछा सौदागर बच्चेने कहा कि ऐ किब्ले क्या कहूं काशके तुम्हारी खिदमत में बंदगी न पैदा की होती और यह शफक्कत जो साहब मेरे हक में करते हैं न करते अब दो मुशकिलें मेरे तईं पेश आई हैं न तुम्हारी खिदमत से जुदा होने को जी चाहता है न रहने का यहाँ इत्तिफाक हो सक्ता है अब जाना जरूर हुआ लेकिन आपकी जुदाई में उम्मेद जिन्दगी की नजर नहीं आती यह सुनकर ख्वाजे बेअखत्यार रोने लगा कि हुचकी बंध गई और कहने लगा कि ऐ नूर चश्म ऐसी जल्दी अपने बूढ़े खादिम से सैर हुए कि इसे दिलगीर किये जाते हो कस्द रवाने होने का दिलसे दूर करो जबतक मेरी जिन्दगी है रहो तुम्हारी जुदाई से एक

दम मैं जीता न रहूंगा। बगैर अजल के मर जाऊंगा और इस मुल्क फारसकी आब व हवा बहुत खूब और मुआफिक है बेहतर यह है कि एक आदमी मौतबिर भेजकर अपने वालदैनको मय असबाब यहीं बुलवावो जो कुछ सवारी भारबरदारी दरकार हो मौजूद कर देता हूं जब मा बाप तुम्हारे और घरबार आयें अपनी खुशी से कारबार तिजारत का किया करो मैंने इस उम्रमें जमानेकी बहुत सख्तियां खींची हैं और मुल्क २ फिरा हूं अब बुड्ढा हुआ हूं फरजंद नहीं रखताहूं तुझे बेहतर अपने बेटेसे जानता हूं और अपनी वली अहद व मुखतार करता हूं मेरे कारखानों से भी होशियार और खबरदार रहो जब तक जीता हूं एक टुकड़ा खानेको अपने हाथ से दो जब मर जाऊंगा गाड़ दाब दीजियो और सब मता मेरी लीजियो तब सौदागर बच्चेने जवाब दिया कि वाकई साहब ने बापसे ज्यादह गमख्वारी और खातिरदारी की कि मुझे मा बाप भूल गये लेकिन इस आसीके वालिद ने एक साल की रुखसत दी

थी अगर देर लगाऊँगा तो वह इसी पीरी में रोते२ मर जायँगे पस रजामंदी पिदर की व खुशनूदी खुदा की है अगर मुझसे नाराज होंगे तो मैं डरता हूं कि शायद दुआएँ बद करें कि दोनों जहानमें खुदाकी रहमतसे महरूम रहूं अब आपकी शफक्कत है कि बन्दे को हुक्म कीजिये कि फरमाना किबला गाह का बजालाये और हक पिदरी से अदा होवे और साहब की तवज्जे का अदाय शुक्र जब तलक दम में दम है मेरी गर्दन पर है अगर अपने मुल्क में जाऊँगा तो हरदम दिलोजान से याद किया करूँगा खुदा मुसब्बुल सबाब है शायद फिर कोई ऐसा सबबहो कि कदम बोसी हासिल करूँगा गरज सौदागर बच्चे ने ऐसी २ बातें नोन मिरच लगाकर ख्वाजे को सुनाई कि वह लाचार होकर होंठ चाटने लगा अजबस कि उसपर शेफ़ता और फ़रेफ़ता हो रहा था कहने लगा अच्छा अगर तुम नहीं रहते हो तो मैं ही तुम्हारे साथ चलता हूँ मैं तुझको अपनी जानके बराबर जानता हूं पस जब

जान चली जाय तो खाली बदन किस काम आये
अगर तू इस हाल में रजामंद है ते चल और मुझे
भी लेचल सौदागर बच्चे से यह कहकर अपनी तैयारी
सफरकी करने लगा और गुमाश्तों को हुक्म
किया कि भारबरदारी की फिक्र जल्दी करो
जब ख्वाजे के चलने की खबर मशहूर हुई वहांके
सौदागरों ने यह बातसुनकर इरादा सफर का किया
ख्वाजे सगपरस्तने गंज और जवाहर बेशुमार नौकर
और गुलाम अनगिनत तुहफे और असबाब शाहाने
बहुतसासाथलेकर शहरके बाहर तम्बू और कनात और
बिछौने और सरापर्दे और कदले खड़े करवा दिये
उनमें दाखिल हुआ जितने तिजार थे अपनी २
बिसात के मुवाफिक माल सौदागरी लेकर हमराह
हुएबराय खुदा एकलश्कर होगया एक दिन जोगिना
को पीठ देकर वहां से ख्वाजेने कूच किया हजारों
उटों पर शतीजे और असबाब के और खच्चरों पर
संदूक नकद जवाहर के लादकर पांच सौ गुलाम
दस्त कब चाक और जंगम रूम मुसल्ले साइम

लश्कर शमशीर ताजो व तुरकी व ऐराकीव अरबी घोड़ों पर चढ़ कर चले सबके पीछे ख्वाजः और सौदागर बच्चा खिलत फाखरा पहने सुख पाल पर सवार एक तख्त दुगदोदी ऊंट पर कसा उस पर कुत्ता मसनद पर सोता हुआ और उन दोनों कैदि-यों के कफश एक शतर पर लटकाये हुए रवाना हुए जिस मंजिल में पहुँचे सब सौदागर ख्वाजे की बारगाहमें आकर हाजिर होते और दस्तरख्वान पर खाना खाते और शराब पीते ख्वाजा सौदागर बच्चे के साथ होने में शुक्र खुदा का करता और कूच दर कूच चला जाता था बारे खैरो आफियत कुस्तुनतुनियां के नजदीक आ पहुँचा बाहर शहर के मुकाम किया सौदागर बच्चेने कहा ऐ किबलः अगर रुखसत दीजिये तो मैं जाकर मां बाप को देखुं और मकान साहबके वास्ते खाली करूं जब मिजाज सामों में आये शहर में दाखिल हूजिये ख्वाजेने कहा तुम्हारी खातिर में यहां आया अच्छा जल्द जाकर मेरे पास आओ और अपने नजदीक

मेरे उतरने का मकान दो सौदागर बच्चा रुखसत होकर अपने घर में आया सब वजीर के महल्ल के आदमी हैरान हुए कि यह मरदुआ कौन घरमें घुस आया सौदागर बच्चा याने बेटी वजीर की अपने माके पांवपर जा गिरी और बोलीकि तुम्हारी जाई हूं सुनतेही वजीरकी बेगम गालियांदेने लगी कि ऐनतरीतू बड़ीशैतानहो निकलो अपना मुंहतूने काला किया खानदान को रुसवा कि हमतो तेरी जानको रोपीटकर सबर कर चुकेथे तुमसे हाथ धो बैठे थे जादफाही तब वजीरजादी ने सिरपर से पगडी उतार कर फेंकदी और बोली ऐ अम्माजान बुरी जगह न गई कुछ नहीं किया मगर बमूजिब तुम्हारे फरमाने के बाबा को कदसे छुडाने की खातिर सब यह फिक्र की अलहम्दुलिल्लाह कि तुम्हारी दुआ कि बरकत से और अल्लाह के फजल से पूरा काम कारके आईहूं कि नेशापुर से सौदागर को मय कुत्ते के जिसके गले में बेलाल पड़े हैं अपने साथ लाई हूं और तुम्हारी अमानत में खयानत नहीं की

सफ़र के लिये मर्दाना भेस किया है अब एक रोज का काम बाकी है वह करके किब्ल:गाह को बन्दी खाने से छुड़ाती हूं अगर हुक्म हो तो फिर जाऊँ और एक रोज बाहर रहकर खिदमत में आऊँ माने जबखूब मालूम किया कि मेरी बेटी ने मरदों का काम किया और अपने तईं सब तरह सलामत व महफूज रक्खा है खुदाकी दरगाह में तब शुक्र की और खुश होकर बेटी को छाती से लगा लिया और मुँह चूमा बलायें ली दुआयें दी और रुखसत किया कि तू जा मुनासिब जाने सोकर मेरी खातर जमा हुई वजीरजादी फिर सौदागर बच्चा बनकर ख्वाजे सगपरस्त के पास चली वहां ख्वाजे को जुदाई उसकी अजबस कि करकल्क हुई थी बेअ-ख्त्यार होकर कूच किया इत्तिफाकन नजदीक शहर के उधर से सौदागर बच्चा जाता था इधरसे ख्वाजा आता था ऐनराह में मुलाकात हुई ख्वाजे ने देखतेही कहा मुझ बुड्ढे को अकेला छोड़कर कहां गया था सौदागर बच्चा बोला आप से इजा-

जत लेकर अपने घर गया था आखिर के मुलाजिमत
के इश्तयाक ने वहां रहने न दिया आकर हाजिर
हुआ शहर दरवाजे पर दरियाके किनारे एक बाग
सायादार देखकर खीमा इस्ताद किया और वहां
उतरे ख्वाजा और सौदागर बच्चा बाहम बैठकर
शराब व कबाब पीने और खाने लगे जब अस्र
का वक्त हुआ व तमाशे की खातिर खेमे से
निकल संदलियों पर बैठे इत्तिफाकन एक कराबल
बादशाही उधर आ निकला उनका लश्कर और
नशिस्त बरखास्त देखकर अचंभे में हो रहा और
दिलमें कहा शायद एलची किसी बादशाह का
आया है खड़ा तमाशा देखता था कि ख्वाजे के
शातर ने उसको बुलाया और पूछाकि तू कौन है
उसने कहाकि मैं बादशाह कामीर शिकार हूं ख्वाजे
से उसका अहिवाल कहा ख्वाजे ने एक गुलामको
फरी को कहा कि बाजदार से कह हम मुसाफिर हैं
अगर जी चाहे तो आओ बैठो कहवः कलियान
हाजिर है जबमीर शिकार ने नाम सौदागर

का सुना ज्याद: मुतज्जिब हुआ गुलाम साथ ख्वाजे की मजलिस में आया लवाजिम और शानव शौकत और स्याह गुलाम देखे ख्वाजा और सौदागर बच्चा को सलाम किया और मर्तब:सग का देखकर उसके होश जाते रहे हक्का बक्का सा होगया ख्वाजे ने उसे बिठला कर कहवेकी ज्याफ़त की कराबल ने नाम व निशान ख्वाजे का पूछा जब रुखसत मांगी ख्वाजे ने कई थान और तुहफे के देकर उसे इजाजत दी सुबह को जब बादशाह के दरबार में हाजिर हुआ दरबारियों से ख्वाजे और सौदागर बच्चे का जिक्र करने लगा रफ्ते २ मुझको खबर हुई मीर शिकार को मैं ने रूबरू तलब किया और सौदागर का अहिवाल पूछा जो देखा था अर्ज किया सुनने से गुस्से तज्जम्मुल के और आदमियों के पिजरे में कैद होने की मुझको खफगी आई और मैं ने फरमाया जल्द जाओ उस बेदीन का सिर काट लाओ कज़ाकार वही एलची फरंग का दरबार में हाजिर था मुसकराया मुझे और भी

ग़ज़ब ज्यादह हुआ फरमाया कि ऐ बे अदब बादशाहों के हज़ूर में बे सबब दांत खोलने अदब से बाहर है व बे अदब हँसी से रोना बेहतर उसने इल्तमास किया जहां पनाह कई बातें ख्याल में गुजरी लिहाजा फिदवी मुतवस्सिम हुआ पहले यह कि वजीर सच्चा है अब कैद खाने से रिहाई पावेगा दूसरे यह कि बादशाह खून नाहक से उस वजीर बचे तीसरे यह कि किब्लः आलम ने बे सबब और बे तक्सीर उस सौदागर को हुक्म कत्ल का किया इन हरकतों को तअज्जुब आया कि बे तहकीक एक बेवकूफ के कहने से आप हर किसी को हुक्म कत्ल का कर बैठते हैं खुदा जाने फिल हकीकत उस ख्वाजे का अहवाल क्या है उसे हजूर में तलब कीजिये और उसको दाद पूछिये अगर तकसीर वार ठहरे तब अखतियार है जो मरज़ी में आये उससे सलूक कीजिये जब एलची ने इस तरह समझाया मुझे भी वज़ीर का कहना याद आया फरमाया जल्द सौदागर को उसके हमरा हियान

के वह सग और कफ़श हाजिर करो कोरची उसके बुलाने को दौड़े वह एक दम सब को हुजूर में ले आये मैंने रोबरू तलब किया। पहले ख्वाजा और उसका पिसर आया दोनों लिबास फ़ाखरा पहने हुए थे सौदागर बच्चे का जमाल देखने से सब आला आदना हैरान और भौंचक हुए एक ख्वान तिलाई जवाहर से भरा हुआ कि हर एक रकमका रोशनी सारे मकान को रोशन कर दिया सौदागर बच्चा हाथ में लिये आया और मेरे तख्त के आगे निछावर किया अदाब कोरनिशात बजा लाकर खड़ा हुआ ख्वाजे ने भी जमीन चूमी और दुआ करने लगा गोया इसे बोलता था गोया बुल बुल हजार दास्तान है मैंने उसकी ल्याकत को बहुत पसंद किया लेकिन अताब कीरूसे कहा ऐ शैतान आदमी की सूरत तूने यह क्या जाल फैलाया है और अपनी राह में कुँआ खोदा है तेरा क्या दीन है और यह कौन आई है तू किस पगम्बर की उम्मत में है अगर काफिर है तो भी यह कैसी गत है

और तेरा क्या नाम है उसने कहा किब्लः आलम का उमर दौलत बढ़ती रहे गुलाम का दीन यह है कि खुदा वाहिद है उसका कोई शरीक नहीं महम्मद मुस्तफा सल्ले अल्लाह अलेह वसलम का कलमा पढ़ता हूं और वादहजरत चार यार बारह इमाम को पेशवा जानता हूं और आईन मेरा यह है कि पांचो वक्त की नमाज़ पढ़ता हूँ और रोजा भी रखता हूँ हज्ज भी कर आया हूँ और अपने माल से खम्मज कात देता हूँ और मुसल्मानों को खाना खिलाताहूँ लेकिन जाहिर में यह सारे ऐब जो मुझमें भरे हैं जिनके सबब से आप नाखुश हुए हैं और खल्कुल्लाह में बदनाम हो रहा हूँ उसका एक बाइस है कि जाहिर नहीं कर सक्ता हूँ हरचन्द सगपरस्त मशहूर हूँ और मजा अफ महशूल देता हूँ यह सब कबूल किया है पर दिलका भेद किसी से नहीं कहता ख्वाजे के इस बहाने से मेरा गुस्सा ज्यादह हुआ और कहा तू मुझे बातों में फुसलाता है मैं नहीं मानने का जबतक गुमराई की दलील

की दलील माकूल अर्ज़ न करेगा कि मरे दिल नशीं हो तब तू जान से बचेगा नहीं तो उसके कसी-समें तेरा पेट चाक करूँगा तो सबको इब्रत हो कि बार दीगर कोई दीन मुहम्दीमें रखना न करे ख्वाजे ने कहा ऐ बादशाह मुझ कम्बख्त के खून से दर गुजर कर और जितना माल मेरा है कि गिन्ती और शुमार से बाहर है जब्तकर मुझे और मेरे बेटे को अपने तखत के तसद्दुक करके छोड़ दे और जां बख़शी कर। मैंने तबस्सुम कर कहा कहा ऐ बेवकूफ़ अपने मालकी तमअ मुझे दिखाता है सिवाय सच बोलने के अब तेरी मुखलिसी नहीं यह सुनतेही ख्वाजे की आंखों से आंसु टपकने लगे और अपने बेटेकी तरफ देखकर एक आह भरी और बोला मैं तो बादशाह के रूबरू गुनह-गार ठहरा मारा जाऊँगा अब क्या करूँ तुझे किस को सौंपू मैंने डाट कर कहा ऐ मक्कार बस अब उजर बहुत किये जो कहना है जल्द कह तब तो उस मर्द ने कदम बढ़ाकर तख्त के पास आकर

पाये को बोसा दिया और सिफत और सना करने लगा बोला ऐ शहनशाह अगर हुक्म कत्ल का मेरे हकमें न होता तो सब साइस्ता सहता और अपना माजरा न कहता लेकिन जान सबसे प्यारी है और कोई आप से कुँएमें नहीं गिरता एस जानकी महाफिजत वाजिब है और तर्क वाजिब खिलाफ हुक्म खुदा के है खैर जो मरजी मुबारिक यही है तो सरगुजश्त इस पीर जईफ की सुनो।

किस्सा ख्वाजे सगपरस्त का ।

पहले हुक्म हो कि दोनों कफस जिनमें दो आदमी कैद हैं हुजूर में लाकर रक्खे मैं अपना अहवाल कहता हूँ अगर कहीं झूठ कहूँ तो उनसे पूछ कर मुझे कायल कीजिये और इन्साफ फरमाइये मुझे उसकी बात पसन्द आई पिंजरों को मँगवाकर उन दोनों को निकलवा कर ख्वाजः के पास खड़ा किया ख्वाजे ने कहा ऐ बादशाह यह मर्द जो दाहिनी तरफ है गुलाम का बड़ा भाई है जो

बांए को खड़ा है मझला बिरादर है मैं इन दोनों से छोटा हूँ मेरा बाप मुल्क इल तिजार फारस में सौदागर था मैं जब चौदह वर्ष का हुआ किब्लः गाहने रहलत की जब तजहीन तफकीन से फरा-गत हुई और फूल उठा चुके एक रोज इन दोनों भाइयों ने मुझे कहा अब बापका माल जो कुछ है तकसीम करलें जिसका दिल चाहे सो काम करे मैंने सुनकर कहा ऐ भाइयों यह बात है मैं तुम्हारा गुलाम हूं भाई चारे का दावा नहीं रखता एक बाप मर गया तुम दोनों मेरे पिदर की जगह सिर पर कायम हो सिर्फ नान खुश्क चाहता जिसमें जिन्दगी बसर करूँ और तुम्हारी खिदमत में हाजिर रहूं मुझे हिस्से बखरे से क्या काम है तुम्हारे आगे के जूठे से अपना पेट भर लूंगा और तुम्हारे पास रहूंगा मैं लड़का हूं कुछ पढ़ा लिखा नहीं मुझ से क्या हो सकेगा अभी तुम मुझे तरबियत करो यह सुनकर जवाब दिया कि तू चाहता है कि अपने साथ हमें भी खराब और मुहताज करे मैं

चुपका एक गोशे में जाकर रोने लगा फिर दिल को समझाया कि भाई आखिर बुज़ुर्ग हैं कि मेरी तालीम की खातिर चश्मनुमाई करते हैं कि कुछ सीखे इस फिक्र में सो गया सुबह को एक प्यादा काजी का आया और मुझे दारुल सरा में लेगया वहां देखता तो दोनों हाजिर हैं काजो ने कहा अपने बाप का विरसा क्यों बांट चूट नहीं लेता मैंने घरमें जो कहा था वहां भी जवाब दिया भाइयों ने कहा अगर यह बात अपने दिल से कहता है तो हमें लादावा लिखदे कि बाप के माल से और असबाब से मुझे कुछ इलाका नहीं तब भी मैं यही समझा कि यह दोनों मेरे बुज़ुर्ग हैं मेरी नसीहत के वास्ते कहते हैं कि बाप का माल लेकर बेजा खर्च करे बमूजिब इनकी मरजी के फ़ारखती व मुहर काजी को लिख दी यह राजी हुए मैं घरमें आया दूसरे दिन मुझसे कहने लगे ऐ भाई यह मकान जिसमें तू रहता है हमें दरकार है तू बूदोबाश की खातिर और जगह लेकर जा रहतब मैंने दरियाफ्त

किया कि यह बाप की हवेली में भी रहने से खुश नहीं लाचार इरादा उठ जाने का किया जहा पनाह जब मेरा बाप जीता था तो जिस वक्त सफर से जाता हर एक मुल्कका तुहफा व तरीज सौ-गात के लाता और मुझे देता इस वास्ते छोटे बेटेहरकोई ज्यादा प्यार करता है मैंने उनको बेच बाच कर थोड़ीसो पूंजी अपने जिनकी वहम पहुं-चाई थी उसीसे खरीद फरोख्त करता एकबार लौंडी मेरी खातिर तुर्किस्तान से मेरा बाप लाया और एक दफे घोड़ी लेकर आया उनमें एक बछेड़ा ना-कन्द जो कि होनहार था वह भी मुझे दिया मैं अपने पाससे दाना घास करता था आखिर उनकी बेमुरौवती देखकर बेंचकर एकहवेली खरीदको वहां जा रहा यह कुत्ता भो मेरे साथ चला आया वास्ते जरूरियात के असबाब खानःदारी का जमा किया और दो गुलाम खिदमत के खातिर मोल लिये और बाकी पूजी से एक दूकान बजाज की करके बत वक्कुलपर बैठा अपनी किस्मत पर राजी था अग-

रचः भाइयोंने बेदखलकी पर खुदाजो मेहरबान हुआ तीन वर्स के अर्से में ऐसी दूकान जमी कि मैं सोहब एतबार हुआ सब सरकारों को जो तोहफा जरूर होता मेरी ही दूकान से जाता उसपर बहुत से रुपये कमाये और निहायत फरागत से गुजरने लगो हरदम जनाबवारी में शुकराना करता और आराम से रहता और यह कवित्त अक्सर अपने अहवाल पर पढ़ता ॥

क०—रूठे क्यों न राजाबातकछु नाहिंकाजा एकतूही महाराजा और कौन को सराहिये। रूठेक्यों न भाई बातें कछुना बसाई एक तूही है सहाई और कौनपास जाइये ॥ रूठेक्यों न मित्र शत्रु आठो जाम एक मुरावरे चरण के नेहको निवाहिये। संसार रूठा एक तूहै अनूठा सब चूमेंगे अगूठा एक तू न रूठा चाहिये ॥ १ ॥

इत्तिफाकन जुम्मेके रोज़ मैं अपने घर बैठा था कि एक गुलाम मेरा सौदा सुलफको गया था बाद एकदम के रोता हुआ आया मैंने सबब पूछा कि तुझे क्या हुआ खफा होकर बोला कि तुम्हें क्या काम है तुम खुशी मनाओ लेकिन क़यामतमें क्या जवाब दोगे मैंने कहा ऐ हबशी ऐसी क्या बला

तुझपर नाज़िल हुई उसने कहा यह ग़जब है कि तुम्हारे बड़े भाइयोंकी मुश्कें चोकके चौराहे में एक यहूदी ने बांधी है और कमचियां मारता है और हँसता है अगर मेरे रुपये न दोगे तो मारते२मारही डालूंगा भला मुझे सवाब तो होगा पस तुम्हारे भाइयों की यह नौबत हुई और तुम बेफिक्र हो यह बात अच्छी नहीं है लोग क्या कहेंगे यह बात गुलाम से सुनते ही लोहू ने जोश किया नंगे पांव बाजार की तरफ दोड़ा और गुलामों को कहा जल्द रुपये लेकर आओ ज्योंही वहां गया देखातो जो कुछ गुलाम ने कहा था सच है इन पर मार पड़ रही है हाकिम के प्यादों को कहा वास्ते खुदा जरा ठहर जाओ मैं यहूदी से पूँछूँ कि इन्होंने ऐसा क्या तकसीर की है जिसके बदले यह सजा दी है यह कहकर मैं यहूदी के नजदीक गया और कहा आज दिन जुम्मे का है इनको क्यों मार रहा है उसने जवाब दिया अगर हिमायत करते हो तो पूरी करो इनके एवज रुपये हवाले करो नहीं तो

अपने घर की राह लो मैंने कहा कैसे रुपयेदस्ता-
वेज निकाल मैं रुपये गिन देता हूं उसने कहा
तमस्सुक देखले हाकिम को दे आया हूं मेरे
हजार रुपये चाहिये तू चलकर तमस्सुक देखले
इसमें मेरे दोनों गुलाम दो बिदरी रुपये लें
आये हजार रुपये मैंने यहूदो को दिये और
भाइयों को छुड़ाया इनको यह सूरत हो रहो थी
कि बदन से नंगे और भूखे प्यासे अपने हम राह
घर में लाया और वहो हम्माम में न्हलवाया नई
पोशाक पहनाई खाना खिलाया हरगिज इन से
यह न कहा कि इतना माल तुमने क्या किया
शायद शरमिन्दा होवें बादशाह ये दोनों मौजूद
हैं पूछिये कि सच कहता हूं या झूठी भी है खैर
जब कई दिन में मार कोफ़तसे बहाल हुए एक
रोज मैंने कहा ऐ भाइयों इस शहर में बे एतबार
होगए हो बेहतर यह है कि चन्दरोज सफर करो यह
सुन कर चुप हो रहे मैंने मालूम कि राजी हैं सफर
की तैयारी करने लगा पाल परतल बारबरदारी

और सवारी कि फिक्र करके २० हजार रुपये की जिन्स तिजारतकी खरीद की एक काफिला सौदागरों का बुखारे को जाता था उनके साथ करदिया बाद एक साल के वह कारवां फिर आया इनकी खैर खबर कुछ न पाई आखिर एक आशना से कसमें देकर पूछा उसने कहा जब बुखारे में गये एकने जुआ खाने में अपना तमाम माल हार दिया अब वहां की झाड़ु बरदारी करता है और फड़को लीपता पोतता है जुआरी जो जमा होते हैं उनकी खिदमत करता है. वह बतौर खैरात के कुछ दे देंहैं वहाँ शुहदा बना पड़ा रहता है और दूसरा बोजह फरोश की लड़की पर आशिक हो अपना सारा माल सर्फ किया अब वह बोजहखाने की टहल करता काफिले के आदमी इसलिये नहीं कहते हैं कि तु शरमिन्दा होगा यह अहवाल उस शख्स से सुनकर मेरी अजब हालत हुई मारे फिक्र के नींद भूख जाती रही जादराह लेकर कस्द बुखारे का किया जब वहाँ पहुँचा दोनों को ढूंढ ढांढ कर

अपने मकान में लाया गुसल करवा कर नई पोशाक पहिनाई और उनकी खिजालत के डर से एक बात मुँह पर न रक्खी फिर माल सौदागिरी का इनके वास्ते खरीदा और इरादा घर का किया जब नज-दीक नेशा पुर के आया एक गांव में मय माल व असवाब के इनको छोड़कर घर में गया इसलिये कि मेरे आने का किसी को खबर न हो बाद दो दिन के मशहूर हुआ कि मेरे भाई सफर से आये हैं कल उनके इस्तकबाल की खातिर जाऊँगा सुबह को चाहा कि चलूं एक गृहस्थ उसी मौजे का मेरे पास आया और फरियाद करने लगा मैं उसकी आवाज सुनकर बाहर निकला उसे रोता देखकर पूछा क्यों आहोजारी करता है वह बोला तुम्हारे भाइयों के सबब से हमारे घर लुट गये काश के उनको तुम यहाँन छोड़ते मैंने पूछा क्या मुसीबत गुजरी बोला कि रात को डांका आया उनका माल असबाब लूटा और हमारे घर भी लूट ले गये मैंने अफसोस किया और पूछा अब वे दोनों कहाँ हैं

शहर के बाहर नङ्गे भुनंगे खराब खस्ता बैठे हैं वोंही दो जोड़े साथ कपड़ों के लेकर गया पहना कर घर में लाया लोग सुनकर उनके देखने को आते थे यह हमारे शरमिन्दगी के बाहर न निकलते थे तीन महीने इसी तरह गुजरे तब मैंने अपने दिलमें गौर किया कि कब तलक यहां दुबके बैठे रहेंगे बने तो इन को अपने साथ सफर में लेजाऊँ भाइयों से कहा अगर फरमाइये तो यह फिदवी आपके साथ चले वह खामोश हो रहे फिर लवाजमा सफर और जिन्स सौदागिरी का तैयारी करके चला और उनको साथ लिया जिस वक्त माल को जगात देकर असबाब किस्ती पर चढ़ाया और लंगर उठाया नाव चला यह कुत्ता किनारे पर सो रहा था जब चौंका और जहाज मझधार में देखा हैरान होकर भौंका और दरिया में कूद पड़ा और तैरने लगा मैंने एक पनसोई दौड़ाया वारे सग को लेकर किस्ती में पहुंचाया एक महीना खैर आफियत से दरिया में गुजरा कहीं मंझला भाई मेरी लड़ौं पर

आशिक हुआ एक दिन बड़े भाई से कहने लगा कि छोटे भाई की मिन्नत उठाने से बड़ी शरमिंदगी हासिल हुई इसका तदारुक क्या करें बड़े ने जब व दिया एक सलाह दिल में ठहराई है अगर बन आवे तो बड़ी बात है आखिर दोनों ने मसलहत कर तजवीज की कि इसे मार डालें और सारे माल व असबाब पर काबिज व मुतसर्फ हों एक दिन मैं जहाज की कोठरी में सो रहा था और लौंडी पांव दाब रही थी कि मझला भाई आया और जल्दी से मुझे जगाया मैं हड़ बड़ा कर चौंका और बाहर निकला यह कुत्ता भी मेरे साथ हो लिया देखूं तो बड़ा भाई जहाज की पाड़ पर हाथ टेके हुए तमाशा दरिया का देख रहा था और मुझे पुकारता है मैंने पास जाकर कहा खैर तो है बोला अजब तरह का तमाशा हो रहा है कि दा-याई आदमी मोती की सीपियां और मूंगे के दरख्त हाथ में लिये हुये नाचते हैं अगर कोई ऐसी बातें खिलाफ़ कयास कहता तो मैं न मानता बड़े भाई

के कहने को रास्ता जाना देखने को सिर झुकाया। हरचन्द निगाह की कुछ नजर न आया और वह यही कहता रहा अब देखो लेकिन कुछ होतो देखूं इसमें मुझे गाफ़िल पाकर मझले ने अचानक पीछे से आकर ऐसा ढकेला कि बेइख्तियार पानी में गिर पड़ा वह रोने धोने लगे कि दौड़ियो हमारा भाई दरिया में डूबा इतने में नाव बढ़गई और दरिया की लहर मुझे कहीं से कहीं लेगई गोते पर गोते खाता था और मौजों में चला जाता था आखिर थक गया खुदा को याद करता था कुछ बस न चलता था एकबारगी किसी चीज पर हाथ पड़ा आँख खोल कर देखा तो यही कुत्ता है शायद जिस दम मुझे दरिया में डाला मेरे साथ यह भी कूदा और तैरता हुआ मेरे साथ लिपटा चला जाता था मैंने उसकी दुम पकड़ ली अल्लाह ने उसको मेरी जिंदगी का सबब किया सात दिन और सात रात यही सूरत गुजरी आठवें दिन किनारे जा लगे ताकत मुतलक न थी लेटे २ करवटें खाकर ज्यों

ज्यों अपने तईं खुश्की में डाला एक दिन बेहोश पड़ा रहा दूसरे दिन कुत्ते की आवाज कान में पड़ी होश में आया खुदा का शुक्र बजायाका,इधर उधर देखने लगा दूर से सवाद शहर का नजर आया लेकिन कुव्वत कहाँ कि इरादा करूँ लाचार दो कदम चलता फिर बैठता इसी हालत से शामतक कोस भर राह काटी बीच में एक पहाड़ मिला रात को वहां गिर रहा सुबह को शहर में दाखिल हुआ जब बाजार में गया नानबाई और हलवाई की दूकाने नजर आईं दिल तरसने लगा न पास पैसा जो खरीद करूँ न जी चाहे मुफ्त मागूँ कि इसी तरह अपने दिल को तसल्ली देता हुआ अगली दूकान से लूँगा चला जाता था आखिर ताकत न रही और पेट में आग लग गई नजदीक था रूह बदन से निकले नागाह दो जवानों को देखा कि लिबास अजम का और हाथ में कड़े पहने चले आते हैं उनको देखकर खुश हुआ कि यह अपने मुल्क के इन्सान हैं शायद आशनासूरत हों।इनसे

सारा अहवाल कहूँगा जब नजदीक आये तो मेरे
दोनों बिरादर हक़ीक़ी थे देखकर निपट शाद हुआ
शुक्र खुदाका किया कि खुदा ने आबरू रखली कि
गैरके आगे हाथ न पसारा नज़दीक जाकर सलाम
किया बड़े भाईका हाथ चूमा इन्होंने मुझे देखतेही
गुल मचाया मझले भाई ने तमाचा मारा कि मैं
लड़खड़ा कर गिर पड़ा बड़े भाई का दामन पकड़ा
शायद यह हिमायत करेगा इसने भी लात मारी
गरज दोनों ने मुझे खूब खुर्दखाम किया और हज-
रत यूसफ के भाइयोंका सा काम किया हरचन्द
मैंने खुदा के वास्ते दिये और घिघिआये हरगिज
रहम न खाये जब खलकृत इकट्ठी हुई सबने पूछा
इसका क्या गुनाह है तब भाइयों ने कहा यह हरा-
मज़ादा हमारे भाई का नौकर था उसको दरिया में
डाल दिया और माल व असबाब सब ले लिया
हम मुद्दत से तलाश में थे आज इस सूरत से नजर
आया और मुझसे पूछते थे कि ऐ जालिम यह
क्या तेरे दिल में आया कि हमारे भाई को मार

खपाया क्या उसने तकसीर की थी और तुझसे क्या बुरा सलूक किया था कि अपना मुख्तार बनाया फिर इन दोनोंमें गरेबांचाक कर डाले और बेअख्तियार झूठ मूठ भाई की खातिर रोते थे इसमें हाकिम के प्यादे ने आकर डाटा कि क्यों मारते हो और मेरा हाथ पकड कर कोतवाल के पास ले गये वे दोनों साथ चले और हाकिम से भी यही कहा और बतौर रिशवत के कुछ देकर अपना इन्साफ चाहा और खून नाहक का दावा किया हाकिम ने मुझसे पूछा मेरी यह हालत थी कि मारे भूख के और मारे मारपीट के ताकत गोयाई की न थी सिर नीचे किये था कुछ मुँह से जवाब न निकला हाकिम को भी यकीन हुआ कि यह मुकर्रर खूनी है फरमाया कि इसे मैदान में ले जाकर फाँसी दो जहाँपनाह मैंने रुपये देकर इनको यहूदी की कैद से छुड़ाया था उसके एवज इन्होंने रुपये खर्च कर मेरी जान का कस्द किया यह दोनों हाजिर हैं इनसे पूछिये कि मैं इसमें सरमुतफावत कहता हूं या सच

है खैर मुझे ले गये जल्लादको देखा हाथ जिन्दगी
से धोये सिवाय इस कुत्ते के कोई मेरा रोने वाला
न था इसकी यह हालत थी कि हरएक आदमी के
पाँव पर लोटता और चिल्लाता था कोई लकड़ी
कोई पत्थर से मारता लेकिन उस जगह से न सर-
कता था और मैं रूब किब्लः खड़ा हुआ खुदा से
कहता था कि इस वक्त में तेरी जातके सिवाय मेरा
कोई नहीं जो आड़े आवे और बेगुनाह को बचावे
बचता हूँ यह कहकर कलमा शहादत का पढ़कर
तिवराकर गिर पड़ा खुदाको हिकमत से उस
शहर के बादशाह को कुलंज की बीमारी
हुई उमरा और हकीम जमा हुए जो इलाज
करते थे फायदा मन्द न होता था एक बुजुर्ग ने
यह कहा कि सबसे बेहतर यह दवा है मुहताजोंको
कुछ खैरात करो बिन्दी वालों को आजाद करो
दवा से दुआ में बड़ा असर है यों ही बादशाह के
चेले कैदखाने की तरफ दौड़े इत्तिफाकन एक उस
मैदान में आ निकला भीड़ देखकर मालूम किया

किसी को सूली चढ़ाते हैं यह सुनते ही घोड़ा दौड़ा
कर नजदीक लाकर तलवार सेतनाव काटदी हाकिम
के प्यादों को डांटा और तबीह की कि ऐसे वक्त में
बादशाह की हालत है तुम खुदा के बन्दे को कत्ल
करते हो और मुझे छुड़ा दिया तब यह दोनों भाई
फिर हाकिम के पास गये और मेरे कत्ल के वास्ते
कहा कि सेना ने तो रिशवत खाई थी जो यह
कहते थे सो वह करते थे कोतवाल ने इनसे कहा
कि खातिर जमा रक्खो अब मैं इसे ऐसा कैद करता
हूँ कि आपसे आप मारे भूखों के बे आबदाना मर
जाय किसी को खबर न हो मुझे पकड़ लाये और
एक गोशे में रक्खा उस शहर से बाहर तीन कोस
पर एक पहाड़ था कि हजरत सुलेमान के वक्त में
देवों ने एक कुआँ तंग तारीक उसमें खोदा था उस-
का नाम जिन्दान सुलेमान कहते थे जिस पर बड़ा
गजब बादशाही होता उसे वहाँ महबूस करता
खुद ब खुद मर जाता अल किस्सा रात को चुपके
ये दोनों भाई कोतवाल के प्यादे मुझे उस पहाड़

पर लेगये और उस गार में डाल कर अपनी खातिर जमा करके फिर ऐ बादशाह यह कुत्ता मेरे साथ चला गया जब मुझे कुएँ में गिराया तब यह उसके मेंड पर लेट रहा मैं अन्दर बेहोश पडा रहा जब जरा सूरत आई तो मैंने अपने तईं मुरदा ख्याल किया और उस मकान को गार समझा इस में दो शख्सों की आवाज मेरे मकाम में पड़ी कि जैसे आपस में कोई बातें करता है यही मालूम किया कि मुनकिर नकीर हैं तुझसे सवाल करने आये हैं इतने में सरसराहट रस्सी की सुनी जैसे किसी ने लटकाई में हैरत में था जमीन को टटोला तो हड्डियाँ हाथ में आई एकसा अत के आवाज चपड़२ मुँह चलाने की मेरे कान में आई जैसे कोई कुछ खाता है मैंने पूछा ऐ खुदा के बन्दो तुम कौन हो खुदा वास्ते बताओ वह हँसे और बोले यह जिन्दा पर महतर सुलेमान है और हम कैदी हैं मैंने उनसे पूछा क्या मैं जीता हूँ वह खिल खिला कर हँसे और कहा अब तलक तो जिन्दा पर अब मरेगा

मैंने कहा तुम क्या खाते हो मुझे भी थोड़ा दो तब झुँझलाकर खाली जवाब दिया और न कुछ दिया वह खा पीकर सो रहे मैं मारे जोफ और नातवानी के गश में पड़ा रोता था और खुदा को याद करता था किब्लः आलम सात दिन दरिया में और इतने भाइयों के बेहतान के सबब दाना मयसर न आया अलावः खाने के मार मीट खाई और ऐसे जिंदान में फँसाकि सूरत रिहाई की मुतलक न आती थी आखिर जाँ कन्दनी की नौबत पहुँची कभी दम आता कभी निकल जाता लेकिन कभी कभी आधी रात को एक शख्स आता और रूमाल रोटियां और पानी की सुराही डोरी में बाँधकर लटका देता और पुकारता वह दोनों आदमी मेरे पास महफूज थे और लेके खाते पीते ऊपर से कुत्ते ने यह अहवाल देख अकल दौड़ाई जिस तरह यह शख्स आबेनान कुएँ में लटका देता है तू भी ऐसी फिक्र कर कि कुछ बेकस को जो मेरा खाविन्द है रिजक पहुँचे तो उसका दम बचे यह ख्याल करके शहर में गया

नाना वाई को पर दूकान रोटियां मेज़पर गिरदे चुने धरे थे कूद कर एक रोटी मुह में ले भागा लोग पीछे दौड़े ढेले मारते थे लेकिन उसने नान को न छोड़ा आदमी थककर फिरे शहर के कुत्ते पीछे लगे उनसे भी लड़ता भिड़ता रोटी को बचा कर उस चहपर आया और नान को डाल दिया रोज रोशन था मैंने रोटी को अपने पास पड़ा देखा और कुत्ते की आवाज सुनी रोटी उठाली और यह कुत्ता रोटी फेंक कर पानी को तलाश में गया किसी गांव के किनारे एक बुढ़िया की झोपड़ी थी ठिलिया और बदना पानी से भरा हुआ धरा था और वह पीरजन चरखा कातती थी कुत्ता कूंजे के नजदीक गया चाहा कि लोटेको उठावें बुढ़ियाने डाटा लोटा उसके मुँह से छूटा घड़े पर गिरा घड़ा फूटा बाजी बासन लुड़क गये पानी बहचला बुढ़िया लकड़ी लेकर मारने को उठी यह संग दामन से उसके लिपट गया फिर उसके पांव पर मुँह मलने लगा और दुम हिलाने

लगा और पहाड़ की तरफ दौड़ गया और फिर उसके पास आकर कभी रस्सी उठता कभी डोल मुह में पकड़कर दिखाता और मुंह उसके कदमों पर गेरता और आँचल चादर का पकड़कर खींचा खुदाने उस औरत के दिल में रहम दिया कि डोल रस्सी को लेकर उसके हमराह चली यह उसका आंचल पकड़े घरसे बाहर होकर आगे आगे हो लिया आखिर उसको पहाड़ी पर लेआया औरतके जी में उस कुत्ते की हरकत ने अलहाम हुआ कि इसका मालिक मुकर्रर इसगारमें गिरफतार है शायद उसकी खातिर पानी चाहता है गरज़ पीरजनको लिये हुए ग़ार के मुंहपर आया औरत ने लोटा पानी का भरकर रस्सीसे लटकाया मैंनेवो बासन ले लिया और नान का टुकड़ा खाया दो तीन घूंट पानी पिया इस पेट के कुत्ते को राजी किया खुदा को शुक्र करके एक किनारे बैठा और खुदा की कुदरत का मुन्तजिर था कि देखिये अब क्या होता है यह हैवान बे जबान उसी तरह से रोज़

नान ले आता और बुढ़िया के हाथ पानी न
पिलाता जब भठियारों ने देखा कि कर मुकर्रर
किया जब इसे देखते एक रोटी उसे फेंक देते और
अगर वह औरत उसे पानी न लाती तो यह
उसके बासन फोड़ डालता लाचार वह भी हर रोज
एक सुराही पानी दे जाती उस फ़कीर ने आब नान
से भरो खातिर जमा की और आप जिन्दान के
मुँह पर पड़ा रहता इस तरह छः महीने गुजरे
लेकिन जो आदमी ऐसे जिदान में रहे कि दुनियां
की हवा उसको न लगे उसका क्या हाल होगा
निरापोस्त और उस्तख्व न मुझ में बाकी न रहा
जिन्दगी ववाल हुई जी में आया कि या इलाही
यह दम निकल जावे तो बेहतर है एक रोज़ रात को
वे दोनों कैदी सोते थे मेरा दिल उमड़ आया वे
अख्तयार रोने लगा पिछले पहर क्या देखता हूँ कि
खुदा की कुदरत से एक रस्सी ग़ार से लटकी और
आवाज सहज में सुनी ए कमबख्त बद नसीब
डोरी का सिरा अपने हाथ से मज़बूत बांध और

जोश में आपको निकालने आये .निहायत खुशी
से उस तनाव को कमर में खूब कसा किसी ने
मुझे ऊपर खींचा रात ऐसी अन्धेरी थी कि जिसने
मुझको निकला उसको मैंने न पहिचाना कि कौन
है जब मैं बाहर आया तब उसने कहा जल्द
आया हां खड़े होने की जगह नहीं मुझ में ताक़त
न थी पर मारे डरके लुढ़कता पहाड़ से नीचे आया
देखूं तो दो घोड़े जीन बँधे हुये खड़े हैं उस शख्सने
एक पर मुझे सवार किया और दूसरे पर आपचढ़
लिया और आगे हुआ और जाते २ दरिया के
किनारे पर पहुंचा सुबह हो गई उस शहर से दस
बारह कोस निकल आये और उस जवान को देखा
कि ओ बची बना हुआ जहर बख्र पहने चार
आई ने बांधे घोड़े पर पाखर डाले मेरी तरफ़ ग़ज़ब
की नजरों से घूरा और हाथ अपना दांतों से काट
कर तलवार म्यान से खींचा और घोड़े को हरकत
करके मुझपर चलाई मैंने अपने तईं घोड़े परसे
गिरा दिया और घिघियाने लगाकि बेतकसीर हूं

मुझे क्यों क़तल करता है ऐ साहब मुरव्वत ऐसे जिंदान से तू ने निकाला अब यह मुरव्वती क्या है उसने कहा सच कह तू कौन है मैंने जवाब दिया कि मुसाफिर नाहक़ की बला में गिरफतार हो गया था तुम्हारे तसद्दुक़ से वारे जीता हूं और बहुत सी बातें खुशामद की कीं खुदा ने उसके दिल में रहम दिया शमशेर को गिलाफ में किया और बोला खैर खुदा जो चाहे सो करे जा तेरी जान बख्शी की जल्द सवार हो यहां तवक्कुफ़ का हुकाम नहीं घोड़ों को जल्द लिया राहमें अफसोस खाता और पछताता जोहर के वक्त एक जजीरह में पहुँचा वहाँ घोड़े से मुझे भी उतारा ज़ीन खोगीर सकरबों की पीठ से खोला और चरने को छोड़ दिया अपनी भी कमर से हथियार खोल डाले और बैठा मुझसे बोला ऐ बदनसीब अब अपना अहवाल कह ताकि मालूम हो कि तू कौन है मैंने अपना नाम व निशान बताया और जो कुछ बिपता बीती थी उससे आखीर तक कही उस जवान ने जब मेरे सिर गुज़श्त सब

सुनी तब रोने लगा और मुखातिब होकर कहाकि ऐ जवान अब मेरा माजरा सुन मैं कन्या जेरबाद के देश के राजाकी हूं और वह गबरू जो जिन्दान सुलेमान में कैद है उसका नाम बहेरहिंद है मेरे पिता के मंत्री का बेटा है एक रोज महाराज ने आज्ञा दी कि जितने राजा और कुँवर है जेर झरोके आकर तीरंदाजी करें।

किस्सा मुल्क जेरबाद की रानीका

चौगानबाजी करें तो घुड़ चढ़ाई और कसब हर एक का जाहिर हो मैं रानी के पास जो मेरी माता थी अटारी पर ओझल में बैठीथी और दाइयाँ और सहेलियाँ हाजिर थीं तमाशा देखती थीं यह दीवान का पूतसब में सुन्दर और घोड़े को कावें कसब कर रहा था मुझको भाया और दिलसे उस पर रीझि मुद्दत तलक यह बात गुप्त रही आखिर जब बहुत व्याकुल भई तब दाई से कहा और ढेर-सा इनाम दिया जब उस जवान को किसी ढबसे

मेरे घर में ले आई तब वह भी मुझे चाहने लगा बहुत दिन इस इश्क़ व मुश्क में कटे एक रोज चौकीदारों ने आधी रात को हथियार बांधे और महल में आते देखकर उसे पकड़ा और राजा से कहा उसने हुक्म कत्ल का किया सब अरकान दौलत ने कह सुनकर जानबख्शी कराई तब फरमाया कि इसको जिंदान सुलेमान में डाल दे और दूसरा जो उसके हमराह असीर है उसका भगना है उस रात को वह भी उसके उसके साथ था दोनों को उस कुएँ में छोड़ दिये आज तीन वर्ष हुए कि फसे हैं मगर किसी को नहीं दरयाफ्त किया कि वह जवान राजा के घर में क्यों आया भगवान ने मेरी पत रक्खी शुकराना के बदले मैंने अपने ऊपर लाजिम किया है कि अन्न और जल उसके पहुंचाया करूं तब से अठवाड़े में एक दिन आती हूं और आठ दिन का अजूक इकट्ठा दे जाती हूं कि जल रात सुपने में देखा कि कोई मनुष्य कहता है कि सुभे उठ घोड़ा और कपड़ा खर्च के वास्ते लेकर

उस गार परजा और मगन होकर मरदाना भेस किया और एक संदूगचा जवाहर अशर्फी से भर लिया और घोड़ा जोड़ा लेकर वहां गई कि कमंद उसे खैंचूं कमर में तेरे था कि ऐसी कैद से इस तरह छुट कारा पाया और मेरे करतब से मरहम मेई नहीं शायद वह कोई देवता था कि तेरी मुखलिसी के खातिर मुझे पहुँचाया खैर मेरे भाग में था सो हुआ यह कह कर पुरा कचौरी मासका सालन अंगोछेसे खोला पहले कंद निकाल एक कटोरे में घोला और अर्क बेदमुश्क का उसमें डालकर मुझे दिया मैंने उसके हाथ से लेकर पिया फिर थोड़ा नाश्ता किया बाद एक साअत के मेरे तईं लूंगो बँधवा कर दिया में लेगई ।कैंची से मेरे सिर के बाल कतर नाखुन लिये नहला धुलाकर कपड़े पहनाये नये सिरसे आदमी बनाया दो गाना शुक्र कावरू किब्ल होजर पढ़ने लगा वह नाजनीन इस मेरी हरकत को देखती रही जब नमाज से फारिग़ हुआ पूछने लगी कि यह तूने क्या काम किया मैंने कहा कि

जिस खालिक ने सारी खलकत को पैदा किया और तुझ सी महबूबा से मेरी खिदमत करवाई और तेरे दिलको मुझपर मेहरबान किया और ज़िंदान से खलास करवाया उसकी जाता लाशरीक है उसकी मैंने इबादत की और बन्दगी बन्दगी बजा लाया और शुक्र अदा किया यह बात सुनकर कहने लगी तुम मुसल्मान हो मैंने कहा शुक्र अल-हम्द लिल्ला बोली मेरा दिल तुम्हारी बातोंसे खुश हुआ मेरे तईं भी सिखाकर कलमा पढ़ाओ मैंने दिलमें कहा अल्लाह अलहम्द लिल्लाह कि यह हमारे दीन की शरीक हुई गरज मैंने लाइलाह लिल्लिल्लाह मुहम्मद रसूलल्लिल्लाह पढ़ाऔर उसे पढ़ाया फिर वहां से घोड़े पर सवार होकर हम दोनों चले रातको उतरती तो वह जिक्र दीन व ईमान का करती और सुनती और सुनती और खुश होती इसी तरह दो महीने तक रवाना रोज चली गई आखिर एक विलायत में पहुंचे कि दरम्यान सरहद जेरबाद और सरंदीप कीथी एक शहर नजर आया कि आबादी में अस्त

बोल से बड़ा और आबहवा बहुत खुश और मुआ-
फिक बादशाह उस शहर का कसरासे ज्यादा आदिल
और रैय्यत परवर देखकर दिल निपट शाद हुआ एक
हवेली खरीद करके बूदो बाश मुकर्रर की जब कई
दिन रंज सफर से आसूद हुए कुछ असबाब जरूरी
दुरुस्त करके उसी वोबीसे मुआफिक शरह मुहम्मदी
के निकाह किया और रहने लगा तीन साल में वहां
के अकाबरों असागर से मिल जुलकर एतबार बाहम
किया और तिजारत का ठाठ फैलाया आखिर वहां
के सब सौदागरों से सबकत ले गया एक रोज वजीर
आजम की खिदमत में सलाम के लिये चले एक
मैदान में कसरत खल्क की देखी किसी से पूछा कि
यहाँ क्यों इतना अजदहाम है मालूम हुआ कि दो
शख्सों को जिना और चोरी करते पकड़ा है शायद
खून भी किया है उनको संग सार करने को लाये
हैं कि ऐसी बला में गिरफ्तार हुए हैं मालूम नहीं
कि रास्त है या मेरी तरह तुहमत में गिरफ्तार हुए
हैं भीड़ को चीर कर अन्दर घुसा देखा तो यही मेरे

दोनों भाई हैं कि तुंडियाँ कमे सरोपा वरहने उनको लिये जाते हैं उसकी सूरत देखते ही लोहूने जोशकिया और कलेजा जला मुहस्सिलों को एक मुट्ठी अशर्फियां दो और कहा एक साअत तवक्कुफ़करो और वहां से घोड़े को सरपट खेंच कर हाकीम के घर गया और एक दाना याकूत बेबहाका नजर आया गुजराना और उनकी सिफ़ारश की हाकिम ने कहा शख्स इनका मुद्दई है और गुनाह साबित हुए हैं और बादशाह का हुक्म हो चुका है मजबूर हो चुका है मजबूर हूँ बारे मिन्नत वजीरी से हाकिम ने मुद्दई को बुलवा कर पांच हजार रुपये पर राजी किया कि दावा खूनका मुआफ करो के मैंने रुपये गिन दिये और लादावी लिखवा लिया और ऐसी बला से मुखलसी दिलवाई जहां पनाह इनसे पूछिये सच कहता हूं या झूठ बकता हूं वे दोनों भाई सिरनीचे किये शरमिंदगी से खड़े थे खैर उनको छुड़ाकर घरमें लाया और हमाम करवाया लिबास पहनाया दीवान खाने में मकान रहने को दिया उस मर्तबे अपने कबीले को उनके

रोवरू न किया उनके खिदमत में हाजिर रहता और इनके साथ खाना खाता सोते वक्त घरमें जाता तीन साल तक इनकी खातिरदारी में गुजरे और उनकी भी कोई हरकत बद वाकैन हुई कि बाइस रंजीदगी का होवे जो मैं कहींसवार होकर जाता तो यह घर रहते इत्तिफाकन वह बीबी नेकबख्त एक दिन हमाम को गई थी जब दीवानखाने में आई कोई मर्द नज़र न पड़ा उसने बुरकां उतारा शायद मझला भाई लेटा हुआ जागता था देखते ही आशिक हुआ बड़े भाई से कहा दोनोंने मेरे मार डालने को बाहम सलाह की इन हरकत्से मुतलक खबर न रखता था बल्कि दिल में कहता था अलहम्दलिल्लाह इस मर्तबे अब तक इन्होंने कुछ ऐसी बात नहीं की अब इनकी बजें दुरुस्त हुई शायद गैरत को काम फरमाया एकरोज बाद खाना खानेके बड़े भाई साहब आबदीदहुए और अपने वतनकी तारीफ और ईरान की खूबियां करने लगे यहसुनकर दूसरे भी विसूरने लगे मैंने कहा अगर इरादा वतन का है तो बेहतर मैं ताबे मरजी के हूँ

मेरी भी यह आरजू है अब इन्शा अल्लाह ताला मैं भी आपकी रकाब में चलता हूं उस बीबी ने देनों भाइयों की उदासी का मजकूर किया और अपना भी इरादः कहा वो आकिलबोली कि तुम जानो लेकिन फिर कुछ दगा किया चाहते हैं यः तुमारी के दुश्मन हैं तुमने सांप आस्तीन में पाले हैं और उनको दोस्ती का भरोसा रखते हो जो जी चाहे सो करो लेकिन मूजियों से खबरदार रहो बहर तकदीर थोड़े असेमें सफर को तैयारी करके खीमा मैदानमें इस्तादः किया और बड़ा काफिला जमा हुआ और मेरी सरदार और काफिलेबाशी पर राजी हुए अच्छी साअत देखकर रवाने हुए लेकिन इनकी तरफ से अपनी जानिब में हुशियार रहता और सब सूरतसे फरमां बरदारी और दिलजोई इनकी करता एक रोजएक मंजिलमें मझले भाईने मजकूर किया कि एक कोसपर इस मकान से एक चश्मा जारी है मानिंद सल सबील के और मैदान में खुदरो कोसों तलक लाले बना फर- मान और नरगिस गुलाब फूले हैं वाकई अजब मकान

सैरका है अगर इतना अख्तयार होता तो कल वहीं जाकर तफ़रीह तबीयत की करते और मांदगी रफ़ै होती मैं बोला कि साहबमुख्तार हैं फ़रमाओतो कल के दिन मुकाम करें और वहाँ चलकरसैरकरते फिरें यह बोले अर्जोचे: बेहतर मैंने हुक्म किया कि सारे काफ़िले में पुकारदो कि कल मुकाम है और बकावल से कहा कि हाजिर बक़िस्म की तैयारीकरो कल सैर को जायंगे जब सुबह हुई इनदोनों और बिरादरों ने कपड़े कर मुझेयाद दिलाया कि जल्दी ठंडे २ चलिये सैरकीजिये मैंने सवारी मांगी बोले जो प्यादा लुत्फ़ सैरका होता है सवारी में नहीं होताहै नफ़रोंको कह दो घोडेको तैयार करके लेआवें दोनों गुलामों ने कलियां और कहवः दानले लिया और साथहुए राहमें तीरन्दाजी करतेचले जातेथे जबकाफ़लेसे दूर निकल गये एक गुलाम को किसी कामको भेजा थोड़ी दूर आगे बढ़कर दूसरे को भी इसके बुलाने को रुख़सत किया कम्बख्ती जो आवे मेरे मुँह में जैसे किसी ने मोहर देदीहो वह चाहते सो करते और मुझे बातों

में परचाये लिये जातेथे मगर यह कुत्ता साथ रहगया था बहुत दूर निकल गये न चश्मा नजर आया न गुलजार मगर एक मैदान पुरखारथा वहां मुझे पेशाब लगा मैं करने बैठा अपने पीछे चमक तलवार कीसी देखी मुड़कर देखाते मझले भाई साहब ने मुझपर तलवार मारा कि सिर दो पारह होगया जब तलक बोलूं ऐ जालिम मुझे क्यों मारता है बड़े भाईने सीने पर तलवार लगाई दोनों जख्मकारी लगे त्योराकर गिरा तबदोनों बेरहमोंने बखातिर जमा मेरे तईं जख्मी किया और लोहू लुहानकर दिया यह कुत्ता मेरा अह-वाल देखकर इनपर भोंका उसको भी घायल किया बाद उसके अपने हाथों से अपने बदन में निशान किये और सरोपा बिरहनः काफ़लेमें गये और जाहिर कियाकि हरामियोंने उस मैदान में हमारे भाईकोशहीद किया और हम भी लड़ भिड़कर जख्मी हुए जल्दी कूंचकरो नहींतो अब कारवां पर गिरकर सबको तंगिया लेंगे काफ़लेके लोगों ने बद्दुओं का नामजो सुना योंही बदहवास हुए और घबराकर कूंच किया और चल नि-

कत्ले मेरे कबीलेने सलूक और उनकी खूबियाँसुन रक्खी थी जोजो मुझसे दगायें की थी वह वारदात इनका जिवाँसेसुनकरजल्द खञ्जरसे अपने तईं हलाक किया और जान बहक तसलीम हुए ऐ दुरवेशों उसख्वाजे सगपरस्तने जब अपनी कैफ़ियत और मुसीबत यहाँ तलक कही सुनतेही मुझे बे अख्त्यार रोना आया सौदागर कहने लगा कि किब्लः आलम अगर बे अदबी न होती तो बिरहनः होकर अपना सारा बदन खोलकर दिखाता तिसपर भी अपनी रास्ती पर गिरे बांमुण्डे तलक चीरकर दिखाया वाकई चारअंगुल बदन उसका बगैर जख्म के साबित न था मेरे हुजूर सिरसे अमामा उतारा खोपड़ी में ऐसा बड़ा गड्ढा पड़ाथा कि एक अनार उसमें समूचा समावे अरकान दौलत जितने हाजिर थे सबने अपनी आँख बन्दकरली ताकत देखने की न रही फिर ख्वाजे बोला बादशाह सलामत जब यह भाई अपनी दानिस्त में काम तमाम करके चले गये एक तरफ मैं और एक तरफ यह सग मेरे नज जख्मी पड़ाथा लोहू इतना बदनसे गया कि मुतलक

ताकत और होश बाकी कुछ न था क्या जानूं दम अटक रहा था कि जीता था जिस जगह मैं पड़ा था विलायत सरंदीप की सरहद थी और एक शहर आबाद उसके करीब था उस शहरमें बड़ा बुतखानः था।

किस्सा सरंदीप की रानी का।

और वहाँ के बादशाह को एक बेटी थी निहायत कबूल सूरत और साहब जमाल अकसर बादशाह और शाहजादे उसके इश्क में खराब थे और वहां रसम हिजाब न थी इससे वह लड़की तमाम हमजोलियों के साथ सैर व शिकार करती फिरती थी हम से नजदीक एक बादशाही बाग था उस रोज बादशाह से इजाजत लेकर उसी बाग में आती थी सैर की खातिर उस मैदान में फिरते २ आ निकली कई ख्वासें भी साथ सवार थीं जहाँ मैं पड़ा था और मेरा कराहना देखकर पास खड़ी हुई मुझे इस हालत में देखकर भाग गई और शाहजादी से कहा एक मरदुआ और एक कुत्ता लोहू

में सराबोर पड़ा है उनसे यह सुनकर मलक: मेरे सिरपर आई अफसोस खाकर कहा देखो तो कुछ जान बाकी है दो चार दाइयों ने उतर कर देखा और अर्ज की अब तलक तो जीता है तुरन्त फरमाया अमानत कालीचे पर कराकर बागमें ले चलो वहाँ लेजाकर जर्राह सरकार का बुलाकर मेरी और मेरे कुत्ते की खातिर इलाज की ताकीद की और उम्मेदवार इनाम और बखशिशका किया उस हज्जाम ने सारा बदन मेरा पोंछ पाँछकर खाक और खून से पाक किया और शराब से धोधाकर जख्मों को टांके देकर मरहम लगाया और बेदमुश्क का अर्क पानी के बदले मेरे हलक में चुआया मलक: आप मेरे सिरहाने बैठी रहती और मेरी खिदमत करवाती और तमाम दिन रात में कुछ शोरबा शरबत अपने हाथ से पिलाती बारे मुझे होश आया तो देखा कि मलक: निहायत अफसोस से कहती है कि किसी जालिम खूँख्वार ने तुझ पर यह सितम किया बड़े बुतसे भी न डरा बाद दस रोज के अर्क और शरबत और

माजून की कुव्वत से मैंने आंख खोली देखा तो इन्दर कार अखाड़ा मेरे आस पास जमा है मलकः सरहाने खड़ी है एक आह भरी और चाहा कि कुछ हरकत करूँ कुछ ताकत न पाई बादशाहजादी मेहरबानी से बोली कि अजमी खातिर जमा रख कुढ़ मत अगर्चें किसी जालिम ने तेरा यह अहवाल किया लेकिन बड़े बुत ने मुझको तुझ पर मेहरबान किया है अबचंगा हो जायगा कसम उस खुदाकी जो वाहद ला शरीक हैं मैं उसे देखकर फिर बेहोश होगया मलकः ने भी दरियाफ्त किया और गुलाब पाश से गुलाब अपने हाथ से छिड़का बीस दिन के बाद जख्म भर आये और अङ्गूर कर लाये मलकः हमेशः रात को जब सब सो जाते मेरे पास आती और खिला पिला जाती गरज एक चिल्ले में गुसल किया बादशाहजादी ने निहायत खुश होकर हज्जाम को बहुत सा इनाम दिया और मुझको पोशाक पहनवाई खुदाके फजल से और खबर गीरी और सई से मलकः के खूब चाक और चौबंद हुआ

को बहुत सा इनाम दिया और मुझको पोशाक महैनवाई खुदाके फ़ज़ल से और खबर गीरी और सई से मलकः के खूब चाक और चौबंद हुआ और बदन तैयार हुआ और कुत्ता भी फरबः होगया हररोज मुझे शरब पिलाती और बातें सुनती और खुश होती मैं भी एक आधीन कलमा कहानी अनूठी कहकर उसके दिलको भलाया एक दिन पूछनेलगीकि अपना अह-वाल बतोया करो कि तुम कौन हो यह वारदात तुझ पर क्योंकर हुई मैं ने अपनामाजरा अव्वलसे आखिर तककह सुनाया यह सुनकर रोने लगी और बोली कि मैं अब तुझसे ऐसा सलूक करूंगी कि अपनी सारी मुसीबत भूल जायगी मैं ने कहा तम्हें खुदा सलामत रक्खो तुमने नये सिरे से मेरी जान बख्शी की है अब मैं तुम्हारा हो रहा हूं वास्ते खुदाके इसी तरह हमेशः मुझपर अपनी नजर मेहरबानी की राखियो गरज तमाम रात अकेली मेरेपास बैठीरहती बाजदिन दाई भी उसके साथ रहती हरएक तौरका जिक्र मजकूर सुनती और कहती जब उठ जाती और

में तनहा होता तहां रात करके कोने में छुपकर
नमाज पढ़ लेता एकबार ऐसा इत्तफ़ाक हुआ कि
मलकः अपने बापके पास गईथी खातिर जमासे वजू
करके नमाज पढ़ रहाथा कि अचानक शाहजादी
दाईसे बोलती हुई आई कि देखें तो अजमी इस वक्त
क्या करता है सोता है या जागता है मुझे मकान पर
जो न देखा ताज्जुब में हुई वह कहां गया है किसी
से कुछ निगाह तो नहीं लगाया कोना कुथरा देखने
लगी और तलाश करने लगी आखिर जहां मैं नमाज
पढ़ताथा वहाँआ निकली उस लड़कीने कभी नमाज
काहेको देखी थी चुपके खड़ीदेखा कि जब मैंने
नमाज तमाम करके दुआ के लिये हाथ उठाया और
सिजदे मे गया बेअख्त्यार खिलखिला कर हंसी
और बोली क्या आदमी सौदाई होगया है यह कैसी
कैसी हरकत कररहा है मैं हँसी की आवाज सुनकर
दिलडरा मलकः आगेआकर पूछने लगी कि ऐअजमी
यह तू क्या करता है मैंने कुछ जवाब न दिया इसमें
दाई बोली बुलालूं तेरे सदके गई मुझे तो यों मालूम

होता है कि यह शख्श मुसलमान है लातम नातका दुश्मन है बिन देखे खुदाको पूजता है मलकः ने यह सुनतेही हाथ पर हाथ मारा बहुत गुस्से हुई कि मैं क्या जानती थी कि यह तुर्क है हमारे बुतोंसे मुन्किर है तबहीं हमारे बुतके गजबमें पड़ा था मैं ने नाहक इसकी परवरिश की और अपने घरमें रक्खा यह कहती हुई चली गई मैं सुनतेही बदहवास हुवा कि देखिये अब क्या सलूक करे मारे खौफ के नींद उचाट होगई सुबह तक बे अखत्यार रोया और आंसू से मुंह धोया किया तीन दिनरात इसी गौफोरजा से रात गुजरे हरगिज आंख न झपकी तीसरी शब मलकः शराबके नशे में मखमूर और दाई को साथ लिये हुए मेरे मकान पर आई गुस्से में भरीहुई और तीर व कमान लिये हुए बाहर चिमन के किनारे बैठी दाई से शराब का प्याला मांगा पीकर कहा दाई वह अजमी जो हमारे बुतके कहरमें गिरफ्तार है मुआ या अब तक जीता है दाईने कहा बलारे लूँ कुछ दम बाकी है बोली कि अब वह हमारा नजर्य

से गिरा लेकिन कहाके बाहर आये दाईने मुझे पुकारा मैं देखं तो मलकः का चेहरा मारे गुस्से के तमतमा रहा है और सुर्ख होगया है रूह कालिब में न रही सलाम किया और हाथ बांधकर खड़ा हुआ ग़ज़ब की निगाह से मुझे देख कर दाई से बोली अगर मैं इस दीनके दुश्मन को तीरसे मारूं तो मेरी खता खुदा बुरा माफ करेगा या नहीं यह मुझसे बडा गुनाह हुआ है कि मैंने इसे अपने घरमें रखकर खातिरदारीकी दाईनेकहा बादशाहज़ादीइसकीक्या तकसीर है कि कुछ दुशमन जानकर नहीं रक्खा तुमने तो इस पर तर्श खाया तुमको नेकी के ऐवज नेकी मिलेगी और यह अपनी बदी की समरह बड़े बुत से पायेगा यह सुनकर कहा दाई इससे बैठने को कह दाईने मुझे इशारत की कि बेठजा मैं बेठ गया मलकः ने शराब का प्याला दाई से कहा इस कमबख्त को भी दे तो आसानीसे मारा जायगा दाई ने जमादिया बे उजर प्याला पिया सलाम किया हरगिज मेरे तरफ निगाह न की कनखियों से चोरी२

देखती रही जब मुझे सरूर हुआ कुछ शैर पढ़ने लगा अजां जुमले एक बैत यह भी पढ़ा॥

बैत—काबू में हूं मैं तेरे गो अब जिया तो फिर क्या।
खंजर तले किसी ने टुक दम लिया तो फिर क्या॥

सुनकर मुस्कराई और दाईकी तरफ देखकर बोली क्या तुझे नींद आती है दाईने मरजी पाकर कहाके हां मुझपर ख्वाब ने गलवा किया है वह तो रुखसत होकर जहन्नुम बाशद हुई बाद एक दम के मलकः ने प्याला मुझसे माँगा मैं जल्द भर कर रोबरु ले गया एक अदां से मेरे हाथ से लेकर पी लिया तब मैं कदमों पर गिरा मलकः ने हाथ मुझ पर झाड़ा और कहने लगी ऐ जाहिल हमारे बड़े बुत में क्या बुराई जो गैर खुदाकी परिस्तिश करने लगा मैंने कहा इंसाफ शर्त है टुक गौर फरमाइये बंदगः के लायक यह खुदा है जिसने एक कतरे पानी से तुमसा महबूब को पैदा किया और यह हुस्न व जमाल दिया आन में हजारों इन्सानने दिल को दीवानः कर डाला बुत क्या चीज है कि कोई

उसका पूजा करे एक पत्थर को सँगतराशों ने गढ़ कर मूरत बनाई और दाम अहमकोंके दिखाया जिन को शैतानबर्ग लाता है वही मसबूगओ स्याणा जानता होगा जिस को अपने हाथोंसे बनाते हैं उसके आगे शिर झुकाते हैं और हम मुसल्मान हैं जिसने हमें बनाया है हमउसे मानते हैं उनके वास्ते दोजख है हमारे वास्ते बहिस्त बनाया है बादशाह जादो ईमान खुदापर लाये और उसका मजा पाये और हक बातिल से फर्क करे और अपने एतकादों को गलत समझे ग्रारे ऐसी ऐसी नसीहत सुन कर उस संगदिल के दिल का दिल मुलायम हुआ खुदाके फजल व करम से रोने लगी और बोली अच्छा मुझे भी अपना दीन सिखाओ मैं ने कल्मा तालीम किय उसने बसादिक दिल पढ़ा अस्तगफ़ार करके मुसलमान हुई तब मैं उसके पांव पड़ा सुबह तक कल्मा पढ़ती अस्तगफ़ार करती रहती और कहने लगी भला मैं ने तो तुम्हारा दीन कबूल किया लेकिन माबाप काफिर हैं इनका क्या इलाज है मैं ने कहा

तुम्हारी बला से जो जैसा करेगा वैसा पावेगा बोली कि मुझे चचा के बेटा के साथ मंसूब: किया है और वह बुतपरस्त है कल को खुदा न ख्वास्ते ब्याह हो और वह काफिर मुझ से मिले और उसका नुत्फा मेरे पेटमें पड़ जाय तो बड़ी कबाहत होइ और कि अभी मे किया चाहिये कि इस बला से निजात पाऊं मैं ने कहा तुम बात तो माकूल कहती हो जो मिजाज में आये सो करो बोली कि अब में यहां न रहूंगी कहीं न कहीं निकल जाऊँगी मैं ने पूछा किस सूरत से भागने पाओगी और कहां जाओगी जवाब दिया कि पहिले तुम मेरे पाससे जाओ मुसलमानों के साथ सरां में जारहो तो सब आदमी तुने और गुलाम न ले जायें तुम वहां किश्तियों की तलाश में रहो जो जहाज अजम की तरफ चले मुझे खबर कीजो मैं इसवास्ते दाई को तुम्हारे पास अक्सर भेजा करूँगी जब तुम कहला भेजोगे मैं निकल कर आ ऊंगी और किश्ती पर सवार होकर चलीजाऊंगी तब इन बे दीनों कमबख्त के हाथ से मुखलिसी

पाऊंगी मैंने कहा तुम्हारी जान और ईमान के कुरबान हुआ दाई को क्या करोगी बोली इसकी फ़िक्र सहल है एक प्याले मे जहर हलाहल पिला ऊंगी यही सलाह मुकर्रिर हुई जब दिन हुआ मैं कारवां सरॉं में गया एक मकान किराये का लिया और जा रहा उसकी जुदाई में फ़क्त वसल ही पर जाता था जब दो महीने में सौदागर रूम व शाम इसफहान जमा हुए इरादा कूच का तरीकी राहसे किया और असबाब जहाज़ पर चढ़ाने लगे एक जगह रहने से अकसर आसना सूरत होगये थे मुझ से कहने लगे क्यों साहब तुम भी चलो कफरिस्तांन में कब तलक रहोगे मैंने जवाब दिया कि मेरे पास क्या है जो अपने बतन को जाऊं यही एक लौंडी एक कुत्ता एक सन्दूक बिसात में रखता हुं अगर थोड़े जगह बैठने को दो और उसका मोल मुकर्रर करो तो मेरी खातिर जमा हो मैं भी सवार हुं सौदागरों ने एक कोठरी मेरे मातहत में करदी मैंने उसके तोल का रुपया भरदिया दिलजमई करके

किसी बहाने से दाई के घर गया और कहा ऐ अम्मा मैं तुझसे रुखसत होने आया हूं अब वतन को जाता हूं अगर तेरी तवज्जह से एक नजर मल्कः को देखूं तो बड़ी बात है वारे दाई ने कबूल किया मैंने कहा मैं फलाने मकान पर रात को खड़ा रहूंगा बोली अच्छा मैं यह कहकर सराय में आया संदूक और बिछौना उठाकर जहाज में लाया और नाखुदा को सौंप कर कहा कल फजर को अपनी कनीज को लेकर आऊँगा नाखुदा बोला जल्द आइयो सुबह हम लँगर उठायेंगे मैंने कहा बहुत खूब जब रात हुई उसी मकान पर जहां दाई से वायदः किया था जाकर खड़ा रहा पहररात गये महलका दर-वाजा खुला और मल्का मैले कुचैले कपड़े पहने एक पेटी जवाहर की लिये बाहरनिकली वह पिटारी मेरे हवाले की और साथ चली सुबह होतेकिनारे दरिया के हम पहुंचे एक कनखोट पर सवार हो कर जहाज में जा उतरे यह वफादार कुत्ता भी मेरे साथ था जब सुबह रोशनी हुई लंगर उठा-

या और रवाना हुए बखातिरजमा चले जाते थे एक बंदर से आवाज तोपों की शकल की गई सब हैरान और फिक्रमंद हुए जहाज को लंगर किया और आपस में चरचा होने लगी कि क्या शाह बंदर कुछ दगा करेगा तोप छोड़ने का क्या सबब है इत्तिफाकन सब सौदागरों के पास खूब सूरत लौंड़ियां थी शाह बन्दर के खौफ से कि मुबादा छीन ले सब ने कनीजों को सन्दूक में बन्द किया मैंने भी ऐसाही किया कि अपनी शाहजादी को सन्दूक में बठाकर कुफल बन्द कर दिया इस अर्से में शाह बन्दर कोराब पर एक नौकर बैठा हुआ नजर आया आतेर जहाज पर आ चढ़ाशायद उसके आने का यह सबब था कि बादशाह को दाई के मरने का और मलकः के गायब होने की खबर मालुम हुई मारे गैरत के उसका तो नाम न लिया मगर शाह बन्दर को हुक्म किया मैंने सुना है अजमी सौदागर के पास लौंड़ियां खूब अच्छी हैं सो मैं शाहजादी के वास्ते लिया चाहता हूं तुम

उनको रोक कर जितनी लौंड़ियां जहाज में हाजिर हों उन्हें देख कर जो पसन्द आयेगी कीमत दी जायगी नहीं तो वापस होगी बमूजिब कहने बाद शाह के शाह बंदर इसलिये आप जहाज पर आया और मेरे नजदीक एक और शख्स था उसके भी पास एक बांदी कबूल सूरत संदूक में बंद थी शाह बंदर उसी संदूक पर आकर बैठा और लौंड़ियों को निकलवाने लगा मैंने खुदा का शुक्र किया भला बादशाहजादी का मजकूर नहीं गरज जितनी लौंडियां पाईं शाहबंदर के आदमियों ने नावों पर चढ़ा ली खुद शाह बंदर जिस संदूक पर बैठा था उसके मालिक से भी हंसते २ पूछा कि तेरे पास भी लोंडी थी उस अहमकने कहा आपके कदमों की सौगन्ध मैंने यह काम नहीं किया सभों ने तुम्हारे डर से लौंडियां संदूकों में छिपाई हैं शाह बंदरने यह बात सुनकर सब संदूकों को देखना शुरू किया मेरा भी संदूक खोला और मलकः को निकालकर सबके साथ ले गया अजब तरहकी मायूसी

हुई कियह ऐसी हरकत पेश आई कि तेरी जान तो
मुफ्तमें गई और मलकःसे देखें क्या सलूक करेउसकी
फिक्र में अपनी भी जान का डर भूल गया सारे
दिन रात खुदा से दुआ मांगता रहा जब बड़ी
फजर हुई सब लौंड़ियों को किस्ती में सवार करके
फेर लाया सौदागर खुश हुए अपनी कनीज के
लिये कसब आई मगर एक मलकः उनमें न थी मैंने
पूछा कि मेरी लौंडी नहीं आई इसका क्या सबब
है सौदागर मुझे तसल्ली दिलासः देने लगे कि खैर
जोहुआ तू कुढ़ मत उसकी किमतहमसब भरकर तुझे
देंगे मेरे हवास फाखतः होगये मैंने कहा कि मैं
अब अजम नहीं जाने का किस्ती वालों से कहा
यारो मुझे भी अपने साथलेचलो किनारे परउतार
दीजो वह राजी हुए मैं जहाज से उतर कर किस्ती
में आ बैठा यह कुत्ता भी मेरे साथ चला आया
जब बन्दरमें पहुंचा एक सन्दूकचा जवाहिर का
जो मल्कः अपने साथ लाई थी उसे तो रख लिया
और असबाब शाहै बंदरके नौकरोंको दिया और

जासूसीमें हरकहीं फिरने लगा कि शायद खबर मल्कः को पाऊँ लेकिन हरगिज सुराग न मिला और न इस बातका पता पाया एक रातको किसी मकरसे बादशाह के मकान गया ढूढ़ा कुछ खबर नहीं मिली करीब एक महीनेके शहरके कूचे और महल्ले छानमारे और उसी गमसे अपने तईं करीब हलाकतके पहुँचाया और सौदाई सा फिरने लगा आखिर अपने दिलमें ख्याल किया कि गालिब है शायद बंदर के घर में मेरी बादशाह जादी होवे तो होवे नहीं तो कहीं नहीं शाह बंदरकी हवेली के गिर्दपेश देखता फिरता कि कहीं से भी जाने की राह पाऊं तो अन्दर जाऊँ एक बदरो नजर पड़ी कि मुवाफिक आदमी की आमदरफ्त है मगर जाली आहनी उसके दाहने पर पड़ी है यह कस्द किया कि इस बदरों की राहसे चलूं कपड़े बदन से उतारे और उसनिजस खिचड़ में उतरा मेहनत से उस जालीको तोड़ा और संडासकी राह से चोर महलमेंगया औरतोंका लिवासबनाकर हरतरफदेखने

लगा भागनेपर एकमकानसे आवाज मेरे कानमें आई जैसेकोईमनाजात कररहाहै आगे जाकरदेखुतोमलकः है हालत से रोतीहै और नकघिसनी कर रहीहै और खुदा से दुआ माँगती है कि सदके अपने रसूल और उसके आल औलादके मुझे इस काफरिस्तान से निजातदे और जिस शख्सनेमुझे इस्लामकीराह बताई है उसे एकबार खैरियतसे मिला मैं देखते ही दौड़कर पाँव पर गिर पड़ा मलकः ने मुझे गले से लगाया पर बेहोशीका आलम होगया जब हवास बजा हुए मैंने कैफियत मलकः से पूछी बोली जब शाह बंदर सब लौंडियां को किनारेपर लेगया खुदा से दुआये माँगती थी कि कहीं राज फाश न हो और मैं पहिचानी न जाऊँ और तेरी जानपर आफत न आये वह ऐसी सतार है कि हरगिज किसी ने दरियाफ्त किया कि यह मलकः है कि शाह बंदर एक को बनजर खरीदारी देखता जब मेरी बारी हुई मुझे पसंद करके अपने घरमें चुपके भेजदिया और उनको बादशाह के हुजूर मे गुजराना मेरे

बाप्ने जब उनमें न देखा सबको रुखसत किया यह सब परपंच मेरे वास्ते किया था अब यों मशहूर किया है कि बादशाहजादी बहुत बीमार है अगर मैं हाज़िर न हुई तो कोई दिनमें मेरे मरने की खबर सारेमुल्क में उड़ेगी तो बदनामी बाद शाहकी होवे लेकिन अब मैं इस आवाज में हूं कि शाह वंदर मुझसे और इरादा दिलसे रखता है और हमेशा साथ सोनेको बुलाता है मैं राजी नहीं होती अबजबसे की चाहता है अबतक मेरी रजामंदी मंजूर है लिहाजा चुप हो रहता है पर हैरानहूँ इसतरह कहां तक निभेगी सो मैंने भी जी में यह ठहराया है मुझसे कुछ और कस्द करेगा तो मैं अपनी जान दूँगी और मर रहूँगी लेकिन तेरे मिलने से एक और तदबीर सोची है खुदा चाहेतो सिवाय इस फिक्रके दूसरी कोई मुखलिसी की तरह नजर नहीं आती है कहा फरमाओ तो वह कौनसी तदबीर है करें कहने लगी अगर तू सही और मेहनत करे तो हो सके मैंने कहा मैं फरमांबरदारहूँ हुक्मकरेतो

जलती आगमें कूदपड़ूँ सीढ़ीपाऊतो तुम्हारी खातिर आस्मानमें चलाजाऊं जो कुछ फरमाओ सो बजा लाऊँ मलकः ने कहातु बड़े बुतखाने में जा और जिस जगह जूतियां उतारते हैं वहांएक स्याह टाट पड़ा रहता है इसमुल्ककीरस्महै जो कोई मुफलिस और मुहताज होजाता है उस जगह वहटाट ओढ़ कर बैठताहै वहांके लोगजो ज्यारत को जाते हैं मुआफिक अपने मुकदूरके उसे देते हैं जब दो चार दिनमें माल जमा होता है तो एक खिलअत बड़े बुत की सरकार से देकरउसे रुखसत करते हैं वह तवंगर होकरचला जाताहै कोई नहीं मालुम करता यहकौन था तूभी जाकर उसपलासके नीचबैठ और हाथ मुँहसब छुपाले और किसी से न बोल बाद तीन दिन के ब्राह्मण और बुतपरस्त हरचंद तुझे खिलअत देकर रुखसत करें तू वहाँ से न उठना निहायत मिन्नत करे तब तू बोलियो कि मुझे रुपया पैसा कुछ दरकार नहीं मैं मालका भूखानहीं मैं मजलूमनहीं फरियाद को आया हूं अगर ब्राह्मणों

की माता दाददेतो बेहरतनहीं तोबड़ा बुतमेरा इंसाफ करेगा और उस जालिमसे भी बड़ा मेरी फरियादको पहुँचेगा जबतक मा ब्राह्मणों को आप तेरे पास न आये बहुतेरा कोई मनाये तू राजी न हूजियो आखिर लाचार होकर वह खुद तेरे नजर दीक आवेगी वह बहुत बुड्ढी दोसौ चालीस वर्ष की उम्र है और छत्तीस बेटे उसके जने हुए बुतखाने के सरदार हैं और उसके बड़े बुतके पास बड़ा दरजाहै इस सबबसे उनका इतना बड़ा हुक्म है कि जितने छोटे बड़े इस मुल्कके हैं उसके कहनेको अपनी शआदत जानते हैं जो वह फरमाती है बसरो चश्म मानतेहैं उसका दामन पकड़कर कहियोकि ऐ माई अगर मुझ मजलूस मुसाफिर का इंसाफ जालिम से न करेगी तो मैं बड़े बुत की खिदमत में टकरे मारूँगा आखिर रहेम खाकर तुझसेमेरा सिफारस करेगी जब वह तेरा हाल पूछे तू कहियो कि मैं अजम का रहने वाला हूँ बड़ेबुत की ज्यारत की खातिर तुम्हारी अदालत सुनकर

काले कोसों से यहां आया हूँ कई दिनों आराम से रहा मेरी बीबी भी मेरे साथ आई थी वह भी जवान है और सूरत शकल की अच्छी है आंख नाक दुरुस्त है मालूम नहीं कि शाह बँदरने उसे क्योंकर देखा वजीर मुझसे छीनकर अपने घर डाललिया और हम मुसल्मानोंका यह कायदा है कि जो महरम औरत को आनेके या देखे छीन लेवे तो वाजिब है कि उसको जिस तरह बने मारडाले और अपनी जोरूको लेले और नहीं तो खाना पानी छो· ड़दे क्योंकि वह जब तक जीता रहे वह औरत खाविंद पर हमाराह है अब यहां लाचार होकर आया हूं देखिये अब तुमक्या इंन्साफ करतीहो जब मलकः ने यह सब मुझे सिखापढ़ा दिया मैं रुखसत हो उसी नाबदान की राह निकला और जाली आहनी लगादी सुबह होते बुतखाने में गया और वह स्याह पलास ओढ़कर बैठा तीन रोज में इतना रुपया और अशर्फी कपड़ा मेरे नजदीक हुआ कि अम्बार लग गया चौथे दिन पंडे भजन करते

और गाते बजाते खिलअत लिये मेरे पास आये और रुखसत करने लगे मैं राजी न हुआ और दुहाई बड़े बुतको दी कि मैं गदाई करने नहीं आया बल्कि इंसाफ के लिये बड़े बुत और ब्राह्मणों की माता के पास आया हूं जब तलक अपनी दाद न पाऊँगा न जाऊँगा। वे सुन कर उसी पीर जाल के रोबरू गये और मेरा अहिवाल बयान किया बाद उसके एक चौबा आया और मेरे तईं कहने लगा कि चल माता बुलाती है मैं वोही टाट काला सिरसे पांव तलक ओढ़े हुए बुतखाने में गया क्या देखता हूँ कि एक जड़ाऊ सिंहासन पर जिस्में लाल वइल्मास और मोती मूंगा लगा हुआ है बड़ा बुत बैठा है और एक कुरसी-जड़ीपर फर्श माकूल बिछा है उस पर एक बुढ़िया स्याह पोश मसनद तकिये लगाये और दो लड़के दस बारह वर्ष के एक दहिने एक बायें शान शौकत और तअम्मुल से बैठे हैं मुझे आगे बुलाया मैं अदब से आगे गया और तख्त के पाये को बोसा दिया फिर उसका दामन पकड़ लिया उसने

मेरा अहवाल पूछा मैंने उसी तरह जिस तौर से म-
लकः ने तालीम कर दिया था जाहिर किया सुन
कर बोला कि मुसल्मान अपनी स्त्रियों को ओझल
में रखते हैं मैंने कहा तुम्हारे बच्चों को खैर हो यह
हमारी रसम कदीम की है बोली कि तेरा मजहब
अच्छा है अभी हुक्म करती हूं कि शाह बंदर मय
तेरी जोरू आन कर हाजिर होता है और उसी गद्दी
को ऐसी स्यासत करूँ कि बारे दिगर कोई ऐसी ह-
रकत न करै और सबके कान खड़े हों और डरें
और अपने लोगों से पूछने लगी कि शाह बन्दर कौन
है उसकी यह मजाल हुई बेगानी त्रिया को बजोरे
छीन लेता है लोगों ने कहा कि फलाना शख्श है
यह सुन कर लड़कों को जो पास बैठे थे फरमाया
कि जल्दी इस मानस को साथ लेकर बादशाह के
पास जाओ और कहो कि माता फरमाती है कि
हुक्म बड़े तुतकी यह है कि शाह बंदर आदमियों
पर जोर ज्यास्ती करता है इस गरीब कीऔरत को
छीन लिया है उसकी बड़ी तकसीर साबित जल्द

इस गुबार के मालूम होता कि इस नगर को कि हमारा मंजूर नजर है हवाले कर नहीं तो आज रात को सत्यानाश होगा और हमारे गजब में पड़ेगा वे दोनों तिफ्ल उठ कर मंडप से बाहर आये और सवार हुए सब पण्डे शंख बजाते और आरती करते जिलू में संग हो लिये गरज वहां के छोटे बड़े जहां लड़कों का पांव पड़ता था वहां की मिट्टी तबर्रुक जानकर उठा लेते और आंखों से लगा लेते इसी तरह बादशाह के किले तक गये बादशाह को खबर हुई नंगे पांव इस्तकबाल के लिये निकल आया और उनको बड़े मान महत से लेजाकर अपने पास तख्त पर बैठाया और पूछा आज क्यों कर तशरीफ फरमाना हुआ उन दोनों ब्राह्मणों के बच्चों ने मा की तरफ जो कुछ सुन आये थे कहा और बड़े बुतकी खफगी से डराया बादशाह फरमाया बहुत खूब और अपने नौकरों को हुक्म दिया कि सुहसिमल जावे और शाह बन्दर को मय उस औरत के हुजूर में हाजिर करे तो मैं तकसीर उसकी तजवीज

करके सजा दूँ यह सुनकर मैं अपने दिल में घबरा गया कि यह बात अच्छी न हुई अगर शाह बंदर के साथ मलकः को भी लाये तो परदा फास होगा और मेरी क्या हवाल होगा दिल में निहायत खौफ़ज़दा होकर खुदाकी तरफ रजूअ की लेकिन मेरे मुँहपर हवाइयाँ उड़ने लगी और बदन काँपने लगा लड़कों ने मेरा सा देखकर शायद दरियाफ्त किया कि यह हुक्म इसकी मरजी मुआफिक न हुआ वोही खफा और बेहम हो उठे और बादशाह को झिड़क कर बोले कि ऐ मर्दक तू दीवाना हुआ है जो फरमाबरदारी से बड़े बुतके निकला और हमारे वचन को झूठ समझा जो दोनो को बुलाकर तहकीक किया चाहता है अब खबरदार तू बड़े बुतके गजब में पड़ा हमने तुझे हुक्म पहुँचा दिया अब तू जान और बड़ा बुत जाने इसके कहने से बादशाह की अजब हालत हुई कि हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया और सिर से पांव तक राश हो गया मिन्नत करके मनाने लगा यह दोनों हर-गिज न बैठे लेकिन खड़े रहे इसमें जितने अमीर

उमराव वहाँ हाजिर थे एक मुह होकर बदगोइ शाह
ंदर की करने लगे कि वह ऐसाही हरामजादा
ादकार और पापी है ऐसी एसी हरकत करता है कि
हुजूर में बादशाह के क्या २ अर्ज करें जो कुछ
ब्राह्मणों की माता ने कहला भेजा है दुरुस्त है इस
ास्ते कि हुक्म बड़े बुतका है वह दरोग क्यों कर
ोगा बादशाह ने जब सबकी जबानी एकही बात
सुनो अपने कहने से बहुत खिजल औरनादिम हुआ
तरह एक खिलअत पाकिजः मुझे दे और एकरार
ामा अपने हाथ से लिख उस पर दस्ती मुहर करके
ेरे हवाले किया और एक रुक्का ब्राह्मणों की माता
ो लिखा और जवाहिरात अशर्फियों के ख्वान
ाड़को के रूबरू पेश कशरखकर रुखसत किया मैं
ुशोवखुशी बुतखाने में आया और उस बुढ़िया के
ास गया बादशाह का जो खत आया था उसका
ाह मजमून था अलकाब के बाद बँदगी अजीज व
ियाज बना कर लिखा कि मुवाफिक हुक्म हुजूर
े इस मर्दमुसल्मान को खिदमत शाह बन्दर की

मुकर्रिर हुई और खिलअत दिये गये अब उसके कतल करने का मुख्तार है और सारा माल व असबाब उसका इस तुर्क का हुआ जो चाहै सो करै उम्मेदवार हूँ कि मेरी तकसीर माफ हो ब्राह्मणों की माता ने खुश होकर फरमाया कि नौबत खाने में बुतखाने की नौबत बजे पाँचसौ सिपाही बर्कन्दाज मेरे साथ कर दिये और हुक्म किया कि बन्दर में जाकर शाह बंदर का दस्तगीर करके इस मुसल्मान के हवाले करे जिस तरह के अजाब से इसका जी चाहै उसे मारे और खबरदार सिवाय इस आजिज के कोई महल सरामें दाखिल न होवे और उसके माल और खजाने का जो अमानत है इसके हवाले करे जब यह खुशी बखुशी रुखसत करे रसीद और माफी नामा इस से लेकर फिर आवैं और एक सरापा बुत बुजुर्ग को सरकार से देकर मेरे तईं सवार करवाके बिदा किया जब मैं बन्दर में पहुँचा एक आदमी ने बढ़कर शाह बन्दर को खबर की वह हैरान सा बैठा था कि मैं जो पहुँचा गुस्सा तो दिल

में र [. रहा था देखते ही शाह बन्दर को तलवार खेंच कर ऐसी गर्दन में लगाई कि उसका सिर भुट्टासा अलग उड़ गया और वहां के गुमाश्ते और खजानची और दरोगे को पकड़वा कर सब दफ्तर जब्त किये और मैं महल में दाखिल हुआ मलकः से मुलाकात हुई आपस में गले लग कर रोये और शुक्र खुदा का किया मैंने उसके उसने मेरे आँसू पोंछे फिर बाहर मसनद पर बैठ कर अहलकारों की खिलअत दी और अपनी २ खिदमतों पर सबको ब खयाल नौकर और गुलामों को सरफराजी दी वह लोग जो महल से मेरे साथ आये थे हर एक को इनाम और बखशिश देकर उनके जमादार रिसालदार को कपड़े पहना कर रुखसत किया और जवाहरबेश कीमती और थान नूरबाफी और शालबाफी और जरदोजी और जिस तुहफ हर एक मुल्क के और नक्द बहुतसा बादशाह के नजर की खातिर और मुवाफिक हर एक उमराओं को दर्जे बदर्जे पंडयान के लिये और सब पंडों के

तकसीम की खातिर अपने साथ लेकर बाद एक हफ्ते के मैं बुत कदे में आया और उस माता के आगे बतरीक भेट के रक्खा उसने एक और खिलअत सरफ़राजी का मुझे बखशा और खिताब दिया फिर बादशाह के दरबार में पेश गुजरानी और जो जो जुल्म फसाद और शाहबंदर ने ईजाद किया था उसके मौकूफ़ करने की खातिर अर्ज की इस सबब से बादशाह और अमीर और सौदागर सब मुझसे राजी हुए बहुत नवाजिश मुझ पर फरमाई और खिलअत और घोड़ा देकर मंसब जागीर इनायत की और आबरू हुरमत बखशी जब बादशाह के हुजूर से बाहर आया शागर्द पेशों को और अहल कारों को इतना कुछ देकर राजी किया कि सब मेरा कलमा पढ़ने लगे गरज मैं मुरफ़उल हाल होगया और निहायत चैन और आराम से उस मुल्क में मल्कः से अकद बांध कर रहने लगा और खुदा की बंदगी करने लगा मेरे इन्साफ़ के बाइस रय्यत प्रजा सब खुश थे महीने में एक बार बुत

खाने और बादशाह के हुजूर में आता जाता बाद-
शाहरोज बरोज ज्यादा सरफराजी फरमाता आखिर
मुसाहिबत में मुझे दाखिल किया मेरो बेसलाह
कोई काम न करता था निहायत बे फिकरी से
जिंदगी कटने लगी मगर खुदा ही जानता है अक्-
सर अन्देशा इनदोनों भाइयों के दिल में आया
कि वे कहां होंगे और जिस तरह होंगे बाद मुद्दत
दो बरस के एक काफिला सौदागरों का मुल्क
जेरबाद से उस बंदर में आया वे सब कस्द अजम
का रखतेथे उन्होंने यह चाहा कि दरियाकी राह से
अपने मुल्क को जावें वहांका यह कायदा था कि
जो कारवां आता उसका सरदार सौगात और
तुहफा हरएक मुल्कका मेरे पास लाता और नजर
गुजराता दूसरे रोज मैं उसके मकानपर जाता
वह वाकैवतरीक महसूलके उनके मालसे लेताऔर
परवानगी कूचकी देता इसी तरह वह सौदागर
जेरबादके भी मेरी मुलाकातको आये और वे
वहां पेशकश आये दूसरे दिन उनके खेमे में मैं

गया देखा कि दो आदमी फटे पुराने कपड़े पहने गठरी बुगची सिर पर उठाकर मेरे रोबरू लाते हैं और बाद मुलाहिजा करनेके फिर उठा ले जाते हैं और बड़ी खिदमतसे मेहनत कर रहे हैं मैंने खुब पहचान कर जो देखा तो यही मेरे दोनों भाई हैं उसवक्त गैरत और हमय्यत न चाहा कि उनको इस तरह खिदमतगारीमें देखुं जब मैं अपने घरको चला आदमियों को कहा कि इन दोनों शख्सोंको लिये आओ जब उनको लाये फिरलिवास और पोशाक बनवादी और अपने पास रक्खा इन बदजातोंने फिर मेरे मारनेका मंसूबा कर एकरोज आधी रातमें सबको गाफिल पाकर चोरोंकी तरह मेरे सिरहाने आ पहुँचे मैंने अपनी जानके डरसे चौकीदारोंको दरवाजे पर रक्खा था और यहकुत्ता वफादार मेरी चारपाई की पट्टीकी तले सोताथा ज्यों इन्होंने तलवारें मियानसे निकाली पहले कुत्तेने भोंककर उनपर हल्ला किया उसकी आवाज से सब जाग पड़े मैं

भी हड़बड़ाकर चौंका आदमियोंने उनको पकड़ा मालूम हुआ कि आपही हैं सब इनको लानतें देने लगे कि बावजूद इस खातिरदारीके यह क्या उनसे हरकत जहूरमें आई बादशाह सलामत तबतो मैं भी डरा मसल मशहूर है एकखता दो खता तीसरा खता मादर बख्ता दिलमें भी सलाह ठहरी कि अब इनको मुकैदकरूँ लेकिन बंदीखाने में रक्खूं तो इनका कौन खबरगीर होगा भूख प्यासमें मर जायंगे या कोई और स्वांग लायेंगे इस वास्ते कफसमें रक्खा है कि हमेशा मेरी नजरों के तले रहेंगे तो मेरी खातिर जमार हे मुबादा कि आँखोंसे ओझल होकर कुछऔर फिक्र करें और इस कुत्ते कि इज्जत और हुरमत उसकी नमक हलाली और वफादारी सबका है सुभानअल्ला आदमी बेवफा बदतर हैवान बावफासे हैं मेरी यहसरगुजश्त जो हुजूर में अर्जकी अबख्वाह कतल फरमाइये याजानबख्शी कीजिये हुक्म बादशाह काहै मैंने यह सुनकर उस जवान के ईमानपर

आफरीं और कहा कि तेरी मुरव्वतमें कुछ खलल नहीं और इनको बेहयाई और हरामजादगीमें हरगिज कुछ कसूर नहीं सचहै कुत्तेकी दुमको चौदह वर्ष गाड़ो तो भी टेढ़ीकी टेढ़ी रहेगी उसके बाद मैंने हकीकत उन बारहों लाल की कि उस कुत्ते के पट्टे में थे पूछी ॥

किस्सा आजुरबावजान के सौदागर बच्चे का

ख्वाजह बोला बादशाह की १२० बर्स की उमर हो उसी बन्दर में जहां मैं हाकिम था बाद तीन चार साल के एक रोज बाला खाने पर महल के कि बुलन्द था वास्ते सैर और तमाशे दरिया और सरा में बैठा था और हर तरफ देखता था नागाह एक तरफ ज़ंगल में कि शाह राह न थी दो आदमी की तसवीर उसजा नजर आई कि चले जाते हैं दुरबीन लेकर देखा तो अजब शकल के इन्सान दिखाई दिये चोबदारों को उनके बुलाने के

वास्ते दौड़ाया जब वे आये मालूम मलकः के पास भेज दिया और मर्द को रोबरू बुलाया देखाकि एक जवान बीस बाइस बर्ष का डाढ़ी मूछ आगाह है लेकिन धूपकी गरमी से उसके चेहरे का रंग काले काले कासा होरहा और सिर के बाल और हाथों के नाखून बढ़ कर बनमानुस की सूरत का हो रहा है और एक लड़का तीन चार वर्ष कांधे पर और दो आस्तीने कुरते की भरी हुई हैं कल की तरह गले में डारे अजब सूरत व अजब वजह उसकी देखी मैंने निहायत हैरान होकर पूछा ऐ अज़ीज तू कौन है और किसमुल्क काबाशिंदा है और यह क्या तेरी हाजतहै वह जवान बेअख्त्यार रोने लगा और हमियानी खोलकर मेरे आगे जमीन पर रक्खी और बोला वास्ते खुदा के कुछ खाने को दो मुद्दतसे घास और बनासकी पत्तियां खाता और चलाआता हूं एक ज़रा कुव्वत मुझमें बाकी न रही वोंही नान और कबाब मैंने मंगवादी हव खाने लगा इतने में ख्वाजेसरा महल से कई थैलियां

उनके कबीले केपास ले आया मैंने उन सबको खुल-
वाया हरएक किस्म के जवाहर देखे कि एक २ दाना
उनका खिराज सल्तनत का कहना चाहिये एक से
एक अनमोल डोल में और तौल में और आब-
दारी में और उनकी जोत पड़ने से सारा मकान रंगा
होगया जब उनसे टुकड़ा खाया और एक जाम
दारू का पिया और दमलिया इवास बजा हुए मैंने
पूछा यह पत्थर तुझे कहां हाथ आये जवाब दिया
कि मेरा वतन विलायत आज़ुर बाबजां हैं लड़क
पनमें घर बाहर मा बाप से जुदा होकर बहुत सख्ति-
यां खैंची और एक मुद्दत तकमैं ज़िंदहे दरगोर रहा
और कईबार मलिकुल मौतके पञ्जेसे बचा हूं मैंने
कहाऐ मर्द आदमी मुफ़स्सिल कहे तोमालूम हो तब
वह अपना अहवाल बयान करने लगा कि मेरा
बाप सौदागर पेशथा हमेशः सफ़र हिन्दुस्तान और
रूम और चीन और फरंग का करता जब मैं दस
बरस का हुआ बाप हिन्दुस्तान को चला मुझे
अपने साथले जानेको चाहा हरचन्द वालदः ने और

मामी फूफी ने कहा कि अभी लड़का है लायक़
सफ़र के नहीं हुआ वालिद नेन माना और कहा
कि मं बूढ़ा हुआ अगर यह मेरे रोबरू तरबियत
न होगा तो यह हसहत गोर में ले जाऊँगा मर्द
बच्चा है अब नहीं सीखेगा तो कब सीखेगा यह कर
मुझे ख्वामख्वाह साथ लिया और रवानः हुआ
ख गफ़ियतसे राहकटी जब हिन्दुस्तान में पहुँचे
कुछ जिन्स वहां बेची मैं वहांकी सौगातें लेकर जेर
बाद के मुल्क को गया यहभी सफ़र बखूबी हुआ
वहांसे भी खरीद फरोख्त करके जहाज पर सवार
हुआ कि जल्दी वतन को पहुंचे बाद एक महीने
के एक रोज आधी रातको तूफान आया और मेह
मूसलाधार बरसने लगा मारी जमीन आसमान
धुआंधार होगया और पतवार जहाजको टूटगई
मोअल्लम नाखुदा सिर पीटने लगे दसदिन तक
हवा और लहर जिधर चाहती थी उधर ले जाती
थी ग्यारहवें रोज एक पहाड़से टक्कर खाके जहाज
पुरजे २ होगया यहन मालूम हुआ बापऔर नौ-

कर चाकर असबाब कहां गया मैंने अपने तई एक तख्तेपर देखा तीनदिन और तीनरात बेड़ा बेइख्तयार चला गया चौथा दिन किनारे लगा मुझमें फक्त जान बाकीथी उस परसे उतरकर घुटनोंसे चलकर वारे किस तर जमीन पर पहुँचा दूसरे खेत नजर आया और बहुत से आदमी वहां जमा थे लेकिन सियेफाम नंगे मादरजादमुझसे कुछन बोले लेकिन मैंने उनकी जवान मुतलक न समझी वह खेत चनोंका था वे आदमी आगका अलाप जलाकर बूटोंके होले करते और खाते थे और वहीं बसते थे मुझे भी इशारत करने लगेकि तू भी खा मैंनेभी एकमुट्ठी उखाड़ कर भूने और फाकने लगा थोड़ा सा पानी पीकर एक गोशेमें सो रहा बाद देरके जब जागा उनमें से एक शख्स मेरे नजदीक आया और राह दिखाने लगा मैंने थोड़े से चने और उखाड़ लिये और उस राहपर चलाएक कफेदस्त मैदानथा गोया सहराय कयामात का नमूना कहना चाहिये वहीबूट खाता हुआ चला जाता था बाद चार

दिन के एक किला नजर आया जब पास गया तो एक कोट देखा बहुत बुलन्द तमाम पत्थरका और हरएक अलंग उसके दो दो कोसके और दरवाजा एक संगका तराशा हुआ एक कुल्ल बड़ा सा जड़ा था लेकिन वहां इन्सान का निशान नजर न पड़ा वहांसे आगे चला एक टीला देखा कि उसकी खाक सुरमे की रंग स्याहथी जब उस टीले के पार हुआ तो एक शहर नजर पड़ा बहुत बड़ा गिर्द शहर पनाह और जा बजा बुर्ज एक शहरके दरिया था बड़े फांटका जाते २ दरवाजे पर गया और बिसमिल्लाह कहकर कदम अन्दर रक्खा एकशख्श को देखा पोशाक अहल फरंग को पहने हुए कुरसी पर बैठा है ज्यों मुझे अजनबी मुसाफिर देखा और मेरे मुंहसे बिस्मिल्लाह सुनी पुकारा कि आगे आओ मैंने जाकर सलाम किया निहायत मेहरबानी से सलाम का जवाब दिया तुर्त मेज पर पुलाव रोटी और बिस्कुट और मुर्ग का कबाब और शराब रखकर कहा पेटभो

कर खाओ मैंने थोड़ा सा खाया और पानी पिया और बेखबर होकर सोरहा जब रात होगई आँख खुली हाथ मुँह धोया फिर मुझे खाना खिलाया और कहा ऐ बेटा अपना अहवाल कह जो कुछ मुझ पर गुजरा कह सुनाया बोला यहाँ तू क्यों आया मैंने दिक्क होकर कहा शायद तू दीवाना है मैंने बाद मुद्दत के बस्ती की सूरत देखी है खुदा ने यहां तक पहुँचाया और तू कहता है क्यों आया कहने लगा अब तू आराम कर कल जो कहना होगा कहना सुबह हुई बोला कोठरी में फाड़वा और चलनी और तोबड़ी है बाहर ले आ मैंने दिल में कहा कि खुदा जाने खिला कर क्या मिहनत मुझसे लेगा लाचार वह सब निकाल कर उसके रोबरू लाया तब उसने फरमाया कि उसी टीले पर जाकर और एक गज़ के माफिक गड्ढा खोद वहां से जो कुछ निकाले उसे चलनी में छान जो न छन सके उसे इस तोबरे में भर कर मेरे पास ला मैं सब चीजें लेकर वहां गया

और उतना ही खोद कर छान छून कर तोबड़े में डाल देखा तो सब जवाहर रंग बरंग के थे उनकी जोत से आंखें चौंधिया गईं उसी तरह थैले को मुँहामुँह भर कर उस अजीज के पास लेगया देखकर बोला जो इसमें भरा है तूले और यहां से जा कि तेरा रहना इस शहर में खूब नहीं मैंने जवाब दिया कि साहब ने अपनी जानिब में बड़ी मेहरबानी की इतना कुछ कंकर पत्थर दिया लेकिन मेरे किस काम का है जब भूखा हूंगा तो इनको चबा सकूंगा न पेट भरेगा पस अगर और भी दो तो मेरे किस काम आवेंगे वह मर्द हँसा और कहने लगा कि मुझको तुझ पर अफसोस आता है कि तू भी हमारे मानन्द मुल्क अजब का मुतवतन है इस लिये मैं मने करता हूं नहीं तू जान अगर ख्वाह न ख्वाह तेरा यही कस्द है कि शहर में जाऊँ तो मेरी अँगूठी लेता जा जब बाजार के चौक में जाय तो एक शख्स सफेद दरेश पहने वहां बैठा होगा उसकी सूरत शकल मुझसे

मुशाव: है मेरा बड़ा भाई है उसको यह छाप दीजियो तो वह तेरी खबरगीरी करैगा और जो वह कहे उसी के मुवाफ़िक़ कीजिये नहीं तो मुफ़्त मारा जायगा और मेरा हुक्म यहीं तक है शहर में मेरा दखल नहीं मैं उसे वह खातिम ले और सलाम करके रुखसत हुआ शहर में गया बहुत खासा शहर देखा कूचा बाजार साफ़ और जन और मर्द बेहिसाब आपस में खरीद फरोख्त करते सब खुश लिबास मैं सैर करता और तमाशा देखता चौकके चौराहेमें पहुँचा ऐसा अज़दहाम था कि थाली फेंके तो आदमियों के सिर पर चली जाय खलक़त का यह ठट्ठ बंध रहा था कि आदमी को राह चलाना मुश्किल था जब कुछ भीड़ छटी मैं धक्क धक्का करता हुआ आगे गया बारे उस अज़ीज़ को देखा कि एक चौकी पर बैठा है और एक जड़ाऊ चकमक रोबरू धरा है मैंने जाकर सलाम किया और वह मुहर दी नज़र गज़ब से मेरी तरफ़ देखा और बोला क्यों तू यहां आया और अपने तईं

बला में डाला मगर मेरे बेवक़ूफ़ भाई ने तुझे मना न किया उन्होंने तो कहा मैं ने न माना और तमाम कैफ़ियत अव्वल से आख़िर तक कह सुनाई वह शख़्श उठा और मुझे साथ लेकर अपने घर की तरफ़ चला उसका मकान बादशाहों का सा देखने में आया और बहुत से नौकर चाकर उसके थे जब ख़िलवत में जाकर बैठा व मुलायमत बोला कि ऐ फ़रज़ंद यह क्या तूने हिमाक़त की कि अपने पांव से गोर में आया कोई भी इस कम्बख़्त तिलि-स्माती शहर में आता है मैं ने अपना हाल पेश्तर कह चुका हूं अब तो क़िस्मत ले आई लेकिन शफ़क़त फ़रमा कर यहां की राह रसम से मुत्तल्ले कीजिये तो मालूम करूँ कि इस वास्ते तुमनें और तुम्हारे भाई ने मुझे मना किया जब वह जवां मर्द बोला कि बादशाह और तमाम रईस इस शहर के सधे हुए हैं अजब तरह का उनका ख़-याल और मज़हब है यहां बुतख़ाने में एक बुत है कि शैतान उसके पेट में से नाम और ज़ात और

दीन हर किसी का बयान करता है पस जो कोई गरीब मुसाफ़िर आता है बादशाह को ख़बर होती है उसे मंडप में ले जाता है और बुतका सि-ज़दा करवाता है अगर दंडवत की तो बेहतर नहीं तो बिचारे को दरिया में डुबो देता है अगर वह चाहै कि दरिया से निकल कर भागे तो आलत और सुखिये उसके लम्बे हो जाते हैं ऐसे कि जमीन से घसिटते हैं मारे बोझ के वह हरगिज चल नहीं सक्ता ऐसा कुछ तिलिस्म इस शहर में बनाया है मुझको तेरी जवानी पर रहम आता है और तेरी खातिर एक तदबीर करता हूं कि भला कोई दिन तो जीता रहै और इस अजाब से बचे मैंने पूछा वह क्या सूरत तदबीर की है इरशाद हो कहने लगा तुझे कत खुदा करूँ और वजीर की लड़की तेरी खातिर ब्याह लाऊँ मैंने जवाब दिया कि वजीर अपनी बेटी मुझसे मुफ़लिस को कब देगा मगर जब उनका दीन कबूल करूँ सो यह मुझसे न हो सकेगा कहने लगा इस शहर की रश्म है जो कोई

उस बुत का लिजदा करै और फकीर हो और बादशाह की बेटी को मांगे तो उसकी खुशी की खातिर हवाले करे और उसे रंजीदः न करै और मेरा भी बादशाह के नजदीक ऐतबार है अजीज रखता लिहाजा सब अरकान और अकाबिर यहां के मेरी कदर करते हैं और दरम्यान एक हफ्ते के दो दिन बुतखाने में ज्यारत को जाते हैं और इबादत बजा लाते हैं चुनांचेः कल सब जमा होवेंगे मैं तुझे भी ले जाऊँगा यह कहकर खिला पिला कर सुला रक्खा सुबह हुई मझे साथ ले बुतखाने की तरफ चला वहां जाकर जो देखा तो आदमी आते हैं और परिस्तश करते हैं बादशाह और अमीर बुनके सामने पंडों के पास सिर को नंगे किये अदब से दो जानू बैठे थे और नाकत खुदा लड़के और लड़कियां खूब सूरत जैसे हूर वगिल्मान चारों तरफ सफ बांधे खड़े थे तब अजीज मुझसे मुखातिब हुआ कि अब मैं जो कहूं सो कर और मैंने कबूल किया कि जो फरमाओ सो बजालाऊँगा

बोलाकि पहले बादशाह के साथ पाँवों को बोसा दे बाद उसके वजीर का दामन पकड़ मैंने वैसाही किया बादशाह ने पूछा कि यह कौन है और क्या कहता है उस मर्दने कह यह जवान मेरे रिश्ते में है बादशाह की कदम बोसा की आरजू दूरसे आया है इस तवक्के पर की वजीर उसको अपनी गुलामी में सर बुलंद करे अगर हुक्म बड़े बुनका और मरजी हुजूरकी होवे बादशाह ने पूछा किहमारा मजहब और ईमान कबूल करेंगातो मुबारिकहै वोंही बुतखाने का नक्कारखाना बजने लगा और भारी खिलअत मुझे पहनाई और एक रस्सी स्याह मेरे गले में डाल कर खींचते हुये बुतके सिंहासन के आगे ले जाकर सिजदा करवा कर खड़ा किया बुतसे आवाज निकली कि ऐ ख्वाजः जादे खूब हुआ कि तू हमारी बन्दगी में आया और हमारी रहमत और इनायतका उम्मेदवार रह यह सुनकर सब खलकत ने सिजदा किया और जमीन में लोटने लगे और पुकारे धन्य है क्यों न हो तुम ऐसे ही

ठाकुर जब शाम हुई बादशाह और वजीर सवार होकर महल में दाखिल हुए वजीर की बेटी को अपने तौर की रीत रसम करके मेरे हवाले किया और बहुत सा दान दहेज दिया और बहुत मिन्नतदार हुए कि बमूजिब बड़े बुन के उसे तुम्हारी खिदमत में दिया एक मकान में हम दोनों को रक्खा उस नाजनीन को जो मैं ने देखा तो फिलवा के उसका आलम परी का सा था नख सिख से दुरुस्त जो जो खूबियाँ पद्मिनी की सुनी जाती हैं सो सब उसमें मौजूद थीं बफ़ारत तमाम सोने सुबह की और हज्जउठा सुबहको गुसल करके बादशाह के मुजरे में हाजिर हुआ बादशाह ने खिलअत दामादी की इनायत की और हुक्म फ़रमाया कि हमेशा दरबार में हाजिर रहाकर आखिर को बाद चन्दरोजके बादशाहकी मुसाहबत में दाखिल हुआ बादशाह मेरी सुहबत से महजूज़ होते और अक्सर खिलअत और इनाम इनायत करते अगरचेः दुनियां के माल से मैं ग़नी था इस वास्ते कि मेरे

क़बीले के पास इतना नकद व जवाहर था कि जिसकी हद व निहायत न थी दो साल तक ऐश और आराम से गुजरा इत्तफ़ाकन वजीरजादीको पेट रहा जब सतवांसा हुआ और अनगिना महिना गुजरा पूरे दिन हुये पीरें लगीं दाई जनाने आई तो मुआ लड़का पेट मेंसे निकला उसका विष जच्चा को चढ़ा वहभी मर गई मैं मारे गम के दिवाना होगया कि यह क्या कयामत टूटी उसके सिरहाने बैठा रोता था कि यक बारगी रोने की आवाज सारे महलमें बुलन्द हुई और चारों तरफ से औरतें आने लगीं जो आती एक दुहत्थड़ मेरे सिरपर मारता और तमाम जिस्मको नंगी करके मेरे मुकाबिल खड़ी रहती और शुरू करती इतनी रण्डियां इकट्ठी हुई कि मैं उनके झुण्ड में छिप गया नजदीक था कि जान निकल जाय इतने में किसी ने पीछे से गिरेवान खींचकर घसोटा देखों तो वही मर्द अजमी है जिसने मुझे व्याहा था कहने लगा कि अहमक तू किस लिये रोता है

मैंने कहा ऐ जालिम तूने यह क्या बात कही मेरी बादशाहत लुट गई आराम खाना: दारी का गया गुजरा तू कहता क्यों गम करता है तबस्सुम करके बोला कि अब अपनी मौतकी खातिर रोने मैंने पहले ही तुझसे कहा था कि शायद इस शहर में तुझे तेरी अजल ले आई है सोई हुआ अब सिवाय मरने के तेरी रिहाई नहीं आखिर लोग मुझे पकड़ कर बुनखाने में ले गये देखा तो बादशाह और छत्तीस फ़िरकः रैय्यत और परजा वहां जमा है और वजीरजादी की माल अस्बाब सब धरा है जो चीज जिसका जी चाहता है लेता है और उसकी कीमत धर देता है गरज सब अमबाब के रुपये नक्द हुए इन रुपयों का जवाहर खरीदा गया और येक संदूकचे में नान हलुआ और गोश्त के कबाब और मेवा खुश्क व तर और खाने की चीजें लेकर भरीं और लाश उस बीबी की एक संदूक में रख कर दूसरा संदूकचा जवाहर का मेरी ऊँट पर लदवाया और मुझे सवार किया

और संदूकचा जवाहर का मेरी बग़ल में दिया और सारे ब्राह्मण आगे आगे भजन करते और संख बजाते चले और पीछे एक खलकत मुबारिक देती हुई साथ हुई इस तौर से उसी दरवाजे से कि मैं पहले रोज़ आया था शहर के बाहर निकला ज्योंही दरोगा की मुझपर नजर पड़ी रोने लगा और बोला कि ऐ कमबख्त अजल गिरिफ्त मेरी बात न सुना और शहर में जाकर मुफ्त अपनी जान दी मेरी तकसीर नहीं मैंने मना किया था यह बात कह लेकिन मैं तो हक्का हो रहा था न जबान यारी देती थी कि जवाब दूं न ओसान बजा थे कि देखिये अञ्जाम मेरा क्या होता है आखिर उसी क़िले के पास जिसका मैंने पहले रोज दरवाजा बन्द देखा था ले गये बहुत से आदमियों ने मिल कर कुफ़्ल खोला ताबूत और संदूक को अन्दर ले गये एक पण्डित मेरे नजदीक आया और समझाने लगा कि मानस एक दिन जन्म पाता है और एक रोज़ नाश होता है दुनियाँ

योंहीं आवागमन है अब यहाँ तेरी स्त्री और पूत
और धन और चालिस दिन का असबाब भोजन
का मौजूद है इसको ले और यहाँ रह जब तक
बड़ा बुत तुझ पर मेहरबान होवे मैंने गुस्से में
चाहा कि उस बुत पर और वहाँ के रहने वालों
पर और उस रीत रसमपर लानत करूँ और उस
ब्राह्मण को धौल धक्कर करूँ वही मर्द अजमी अपनी
जबान में माने हुआ कि खबरदार हरगिज दम मत-
मार अगर कुछ भी बोला तो इसी वक्त तुझे जला
देंगे फेर जो तेरी किस्मत में था सो हुआ अब खुदा के
करम से उम्मेदवार रह शायद तुझे यहां से अल्लाह
जीता निकाले आखिर मुझे सब तनहा छोड़कर
उस हिसार से बाहर निकले और दरवाजा फिर
बन्दकर दिया उस वक्त मैं अपनी तनहाई और
बेबसी पर बेअख्तयार रोया औरत की लाश पर
लात मारने लगा कि ऐ मुर्दार अगर तू जीती ही
मर जाती तो ब्याह काहे को किया था और पेट
से क्योंही हुई थी मारमूर कर चुपका बैठा था इ-

समें दिन चढ़ा और धूप गरम हुई सिर का भेजा पकने लगा तअफुन के मारे रूह निकलने लगी जिधर देखता हु मुर्दों की हड्डियाँ और सन्दूक जवाहर के ढेर लगे हैं तब कोई सन्दूक पुराने लेकर नीचे ऊपर रक्खे दिन को धूपसे और रात को ओससे बचाव हुआ आप पानी की तलाश करने लगा एक तरफ झरना सा देखा कि किले की दीवारसे पत्थर का तराशा हुआ घड़ेके मुँह के मुआफिक है वारे कई दिन उस पानी और खाने से जिन्दगी हुई आखिर आजूकः तमाम हुआ मैं घबराया खुदा जनाबमें फर्याद की वह ऐसा करीम है दरवाजा कोट का खुला और एक मुर्देको लाये उसके साथ एकपीर मर्द आया जब उसे भी छोड़ कर गये यह दिल मे आया कि सन्दूक इस बुड्ढे को मार कर उसके खाने का सबका सब लेलें एक सन्दूक का पाया हाथ में लेकर उसके पास गया वह बिचारा सिर जानु पर धर हैरान बैठा था मैंने पीछे से आकर उसके सिर में ऐसा

मारा कि सिर फटकर मगज निकल पड़ा और
फिलफौर जान बहक तसलीम हुआ उसका आजूका
लेकर मैं खाने लगा मुद्दत तक यही मेरा काम था
कि जो जिंदा मुर्दे के साथ आवे उसे मैं मार डालता
और खाने का असबाब लेकर बफ़ागत खाता
बाद कितनी मुद्दत के एक मरतबे एक लड़की
ताबूत के हमराह आई निहायत कबूल सूरत मेरे
दिलने चाहा कि उसे भी मारूँ उसने मुझे देखा
और मारे डरके बेहोश होगई मैं उसका आजूकः
उठा कर अपने पास ले आया लेकिन अकेला म
खाता जब भूख लगती खाना उसके नजदीक ले
जाता और साथ मिलकर खाता जब उस औरतने
देखा कि मुझे यह शख्स नहीं सताता दिन ब दिन
उसकी वहसत कम हुई आराम होगी चली मेरे
मकान पर आने जाने लगी और एकरोज उसका
अहवाल पूछा कि तू कौन है उसने जवाब दिया
कि मैं बादशाह के वकील मुतलक की बेटीहूं अपने
चाचा के बेटे के साथ मंसूब थी सवे उरूसी के दिन,

उसे कोलंज हुआ ऐसा दर्द से तड़फने लगा कि
एक आनकी आनमें मरगया मुझे उसके तावूत के
साथलाकर यहाँ छोड़ गये हैं तब उसने मेरा अ-
हवाल पूछा मैंने भी तमाम हाल बयान किया और
कहा खुदाने तुझे मेरी खातिर यहाँ भेजा है वह
मुसुकरा कर चुपकी हो रही उसी तरह कई दिनमें
आपस में मुहब्बत ज्यादह हो गई मैंने उसे अरकान
मुसल्मानी के सिखाकर कलमा पढ़ाया और मता
करके सुहबत की वह भी हामिलः हुई एक बेटा पैदा
हुआ करीब तीन बर्सके इसी सूरत से गुज़रे जब
लड़के का दूध बढ़ाया और एक रोज बीबीसे कहा
यहाँ कब तलक रहेंगे और किस तरह यहाँसे
निकलेंगे वह बोली खुदा निकाले तो निकलें नहीं
तो एक रोज योंही मर जायँगे मुझे उसके कहने
पर और अपने रहने पर कमाल दिक्कत आई रोते
२ सो गया एक शख्स को ख्वाब में देखा कि कहता
है पनाल की राहसे निकलता है तो निकल मैं मारे
खुशी के चौंक पड़ा और जोरू को ; कहा कि

लोहे की मेखें जो पुराने सन्दूक में हैं जमा करके ले आओ तो ऐसी कुशादा करूँ गरज मैं उस मोरी के ऊपर मेखें रखकर पत्थरों से उसको ठोकता कि थक जाता एक बरस की मेहनत में वह सुराक इतना बड़ा हुआ कि आदमी निकल सके बाद उसके मुरदों की आस्तीनों से अच्छे २ जवाहर चुनकर भरे और साथ लेकर उसी राहसे हम तीनों बाहर निकले खुदा का शुक्र किया और बेटे को कांधे पर बैठाया मगर एक महीना हुआ कि राह छोड़कर मारे डरके जङ्गल पहाड़ों की राह से चला आताहूँ जब भूक लगता है घास पात खाता हूँ कुव्वत बात कहने की मुझमें नहीं यह मेरी हकीकत है जो तुमने सुनी बादशाह सलामत मैंने उसकी हालत पर तरस खाया और हम्माम करवा कर अच्छा लिबास पहनवाया और अपना नायाब बनाया और मेरे घरमें मलकः सेकई लड़के पैदा हुए लेकिन खुर्दसाली में मरगये एक बेटा पांच बरस का होकर मुआ उसके गममें मलकः ने भी वफात पाई मुझे

कमाल गम हुआ और वह मुल्क बगैर उसके काटने
लगा कि दिल उदास होगया और इरादा अजम
का किया बादशाह से अर्जकर खिदमत शाहबन्दर
की उस जवान को दिलवादी इस अर्से में बादशाह
भी मरगया मैं इस वफ़ादार कुत्ते को और सबमाल
खजाना जवाहर साथ लेकर नैशापुर में आया इस
वास्ते की मेरे भाइयों के अहवाल से कोई वाकि-
फ़ न होवे मैं ख्वाजः सगपरस्त मशहूर हुआ और
इस बदनामी से दुगना महसूल आज तक बाद-
शाह ईरान की सरका में भरता हूँ इत्तिफाकन यह
सौदागर बच्चा वहाँ गया इसके वसीले से जहाँ-
पनाह का कदम बोस हुआ मैंने पूछा क्या तुम्हारे
फरजन्द नहीं ख्वाजे ने जवाब दिया किब्ल: आलम
यह मेरा बेटा नहीं आपही की रैयत है लेकिन अब
मेरा मालिक और वारिस जो कुछ कहिये यही है
यह सुनकर सौदागर बच्चे से मैंने पूछाकि तू किस
ताजर का बेटा है और तेरे माँ बाप कहाँ रहते हैं
उस लड़के ने जमीन चूमी और जानकी अमा

माँगी और बोला कि लौंडी सरकार के वजीर की बेटी है मेरा बाप हुजूर के अतबमें ब सबब इसी ख्वाजे के लालों के कैद पड़ा है और हुक्म यों हुआ कि अगर एक साल तक उसकी बात कुरसीन-शीन होगी तो जानसे मारा जायगा मैंने यह सुनकर भेष बनाया और अपने तईं नेशापुर में पहुँचाया खुदाने ख्वाजे को मय कुत्ते और लालों के हुजूर में हाजिर किया आपने तमाम अहवाल सुन लिया उम्मेदवार हूँ कि मेरे बूढे बापको मुख-लिसी हो यह बयान वजीर जादो से सुनकर ख्वाजः ने एक बार आहकी और बे अख्तियार गिर पड़ा जब गुलाब उसपर छिड़का गया तब होश आया और बोला हाय कम्बख्त इतनी दूरसे यह रंज और मेहनत खैंकर मैं इस तवक्कः पर आया था कि इस सौदागर बच्चे को अपना फ़र्जन्द करूँगा और अपने मालो मताअ का हिबानाम लिख दूँगा तो मेरा नाम रहेगा और सारा आलम ख्वाजे जादः कहेगा सो मेरा ख्याल खाम हुआ और वल्ल अक्स

लाम हुआ इसने औरत होकर मुझ पीर मर्द को खराब किया मैं रण्डी के चरित्र में पड़ा अब मेरी वह कहावत हुई कि ॥ (घरमें रहेन तीरथ गये मूंड मुड़ाय के फ़ज़ीहत भये) अल किस्सा मुझको उसकी बे करारी और नालों ज़ारी पर रहम आया ख्वाजह को नजदीक बुलाया और कान में उसके मुज़दहकत खुदाई का सुनाया कि गमगीन मत हो इसीसे तेरी शादी करदेंगे खुदा चाहै तो औलाद तेरी होगी और यही तेरी मालिक होगी इस खुश-खबरीके सुनने से फिल जुमला उसको तसल्ली हुई तब मैंने कहाकि वजीर जादीको महलमें ले आओ और वजीरको बन्दीखाने से ले आओ और हम्माममें न्हालाओ और खिलअत सरफराजी का पहनाओ और जल्दी मेरे पास लाओ जिस वक्त वजीर आया फर्श तक उसका इस्तकबाल फरमाया अपना बुजर्ग जान कर गले लगाया और नये सिरसे कलमदान विज़ारत का इनायत फरमाया ख्वाजे को भी जागीर और मंसब दिया और अच्छी साअत देखकर वजी-

रजादी से निकाह पढ़वा कर मन सुखः किया कई साल में दो बेटे और बेटी उसके घर में पैदा हुई चुनांचे बड़ा बेटा मुलकुल तिज्जार है और छोटा हमारी सरकार का मुखतार है ऐ दुरवेशो। मैंने इस लिये यह हाल तुम्हारे सामने कहा कि कल को रात मैंने दो फकीरों की सर गुजिश्त सुनी थी अब तुम दोनों भी जो बाकी रहे हो यह समझो कि उसी मकान में बैठे हैं और मुझको अपना खादिम और इस घर को अपना तकिया जानो विश्वास से अपनी सैर का अहवाल कहो और चंदरोज मेरे पास रहो जब फ़कीरों ने बादशाह की तरफ से बहुत खातिर दारी देखी कहने लगे खैर जब तुमने गदाओं से उल-फ़त की तो हम दोनों भी अपना माजरा बयान करते हैं ध्यान दे सुनिये।

सैर तीसरे दरवेश की।

तीसरा दरवेश लंगोटा बांध बैठा और अपनी सैर का बयान करने लगा।

रुबाई।

अहवाल इस फ़कीर का ऐ दोस्तों सुनो।
यानी जो मुझपर बीती है वह दास्तां सुनो।
जो कुछ शाह इश्क़ने मुझसे किया सलूक।
तफ़सीलवार कहता हूं उसका बयां सुनो।

कि यह कमतरीन बादशाह जादा अजम का है मेरे वली नियामत वहां के बादशाह थे और सिवाय मेरे कोई फरज़न्द न रखते थे मैं जवानी के आलम में मुसाहिबों के साथ चौरड़ गंजीफा शतरंज तख्तः नरद खेला करता था सवार होकर सैर शिकार में मशगूल रहता एक दिन का यह माजरा है कि सवारी तैयार करवा के और सब यार आशनाओं को लेकर मैदान की तरफ़ निकला बाज बहरी ज़र्रह सुरख़ाब और तीतरों पर उड़ाता हुआ दूर निकल गया अजब तरह का एक क़िता पहाड़ का नज़र आया जिधर निगाह जाती थी कोसों तक फूलों से लाल जमीन नज़र आती थी समां देख करके घोड़ों की बागें डालदी और कदम २

सैर करते हुए चले जाते थे एका एक उस सहरा में देखा कि एक काला हिरन उस पर जरबफ्त की को झूल और भँवर कशी मुरस्से और घुंघुरू सोने के जरदोजी पट्टे में टके हुए गले में पड़े हैं खातिर जमा से उसे मैदान में कि वहाँ इन्सान का दखल नहीं और परंदाः पर नहीं मारता चरता फिरता है हमारे घोड़े को सुमकी आहट पाकर चौकन्ना हुआ और सिर उठाकर देखा आहिस्ता २ चला मुझे उसके देखने से तह सौक हुआ और रफोकों से कहा कि तुम यहीं खड़े रहो मैं उसे जीता पकड़ूंगा खबरदार तुम कदम आगे न बढ़ाइयो और मेरे पीछे न आइयो और घोड़ा मेरा शनोंतले ऐसा परिंद था कि बारहा हिरनों के ऊपर दौड़ कर उनकी करछलों को भुलाकर हाथों से पकड़ लिया था उसके पीछे घोड़ा दौड़ाया वह देखकर छलांगे भरने लगा और घोड़ा हवा से बात करता था उसके गिर्दन को न पहुँचा वह हरबार भी पसीने २ हो गया और मेरी जीभ मारे प्यास के चटकने लगी पर कुछ बस न

चला शाम होने पर आई और मैं क्या जानूं कहाँ से कहाँ निकल आया लाचार उसे भुलवा दिया और तरकश में से तीर निकाल कर और कुरबान से कमान संभाल कर चिल्ले में जोड़कर काश से पैकान तलक रान को उसकी ताक अल्लाह अकबर कह कर मारा वारे पहलाही तीर उसके पांव में तराजू हुआ तब लंगड़ाता हुआ पहाड़ की दामन के तरफ़ चला फ़कीर भी घोड़े से उतर पड़ा और पांव प्यादे उसके पीछे लगा उसने पहाड़ का इरादा किया और मैंने भी उसका साथ दिया कई उतार चढ़ाव के बाद एक गुम्बज नजर आया जब पास पहुँचा एक बगीचा और एक चश्मा देखा यह हिरन नजरों से छलावा हो गया निहायत थका था हाथ पाँव धोने लगा एक बारगी रोने की आवाज उस बुर्ज के अन्दर से मेरे कान में आई जैसे कोई कहता है ऐ बच्चे ,जिसने तुझे तीर मारा आहका तीर उसके कलेजे लगियो वह अपनी जवानी से फलन पाये और खुदा उसको मेरा सा दुखिया बनाये यह

मैं सुनकर वहां गया देखा तो एक बुजुर्ग रेश सफेद अच्छी पोशाक पहने एक मसनद पर बैठा है और हिरन आगे लेटा है उसकी जांघ के तीर खींचता है और बददुआ देता है मैंने सलाम किया और हाथ जोड़ कर कहा कि हजरत सलामत यह तकसीर नादानिस्तः इस गुलाम से हुई मैं यह न जानता था खुदा के वास्ते मुआफ करो बोला कि बेजबान को तूने सताया है अगर अनजाने यह हरकत तुझसे हुई अल्लाह मुआफ करेगा मैं पास जा बैठा और तीर निकालने में शरीक हुआ बड़ी दिक्कत से तीर निकला और ज़ख्म में मरहम भर कर छोड़ दिया फिर हाथ धो धाकर उस पीर मर्द ने कुछ हाजरी जो उस वक्त मौजूद थी मुझे खिलाई मैंने खा पीकर एक चारपाई पर लंबी तानी मांदगी के सबब खूबपेट भरकर सोया उस नींद में आवाज़ आह व जारी की कान में आई आंखें खोल कर जो देखता हूँ तो उस मकान में न वह बूढ़ा है न कोई और है अकेला पलंग पर लेटा हूँ और वह

दालान खाली पड़ा है चारो तरफ घबराकर देखने लगा एक कोने में पर्दा पड़ा नज़र आया वहाँ जाकर पर्दा उठाया देखा तो एक तख्त बिछा है और उस पर एक परीजाद औरत वर्ष चौदह की महताब की सूरत और जुल्फें दोनों तरफ छूटी हुई हँसता चेहरा फरंगी लिवास पहने हुए अजीबअदा से देखती है और बैठी है और वह बुजुर्ग अपना सिर उसके पांव पर धरे बे अख्त्यार रो रहा है और होश व हवास खो रहा है मैं उस पीर मर्द का यह अहवाल और उस नाजनीन का हुस्न व जमाल देखकर मुरझा गया और मुर्दे की तरह बे जान होकर गिर पड़ा वह मर्द बुजुर्ग यह मेरा अहवाल देखकर शीशी गुलाब का ले आया और मुझपर छिड़का जब मुझे चेत हुआ उठ कर उस माशूक के मुकाबिल जाकर सलाम किया उसने हरगिज न हाथ उठाया और न होठ हिलाया मैंने कहा ऐ गुलबदन इतना गरूर करना और जवाब सलाम का न देना किस मजहब में दुरुस्त है ॥

शैर--कम बोलना अदा है हरचन्द परन इतना ।
मुंद जाय चश्म आशिक तो भी वह मुंह न खोले ॥

वास्ते उस खुदाके जिसने तुझे बनाया है कुछ तो मुँहसे बोल हमभी इत्तफाकन यहां आ निकले हैं मेहमान की खातिर जरूर है मैंने बहुतेरी बातें बनाई लेकिन कुछ काम न आई वह चुपकी बुतकी तरह बैठी सुना की तब मैंने भी आगे बढ़कर हाथ पांव पर चलाया जब पांव को छूआ तो सख्त मालूम हुआ आखिर यह दरियाफ्त किया कि पत्थर से इस लाल को तराशा है और आजर ने इस बुत को बनाया है तब पीरमर्द परस्ते से पूछा कि मैंने तेरी हिरन की टांग में खिपराभारा तूने इश्कके नावकसे मेरा कलेजा छेदकर वाकिया तेरीदुआ कबूल हुई अब इसकी कैफियतमुफ़स्सिल बयान कर कि यह तिलस्म क्यों बनाया है और तू बस्ती को छोड़कर जंगल पहाड़ क्यों सेता है तुझे जो कुछ बीता है मुझसे कह जब उसका बहुत पीछा किया तब उसने ज-

वाब दिया कि इस बात ने मुझे तो खराब किया क्या तू भी सुनकर हलाक हुआ चाहता है मैंने कहा लो अब बहुत मकर चक्कर किया मतलब की बातें कहो नहीं तो मार डालुंगा मुझे निहायत दरपै देखकर बोला ऐ जवान हक हर एक इन्सान को इश्क की आंच से महफूज रक्खे देखिये तो इश्क ने क्या क्या आफतें बरपाकी है और इश्कहीके मारे औरत खाविंदके साथ सती होती है और अपनी जान खोती है और फ़रहाद मजनूंकी किस्सा सबको मालूम है तू उसके सुनने से क्या फल पायेगा नाहक घर बार दौलत दुनियां छोड़ छाड़कर निकल जायेगा मैंने जवाब दिया बस अपनी दोस्ती तह कर रक्खो इस वक्त मुझे अपना दुश्मन समझो अगर जान अजीज है तो साफ कहो नाचार होकर आँसू भर लाया और कहने लगा कि कुछ खाने खराबकी तह हकीकत है कि बंदेका नाम नैमान सय्याह है ॥

किस्सा नैमान सौदागर और फरङ्ग की शाहज़ादी का।

मैं बड़ा सौदागर था इस सिन में तिजारत के सबब हफ्त अकलीम की सैर की और सब बादशाहों की खिदमत में रसोई हुई एक बार यह ख्याल जी में आया कि चारों दांग मुल्क तू फिरा लेकिन जजीरह फरंग की तरफ न आया और वहाँ के बादशाह और रैयत सिपाह को न देखा राह रसम वहां की कुछ न दरियाफ्त की एक दफा वहाँ भी चलना चाहिये रफीकों और शफीकों से सलाह लेकर इरादा मुसम्मिम किया तुहफा हिदाया जहाँ तहां का वहाँ के लायक था लिया और एक काफिला सौदागरों का इकट्ठा करके जहाज पर सवार होकर रवाना हुआ जो मुआफिक आई कई महीने में मैं उस मुल्क में दाखिल हुआ शहर मे डेरा किया अजब शहर देखाकि कोई शहर उस शहर की खूबी को

नहीं पहुँचता हर एक बाजार और कूचे में पुख्ता सड़कें की बनी हुई और छिड़काव किया हुआ सफाई ऐसी कि एक तुनका कहीं पड़ा नजर न आया कूड़ेका तो क्या जिक्र और इमारतें रंग बरंग की और रात को रस्तों में दुरुस्त कदम ब कदम रोशनी और शहरके बाग़ात की जिनमें अजायब गुल बूटे और मेवे नजर आये कि शायद सिवाय बहिश्त के कहीं और न होंगे जो वहाँ की तारीफ करूँ सो वजा है गरज सौदागरों के आने का चरचा हुआ एक ख्वाजः सरा मोअतबिर सवार होकर कई खिदमतगार साथ लेकर काफिले में आया और व्यापारियों से पूछा कि तुम्हारा सर्दार कौनसा है सभों ने मेरी तरफ इशारत की वह महल्ली मेरे मकान में आया ताजीम बजा लाया बाहम सलाम अलेक हुई उसको छुजनी पर बिठाया था तकिये की तवाजे की बाद उसके मैंने पुछा कि साहब बके तशरीफ लाने का क्या बाइस है फरमाइये जवाब दिया कि

शाहजादी ने सुना है कि सौदागर आये हैं बहुत जिंस लाये हैं लिजाजा मुझको हुक्म किया कि जाकर उनको हजूर में ले आओ पस तुम जो कुछ असबाव लायक बादशाहों की सरकार के हो साथ लेकर चलो और सआदत आस्ताने वाशी की हासिल करो मैंने जवाब दिया कि आज तो मांदगी के बाइस कासरहूं कल जानो माल से हाजिर रहूँगा जो कुछ इस आजिज के पास मौजूद है नजर गुजारूँगा जो पसन्द आये माल सरकारका है यह वाइदा करने और इत्रपान देकर ख्वाज-सरा को रुखसत किया और सब सौदागरों को अपने पास बुलाकर जो जो तुहफा जिसके पास था ले ले कर जमा किया और जो मेरे घर में मौजूद था वह भी लिया और सुबहके वक्त बादशाही महल के दरवाजे पर हाजिर हुआ चोपदारों ने मेरी खबर अर्जकी हुक्म हुआ कि हजूर में लाओ वही ख्वाजेसरा निकला और मेरा हाथ में हाथ लेकर दोस्तों की राहसे बातें करता हुआ लेचला

पहिले खवासपुरवस्ते होकर एक मकान आलीशानमें लेगया ऐ अज़ीज तू बावर नकरेगा वह आलम नजर आया गोया पर काट कर परियों छोड़ दिया है जिस तरफ देखता ँनिगाह अगर जाती थी पांव जमीन से उखड़े जाते थे बजोर अपने तई संभालता हुआ रोबरू ज्योंही बादशाहजादी पर नजर पड़ी गश की नावत हुई और हाथ पांव में राशा हो गया बहर सूरत सलाम किया दोनों तरफ दस्त रास्त व दस्त चप सफ़ व सफ़ नाजनीनान परी चेहरा दस्तबस्ता खड़ी थीं मैं जो जो किस्म के जवाहर और पारचे पोशाकी औरतुहफा अपने साथ ले गया था पेश कियाजब कई किश्तियां हजूर में चुनी गई अजबस कि सब जिन्स लायक पसन्दके थी खुश होकर खानसामांके हवालेहुई और फरमाया कि कीमत उसकी बमूजिब फर्द के कल दी जावेगी मैं तसलीमात बजा लाया और दिल में खुश हुआ कि इसबहाने भला कल भी आना होगा जब रुखसत होकर बाहर आया तो सौदाई की

तरह कहता कुछ था और मुँह से निकलता कुछ था उसी तरह सरा में आया लेकिन हवासबे-जान सब आशना दोस्त पूछने लगा कि तुम्हारी क्या हालतहै मैंने कहा इतना आमदरफ्तसे गरमी दिमाग में चढ़ गई है ग़रज़ वह रात तड़पते काटी फ़जर को फिर जाकर हाजिर हुआ और उसी ख्वाजेसरा के साथ फिर महल में पहुँचा वही आलम जो कल देखा था देखा बादशाहजादी ने मुझे देखा और हर एक को अपने २ काम पर रुखसत किया जब परछा हुआ खिलवत में उठ गई और मझे तलब किया जब मैं गया वहां बैठने को हुक्म किया मैं आदाब बजा लाकर बैठा फ़रमाया कि यहां जो तू आया और यह असबाब लाया इसमें मुनाफ़ा कितना मंजूर है मैंने अर्ज किया कि आप के कदम देखने की बड़ी ख्वाहिश थी सो खुदा ने मयस्सर की अब मैंने सब कुछ भर पाया और दोनों जहान की सआदत हासिल हुई और कीमत जो कुछ फेहरिस्त में है

निस्फ की खरीद है और निस्फ नफा है फरमाया नहीं जो कीमत लिखी है तूने वही इनायत की होगी बल्कि और भी इनाम दिया जायगा बशर्ते कि एक काम तुझसे हो सके तो हुक्म करूँ मैंने कहा गुलाम को जान व माल अगर सरकार के काम आये तो मैं अपनी नसीब की खूबी समझूं और आँखों से करूँ यह सुन कर कलमदान याद फरमाया एक रुक्का लिखा और मोतियों के दरम्यान में रख कर एक रूमाल शबनम का ऊपर लपेट कर मेरे हवाले किया और एक अंगूठी निशान के वास्ते उँगली से उतार दी और कहा कि उस तरफ को एक बड़ा बाग है दिलकुशा उसका नाम है वहाँ तू जाकर एक शख्स के जिसका खुशरो नाम दारोगा है उसके हाथ में यह अंगुश्तरी दीजियो और हमारी तरफ से दुआ कहियो और इस रुक्केका जवाब मांगियो लेकिन जल्द आइयो अगर खाना वहां खाइयो तो पानी यहां पीजियो इस काम का इनामतुझे ऐसा दूंगी

की देखेगा मैं रुखसत हुआ और पूछता २ चला करीब दो कोस के जब गया वह बाग नजर पड़ा जब पास पहुंचा एक अजीज मुसल्ला मुझको पकड़के बाग के दरवाजे में ले गया देखूं तो एक जवान शेर की सूरत सोनेकी कुरसी पर जहर दाऊदी पहन चार आइनः बाँधे फौलादी खुद सिर पर धरे निहायत शान शौकत से बैठाहै और पाँच सौ जवान तयार ढाल तलवार हाथ में लिये और तरकश कमान बाँधे खड़ेहैं मैंने सलाम किया मुझे नजदीक बुलाया मैंने वह खातिम दी और खुशामद की बातेंकर वहरुमाल दिखाया और रुक्के के भी लाने का अहिवाल कहा उसने सुनतेही उँगली दाँतों से काटी और सिर धुन कर बोला कि शायद तेरी अजल तुझको ले आई है खैर बाग के अन्दर जा सरा के दरख्त में एक आहिमी पिजरा लटकता है उसमें एक जवान कैद है उसको यह खत देकर जवाब लेकर जल्दी फिर आ मैं शिताब बाग में घुसा बाग क्या था गोया जैसे

बहिश्त में घुसा हर एक चमन रंग बरंग का फूल रहा था और फुव्वारे छूट रहे थे मैं सीधा चला गया और उस दरख्त में कफस देखा उसमें एक जवान हसीन नजर आया अदबसे सिर नीचा कर और सलाम किया और वह खतीरा सरब मुहर पिंजरे के सीकचों की राह से उसे दिया वह अजीक खोलकर पढ़ने लगा और मुझसे मुश्ता-कवार अहिवाल मलकः का पूछने लगा और अभी बात तमाम न हुई थीं कि एक फौज जंगियों की नमूद हुई और चारो तरफ से मुझपर आ टूटी और बेतहाशा बरछी और तलवार मारने लगे एक आदमी मुनहनी की बिसात क्या एक दम में चोर जख्मी किया मुझे कुछ अपनी सुध बुध न रही फिर जो होश आया अपने तईं चारपाई पर आया कि दो प्यादे उठाये लिये जाते हैं आपस में बतियाते हैं एक ने कहा इस मुर्दे की लास को मैदान में फेंक दो कुत्ते कौवे खा जायँगे दूसरा बोला कि अगर बादशाह तह-

कीक करे और यह खबर पहुँचे तो जीतो गड़-वावे बाल बच्चों को कोल्हू में पिरवा दे क्या हमें अपनी जान की पड़ी है जो ऐसी नामाकूल हरकत करें मैंने यह गुफ्तगू सुन कर दोनों याजूज माजूज से कहा कि वास्ते खुदा के मुझ पर रहम करो अभी मुझ में कुछ जान बाकी है जब मर जाऊँगा जो तुम्हारा जी चाहे सो कीजियो मुरदा बदस्त जिन्दा लेकिन यह तो कहो मुझपर क्या हकीकत बोती मुझे क्यों मारा और तुम कौन हो भला इतना तो कह सुनाओ तब उन्हों ने रहम खाकर कहा कि जो जवान कफस में कैद है इस बादशाह का भतीजा है और पहले इसका बाप तख्तनशीं था रहलत के वक्त यह नसीहत अपने भाई को कि अभी मेरा बेटा जो वारिस सल्तनत का है लड़का बेशऊर है कारबार बादशाहतकी खैरख्वाही और हुशियारी से तुम किया कीजियो जब यह बालिगहो अपनी बेटी की शादी इससे कर दीजियो और मुख्तयार आम मुल्क और

बचाने का कीजियो यह कह कर उन्हों ने वफ़ात पाई और सल्तनत की नौबत छोटे भाई पर आई उसने नसीहत पर अमल न किया बल्कि दीवाना और सौदाई मशहूर करके पिंजरे में डाल दिया और चौकी गारद चारों तरफ बाग के रक्खी है कि परंदा पर नहीं मार सक्ता और कई मर्तबे जहर हलाहल दिया है लेकिन जिंदगी जबरदस्त है असर नहीं किया अब वह शहजादा और शह- जादी दोनों आशिक माशूक बन रहे हैं वह घर में तड़फती है और यह क़फ़स में तड़फे है तेरे हाथ से शौक का नामा उसने भेजा यह खबर हलकारों ने बजिंस ही बादशाह को पहुँचाई हरशियो को दस्ता मुतय्यन हुआ तेरा यह अहवाल किया और उस जवान क़ैदी के क़त्ल की वज़ीर से तदबीर पूछा उस नमक हराम ने मलकः को राज़ी किया है उस बेगुनाह को बादशाह के हजूर में अपने हाथ से शहजादी मारडाले मैंने कहा चलो मरते २ यह भी तमाशा देखलें आखिर राज़ी

होकर वह दोनों ओर मैं जखमा चुपके एक गोशे में जाकर खड़ा होके देखा तो एक यख्त पर बादशाह बैठा है और मलकः के हाथ में नंगी तलवार है और शहजादे को पिंजरे से बाहर निकाल कर रोबरू खड़ा किया मलकः जल्लाद बन कर शमशेर बरहने लियेहुए अपने आशिक को कत्ल करने आई जब नजदीक पहुँची तलवार फेंकदी और गले से चिपट गई तब वह आशिक बोला ऐसे मरने पर राजी हूं यहाँ भी तेरी आरजू है वहां भी तेरी तमन्ना रहैगी मलकः बोली इस बहाने से मैं तेरे देखने को आई थी। बादशाह यह हरकत देख कर सख्त बेरहम हुआ वजीर को डाँटाकि तू यह तमाशा दिखलाने को मुझे लाया था महली मलकः को जुदा करके महल में गई और वजीर ने खफा होकर तलवार उठाई और बादशाहजादे के ऊपर दौड़ा कि एकही बार में काम उस बेचारे का तमाम करे जो चाहता है तेगा चलायें गैबसे एक तीर नागहानी उसकी पेशानी पर बैठा कि

वो पार होगया और वह गिर पड़ा बादशाह यह वारदात देख कर महल में घुस गया जवान को फिर कफ़स में बंद करके बाग में ले गये मैं भी वहाँ से निकला राह में से एक आदमी मुझे बुला-कर मलक के हुजूर में लेगया मुझे घायल देख-कर एक जर्राह को बुलाया और निहायत ताकीद से फरमाया कि इस जवान को जल्द चंगा करके गुसल शफ़ाका दे यही तेग मुजरा है इसके ऊपर जितनी तू मेहनत करेगा वैसाही इनाम और सरफ़राजी पावेगा गर वजह निगह बमूजिब इरशाद मलकः के उनको दवाकरके एक चिल्ले में निहला धुलाकर मुझे हजूर में ले गया मलकः ने पूछा कि अबतो कुछ कसर बाकी नहीं रही मैंने कहा आपकी तवज्जे से अब हट्टा कट्टा हूँ तब मलकः ने एक खिलअत और बहुत से रुपये जो फरमाये थे बल्कि उससे भी दुचन्दअता किये और रुसखत किया मैंने वहां से सब रफीकों

और नौकरों को लेकर कूँच किया जब इस मुक़ा-मपर पहुँचा सबको कहा तुम अपने वतनको जाओ और मैं ने इस पहाड़ पर यह मकान और उसकी सूरत बनाकर अपना रहना मुकर्रर किया और नौकरों और गुलामों को मुवाफ़िक़ हर एक के कदर की रुपये देखकर आज़ाद किया और यह कह दिया कि जब तलक मैं जीता रहूं मेरी कुव्वत की खबर गीरी तुम्हें जरूर है आगे मुख्-तार हो अब वही अपनी नमक हलाली से मेरे खाने की खबर लेते हैं और मैं बखातिर जमा इस बुत की परस्तिश करता हूँ जब तलक जीता हूं मेरा यही काम है यह मेरा सर गुजश्त है जो तूने सुनी या फकीर अल्लाह मैंने बशमुर्रद सुनने इस किस्से के कफनी गले में डाली और फकीरों का लिबास किया इश्तियाक में फरङ्ग मुल्क के देखने को रवाने हुआ कितने एक अर्से में जंगल पहाड़ों की सैर करता हुआ मजनूं और फरहाद की सूरत बन गया आखिर मेरे शौक़ने

उस शहर तलक पहुँचाया गली कूचेमें बावला सा फिरने लगा अक्सर मलकः के महल के आस पास रहा करता लेकिन कोई ढब ऐसा न होता जो वहां तलक रसाई हो अजब हैरानी था कि जिसके वास्ते यह मेहनत कशी करके गया वह मतलब हाथन आया एक दिन बाजार मे खड़ा था कि एक बारगी आदमी भागने लगे और दूकान दार दूकान छोड़कर चला गया वह रोनक सुनसान होगया एक तरफ से एक जवान रुसतम काम कल्ला जवड़ा शेर की मानिंद गूजता और तलवार दो दस्ती झाड़ता हुआ जिरह बख्तर गले में और टोप झिल मिलको सिर पर और तमंचे का जोड़ी की जोड़ी कमर में कैसी की तरह बकता झकता नजर आया और उसके पीछे दो गुलाम बानात की पोशाक पहने और एक तावत मखमल की शानी से मढ़ा हुआ सिर पर लिये जाते हैं मैंने यह तमाशा देखकर साथ चलने का कस्द किया जो कोई आदमी नजर पड़ता मुझे

मने करता लेकिन मैं कब सुनता हुं रफते २ वह जवां मर्द एक आलीशान मकान में चला गया मैं भी साथ हुवा और उसने फिरते ही चाहाकि हाथ मारै मुझे दो टुकडे करे मैंने उसे कस्म दी कि मैं भी यह चाहता हुं मैंने अपना खुन का दावा माफ़ किया किसी तरह मुझे इस जिंदगी के अजाब से छुड़ावे निहायत तंग आया हूं मैं जान बूझ कर तेरे सामने आया हूं देर मत कर मुझे मरने पर साबित कदम देखकर खुदाने उसके दिलमें रहम डाला और गुस्सा भी ठंढा हुआ बहुत तवज्जे और मेहरबानी से पूछा तू कौन है और क्यों अपनी जिन्दगी से बेजार हुआ है मैंने कहा जरा बैठिये तो कहूं मेरा किस्सा बहुत दूर दराज है और इश्क के पंजे में गिरफ्तार इस सबब से ला-लाचार हूं यह सुनकर उसने अपनी कमर खोली और हाथ मुंह धोकर कुछ नाश्तः किया मझे भी इनायत हुआ जब फरागत करके बैठा बोला-कह तुझ पर क्या गुजरी मैंने सब वारदात उस

पीर मर्द की और मलकः और वहां अपने जानेको कह सुनाई पहले सुनकर रोया और कहा कि इस कमबखती ने किस २ का घर घाला भला तेरा इलाज मेरे हाथ है अगलब है कि इस आसी के सबब से तू अपनी मुराद को पहुँचे और तू अन्देशा न कर और खातिर जमा रख हज्जाम को फर्माया कि इसकी हजामत करके हम्माम करवादे एक जोड़ा कपड़ा इस गुलाम को लाकर पहनाया तब मुझसे कहने लगा कि यह ताबूत जो तू ने देखा उसी शाहज़ादे ने मरहूम का है जो कफसमें कैद था उसको दूसरे वजीर ने आखिर मकरसे मारा उसकी तो निजात हुई कि मज़लूम मारा गया है मैं उसका काका हूं मैंने भी उस वजीर को व जर्ब शम शेर मारा और बादशाह के मारने का इरादा किया बादशाह गिड़गिड़ाया और सौगन्द खाने लगा कि मैं बेगुनाह हूं मैंने उसे नामर्द जानकर छोड़ दिया जब मेरा काम यही है कि हर महीने की नोचन्दी जुमे रात को मैं इस

ताबूत के लिये फिरता हूं और उसका मातम करता हूं उसकी जवानी यह अहवाल सुननेसे तसल्ली हुई कि अगर यह चाहेगा तो मक़सदबर आवेगी खुदा ने बड़ा अहसान किया जो ऐसे जनूनी को मुझपर मेहरबान किया सच है।

मिसरा।

खुदा मिहरबान * तो कुल मिहरबान।

जब शाम हुई और आफताब गरूब हुआ उस जवान ने तावूत निकाला और एक गुलाम की एवज वह तावूत मेरे सिर पर धरा और अपने हाथ लेकर चला फरमाने लगा मलकः नजदीक जाता हूँ कि तेरी सिफारश ताअमकदूर करूँगा तू हरगिज दम न मारियो चुपका बैठा सुना कीजियो मैं ने कहा जो कुछ फरमाते हैं सोई करूँगा खुदा तुमको सलामत रक्खे जो मेरे अहवाल पर तर्स खाते हो उस जवान ने कस्द बादशाही बागका किया जब अन्दर दाखिल हुआ एक चबूतरा संग मरमर का हश्त पहलू बाग

के सहन में था और उस पर एक नमगीरा सफेद वादले का मोतियों की झालर लगी हुई इस्लाम के इस्तादों पर खड़ा था और एक मसनद बिछी थी गाव तकिया और बगलो तकिये जरहफ्त के लगे हुए वह तावूत वहां रखवाथा और हम दोनों को फरमाया कि उस दरख्त के पास जाकर बैठो बाद एक सायत के मशाल की रोशनी नजर आई मलकः कई खवास पशोपेश अहतामाम करती हुई तशरीफ लाई लेकिन उदासी और खफगी चेहरे पह जाहिर थी आकर मसनद के किनारे बैठी फातहा पढ़ी और कुछ बातें करने लगी मैं कान लगाये सुन रहा था आखिर उस जवान ने कहा कि मलकः जहां सलामत मुल्क अजम का शाहजाद आपको खुबियों का और महबूबियों का गायवान सुन कर अपनी सल्तनत को बरबाद कर फकीर बनकर मानिन्द इबराहीम अधेम के तबाह हो और बड़ी मेहनत खैंच कर यहां तलकआ पहुँचा है ॥ मिसरा ॥ साईं तेरे कारने छोड़ा शहर बलख ॥ और इस शहर में बहुत दिनों

से हैरान परेशान है आखिर वह कस्द मरने का करके मेरे साथ लग चला मैंने तलवार से डराया उसने गर्दन आगे धरदी और कसम दी कि अब मैं यह चाहता हूँ देर मत कर गरज तुम्हारे इश्क में साबित है मैंने खुब आजमाया सब तरह पूरा पाया इस सबबसे इसका मजकूर दरम्यान लाया अगर हुजूर से उसके अहवाल पर मुसाफिर जान कर तवज्जे हो तो खुदा दरसी और हकशनासी से दूर नहीं यह जिक्र मलकः ने सुन कर फरमाया कहां है अगर शाहजादा है तो क्या मुजायकर रोबरू आवै वह कोका वहाँ से उठ कर आया और मुझे साथ लेकर गया मैं मलकः के देखने से निहायत शाद हुआ लेकिन अकल होश बरबाद हुए आलम सकूत का हो गया यह हयावन पड़ा कि कुछ कहूं एक दम में मलकः सिधारी और कोका अपने मकान को चला घर आकर बोला कि मैंने सब तेरी हकीकत अव्वल से आखीर तक मलकः को कह सुनाई और सिफारश भी की अब तू हमेशा बिलानागा रात

को जाया कर और ऐश खुशी मनाया कर में उसके कदमों पर गिरा उसने गले लगाया तमाम दिन घड़ियाँ गिनता रहा कि कब साँझ हो जो मैं जाऊँ जब रात हुई मैं उस जवान से रुखसत होकर चला और पाई बाग में मलकः के चबूतरे पर तकिया लगा कर बैठा बाद एक घड़ी के मलकः तने तनहा एक खवास को साथ लेकर आहिस्त २ आकर मसनदपर बैठी खुसनसीबी से यह दिन मयस्सर हुआ मैंने कदम बोस किया उन्होंने सिर मेरा उठा दिया और गले से लगा लिया और बोली इस फुरसत को गनीमत जान और मेरा कहा मान मुझे यहां से निकाल किसी और मुल्क में ले चल मैंने कहा चलिये यह कह कर हम दोनों बाग के बाहर तो हुए पर हैरत से और खुशी से हाथ पांव तो फूल गये और राह भूल गये एक तरफ को चले जाते थे पर कुछ ठिकाना नहीं पाते थे मलकः बरहम होकर बोली कि अब मैं थक गई तेरा मकान कहां है जल्द जाकर पहुँच नहीं तो क्या किया चाहता है मेरे पांव मे फफोले पड़

गये हैं रस्ते में कहीं बैठ जाऊँगी मैंने कहा कि मेरे गुलाम की हवेली नजदीक है अब आ पहुँचे खातिरजमा रक्खो और कदम तो उठाओ झूठ तो बोला पर हैरान था कि कहां ले जाऊँ ऐन राह पर एक दरवाजे में कुफल नजर आया जल्दी से कुफल तोड़ कर मकान के भीतर गये अच्छी हवेली फर्श बिछा हुआ शराब के शीशे भरे करीने से ताक में धरे और बावरची खाने में नान व कबाब तैयार थे मांदगी कमाल हो रही थी एक २ गुलाबी शराब पुर्तगाली की उस राजक के साथ पी और सारी रात बाहम खुशी की जब इस चैन से सुबह हुई शहर में गुलमचा कि शाहजादी गायब हुई महल्ल २ कूचे २ मनादी फिरने लगी और कुटनियां और हरकारे छूटे कि जहां से हाथ आये पैदा करें और सब दरवाजों पर शहर बादशाही गुलामों की चौकी आ बैठी गुजबानों को हुक्म हुआ कि बगैर परवानगी चीटी बाहर शहर के न निकल सके जो कोई सुराग मलका का लावेगा हजार अशर्फी इनाम

और खिलअत पावेगा तमाम शहर में कुटनियां फिर
ने और घर २ में घुसने लगी मुझ कम्बख्ती लगी
दरवाजा बन्द न किया एक बुढ़िया शैतानकी खाला
जिसका खुदा मुँह करे काला हाथ में तसबीर लट-
काये बुरका ओढ़े दरवाजा खुला पाकर निधड़क
चली आई और सामने मलकः के खड़ी होकर हाथ
उठा दुआ देने लगी कि इलाही तेरी नथ सुहाग
चूड़ी की सलामती रहे और कमाऊ की पगड़ी
कायम रहे मैं गरीब रंडिया फकीरनी हूं एक बेटी
मेरी है कि वह दाजी से पूरे दिनों दरद में मरती है
और मुझको इतनी बसत नहीं कि अद्धी का तेल
चिराग में जलाऊं खाने पीने को तो कहां से लाऊं
अगर मर गई तो कफन गोर क्यों करूँगी और
जनी तो दाई जनाई को क्या दूँगी और बच्चा
को सठोड़ा अछवानी कहां से पिलाऊंगी आज दो
दिन हुए हैं भूखी प्यासी पड़ी है ऐ शाहजादी
अपनी खैर कुछ टुकड़ा पारचा दिलाओ तो उसको
पानी पीने का आधार हो मलकः ने तरस खाकर अपने

नजदीक बुलाकर चार नान और एक कबाब एक अँगूठी छिनगुनियां से उतार कर हवाले की कि इसको बेचकर गहना पाती बना दीजो और खातिर जमा से गुजरान कीजो और कभी आया कीजो तेरा घर है उसने अपने दिल का मुद्दा जिसकी तलाश में आई थी बजिंस पाया खुशी से दुआयें देती और बलायें लेती दफा हुई ड्योढी में नान कबाब फेंक दिये मगर अँगूठी को मुट्ठी में ले लिया कि पता मलका का मेरे हाथ में आया खुदा इस आफत से जो बचाया चाहे उस मकान का मालिक जवांमर्द सिपाही ताजी घोड़े पर चढ़ा हुआ नेजा हाथ में लिये शिकार बन्द से एक हिरन लटकाये आ पहुँचा अपनी हवेली का ताला टूटा और किंवाड़ खुले पाये उन दलालह को निकलते देखा मारे गुस्से के एक हाथ से उसकी चोटी पकड़ कर लटका लिया और घर में आया उसके दोनों पांव रस्सी से बांध कर एक दरख्त की टैनी में लटकाया सिर तले पांव ऊपर किये एक दम में तड़प २ कर

मरगई उस मर्द की सूरत देख कर यह हैबत गालिब हुई कि हवाइयां मुँह पर उड़ने लगी और मारे डर के कलेजा कांपने लगा उस अजीज ने हम दोनो को बदहवास देख कर तसल्ली दी कि बड़ी नादानी की कि ऐसा काम किया और दरवाजा खोल दिया मलक: ने मुसकरा कर फरमाया कि शाहजादा अपने गुलाम की हवेली कह कर मुझे ले आया और मुझको फुसलाया उसने इल्तमास किया कि शाहजादे ने बयान वाकई किया जितनी खल्क अल्लाह है बादशाहों की लौंडो गुलाम हैं और उन्हीं के फैज से सबकी परवरिश और निबाह है यह गुलाम बेदाम बदरिम जर खरीदा तुम्हारा है लेकिन भेद का छिपाना अक्लि का मुक्तजा है ऐ शाहजादे तुम्हारा और मलिक: का इस गरीब खाने में तवज्जे फरमाया और तशरीफ लाना मेरी सआदत दोनों जहान की है और अपने फिदवी को सरफराज किया मैं निसार होने को तैयार हूं किसी सूरत में जान व माल से दरेग न करूंगा आप शौक से आराम फरमाइये अब

कौड़ी भर खतरा नहीं यह मुरदार कुटनी अगर सलामत जाती तो आफत लाती अब जब तक मिजाज शरीफ चाहे बैठे रहियो और जो कुछ दरकार हो इस खानाज़ाद से कहियो सब हाजिर करेगा और बादशाह तो क्या चीज है तुम्हारी खबर फरिश्तों को भी न होगी उस जवांमर्द ने ऐसी २ बातें तसल्ली की कहीं कि टुक खातिर जमा हुई तब मैंने कहा शाबास तुम बड़े मर्द हो इस मुरव्वत का एवज़ हमसे भी जब हो सकेगा तब जहूर में आवैगा तुम्हारा नाम क्या है उसने कहा गुलाम का इस्म बिहज़ादखां है गरज छः महीने तक जितनी शर्त खिदमत की थी जानों दिल से बजालाया खूब आराम से गुजरी एक दिन मुझे अपना मुल्क और मां बाप याद आये इसलिये निहायत मुतफिक्कर बैठा था मेरा चेहरा मलीन देख कर वह जादखां गोबरू हाथ जोड़ के खड़ा हुआ और कहने लगा इस फिदवी से अगर कुछ तकसीर फरमा बरदारी में वाके हुई हो नरशाद हो मैंने

कहा अज्बराय खुदा यह क्या मज़कूर है तुमने ऐसा सलूक किया कि इस शहर में ऐसे आराम से रहे जैसे अपनी माके पेट में कोई रहता है नहीं तो यह ऐसी हरकत हम से हुई थी कि तिनका हमारा दुश्मन था ऐसा दोस्त हमारा कौन था कि जरा दम लेते खुदा तुम्हें खुदा रक्खे बड़े मर्द हो तब उसने कहा कि अगर यहां से दिल बरदार हुआ होय तो जहां हुक्म हो वहां खैर आफियत से पहुँचा हूँ फ़कीर बोला अगर अपने वतन तक पहुँचूँ तो वालदैन को देखूँ मेरी यह हालत हुई खुदा जाने उनकी क्या हालत हुई होगी मैं जिस वास्ते जला वतन हुआ मेरी आरजू तो बर आई अब उनकी भी कदम बोसी वाजिब है मेरी खबर उनको कुछ नहीं कि मुआ या जीताहै उनके दिल पर क्या कलक गुजरता होगा वह जवां मर्द बोला बहुत मुबारिक चलिये कहके एक ऐसा घोड़ा तुरकी सौ कोस चलने वाला और एक घोड़ा जिसके पर नहीं कटे थे लेकिन शायस्ता मलकः

को खातिर लाया और हम दोनों को सवार करवा
दिया फिर ज़रह बखतर पहिन सिलाह बांध औपचो
बन अपने मरकूब पर चढ़ बैठा और कहने लगा
गुलाम आगे हो लेता है साहब खातिर जमा से
घोड़े दबाये चले आवैं जब शहर के दरवाजे पर
आया एक नारा मारा और तीर से कुफल को तोड़ा
और निगहबानों को काट कर ललकारा कि खबर
दार हो अपने खाविंद से कहो कि बहजादखां
मलकः महर निगार और शाहजादा काम गार जो
तुम्हारा दामाद है हाँके पुकारे जाता है अगर मर्दुमी
का कुछ नशा है तो बाहर निकलो और मलकः
को छीन लो यह न कहियो कि चुपचाप लेगया
नहीं तो किलेमें बैठ आराम किया करो यह खबर
बादशाह को जल्दी जा पहुँची वजीर और अमीर
बख्शी को हुक्म हुआ इन तीनों मुफ़सदों को बांध
लाओ या उनके सिर काट कर हुजूर में पहुँचाओ
एक दमके बाद गट फौजका नामूद हुआ और तमाम
जमीन व आसमान गरदा बाद होगया बहजाद खां ने

मलका को और इस फकीर को एक दमें पुलके जो गोया जौनपुर के पुलके बराबर था खड़ा कियो और घोड़े को भगाकर उस फौज की तरफ फिरा और शेरकी मानिन्द गूँजकर मरकबको उपट कर फौज़ के दरम्यान घुसा तमाम लश्कर काई सा फट गया और यह दोनों सरदारों तलक जा पहुँचा दोनों के सिर काट लिये जब सरदार मारे गये लशकर तितर बितर होगया वह कहावत है सिर से सिर बहा जब बेल फूटी एक २ होगई वोहीं आप बोहशाह गेती पनाह फौज बखतर पेशोंका साथ लेकर कुमक को आये उनकी भी लड़ाई उस जवान ने मारदी शिकस्त फास खिलाई बाद-शाह परेशां हुए सच है फ़तह दाद इलाही है लेकिन बहजाद खां ने एसी जमाँवर्दी की कि शायद रुसतम से भी न हो उनकी जब बहजादखां ने देखा कि मतलैंसाफ हुआ अब कौन बाकी रहा है जो हमारा पीछा करेगा बे विस्वास होकर और खातिर जमा से जहाँ हम खड़े

थे आया और मलक: और मुझको साथ लेकर चला सफर की उम्र को ताह होती है थोड़े अरसे में मुल्क की सरहद में जा पहुँचा एक अरजी सही सलामत से आने की बादशाह के हुजूर में जो क़िब्ल: गाह मुझ फकीर थे लिखकर रवान: की जहाँ पनाह पढ़कर शाद हुए दुगाना शुक्र अदा किया जैसे सूखे धान में पानी पड़ा खुश होकर सब अमीरों को साथ लेकर इस आजिज के इस्तकबाल की खातिर लबे दरिया आकर खड़े हुए और निवाड़ों के वास्ते मीर वहर को हुक्म किया मैंने दूसरे किनारे पर बादशाह की सवारी खड़ी देखी कदम बोसी की आरजू में घोड़े को दरिया में डाल दिया हाथ मार कर हजूर में हाजिर हुआ इश-तियाकके कलेजे से लगाया अब और एक आफत नागहानी पेश आई जिस घोड़े पर मैं सवार था शायद बच्चा उसी मादियान का था जिस पर मलक: सवार थी या जीनत के बाइस से मेरे मरकब को देखकर घोड़ीने भी जल्दी कर२ अपने

तईं मलकः समेत मेरे पीछे दरिया में गिराया और तैरने लगा मलकः ने भी घबरा कर बाग खैंची वह मुँह की नरम थी उलट गई मलकः गोते खाकर दरिया में डूब गई फिर उन दोनों का निशान नजर न आया वहजाद खांने यह हालत देख कर अपने तईं घोड़े समेत मलकः की मदद की खातिर दरिया में पहुँचाया वह भी उस भंवर में आगया निकल न सका वहुतेरे हाथ पाँव फैलाये कुछ बस न चला डूब गया जहां पनाह ने यह वारदात देख कर महाजाल मंगवा कर फिकवाया मलहों और गोतेखोरों को फरमाया उन्होंने सारा दरिया छान गेरा थाह की मिट्टी ले आये ऐ फकीरों यह हादिसा ऐसा हुवा कि मैं सौदाई और जनूनी होगया और फकीर बन कर यही कहता फिरता था।

मिसरा।

इन नैनों का यही विशेष। वह भी देखा यह भी देख।

अगर कहीं मलकः गायब होजाती तो दिलको

तसल्ली आती फिर तलाश को निकालता था सबर करता लेकिन जब नजरों के रूबरू गर्क होगये तो कुछ बस न चला आखिर जी में यही लहर आई कि दरिया में डूब आऊं शायद अपने महबूब को मर कर पाऊं एक रोज रातको उसी दरिया में बैठा और डूबना का इरादा कर गले तक पानी में गया चाहता था कि आगें पांव रक्खु और गोता खाऊँ वहीं सवार बुरकः पोश जिन्होंने इनकी बिशारत दी है आ पहुँचे मेरा हाथ पकड़ लिया और दिलासा दिया कि खातिरजमा रख मलकः और वहजात खां जीते हैं तू अपनी जान क्यों खोता है दुनियां में ऐसा भी होता है खुदा के दरगाह से मायूस मत हो अगर जीता रहेगा तो तेरा मुलाकात उन दोनों से एक न एक रोज हो रहेगी अब तू रूम की तरफ जा और मीदो दुरवेश दिलरेस वहां गये हैं उनसे जब तू मिलेगा अपना मुराद को पहुँचेगा फकीर बमूजिब अपने हादी के मैं भी खिदमत शरीफ में आकर हाजिर हुआ हूं उम्मेद

कवी है कि हर एक अपने अपने मतलब का पहुंचे टुक गदाका यह अहिवाल था जो तमाम कह सुनाया ।

सैर चौथे दरवेश की ।

चौथा फ़क़ीर अपनी सैर की हक़ीक़त ।
रो रो कर इस तरह बयान करने लगा ॥

रुबाई ।

किस्सा हमारी बेसरो पाई का अब सुनो ।
टुक अपना ध्यानरख के मेरा हाल सब सुनो ॥
किस वास्ते मैं आया हूँ यहां तक तबाह हो ।
सारा बयान करता हूँ इसका सबब सुनो ॥

या मुरशद अल्लाह ज़रा मुतवज्जो हों ये फ़क़ीर जो इस हालत में गिरफ्तार है चीन के बादशाह का बेटा है नाज़ो न्यामत से परवरिश पाई और बखूबी तरबियत पाई ज़माने के भले बुरे से वाक़िफ़ न था कि हमेशाः योंही निभेगी ऐन बेफिकरी में यह हादसः दरकार हुआ कि क़िब्लः आलम जो वालिद इस यतीम के थे उन्होंने रहलत फ़रमाई जाकन्दनी के वक्त अपने

छोटे भाई को जो मेरा चचा है बुलाया और फरमाया कि हमने तो सब माल मुल्क छोड़ कर इरादा कूच का किया लेकिन वह वसीयत मेरी बजा लाइयो बुजुर्गों को कायम फरमाइयो जब तलक शाह जादा जो मालिक इसतख्त और छत्र का है न हो शऊर सँभाले और अपना घर देखे भाले तुम इसका निआयत कीजो सिपाह रय्यत को खराब होने न दीजियो जब वह बालिग हो सब इसको समझा बुझाकर तख्त हवाले कीजो और रोशन अख्तर जो तुमारी बेटी है उससे शादी करके तुम सल्तनत से किनारा पकड़ना इस बन्दोबस्त और सलूक से बादशाहत अपने खानदान में कायम रहैगी कुछ खलल न आयेगा यह कह कर आपतो जान हक्क तसलीम हुई चचा बादशाह हुए और बंदोबस्त मुल्क का करने लगे मुझे हुक्म किया कि जनाने महल में रहा करे जब तक जवान न हो बाहर न निकले यह फकीर चौदह बरसकी उम्र तक बेगमात और खवासों में पलता रहा और खेला कूदा किया

और चचाकी बेटी से शादी की खबर सुन कर शाद था और उस उम्मेद पर बेफिक्र रहता और दिल में कहता अब कोई दिनों में बादशाहत भी हाथ लगेगी और कत खुदाई भी होगी दुनियां बाउम्मेद कायम है कि एक हबशी मुबारिक नाम का वालिद मरहूमकी खिदमत में तरबियत हुआ था और उसका बड़ा एतबार था और साहब शऊर और नमकहलाल था में अक्सर उसके नजदीक जा बैठता वह भी मुझे बहुत प्यार करता और मेरी जवानी देख कर खुश होता और कहता अल-हम्दलिल्लाह ऐ शाहजादे अब तुम जवान हुए इन्शाअल्लाह ताला अब करीब तुम्हारा चचा ज़ुल सुभानी की नसीहत पर अमल करेगा अपनी बेटी और तुम्हारे वालिद की तख्त तुम्हें देगा एकरोज यह इत्तफाक हुआ कि एक दाई महेली ने बेगु-नाह मेरे तईं ऐसा तमाचा खींच कर मारा कि मेरे गाल पर पांचों अँगुलियों का निशान उभर आया में रोता हुआ मुबारिक के पास गया उसने

मुझे गले लगा लिया और आंसु आस्तीन से
पोंछे और कहा कि चलो तुम्हें बादशाह के पास
ले चलुँ शायद देखकर मेहरबान हो और लायक
समझ कर तुम्हारा हक तुम्हें दें उसी वक्त चचा
के हुजूर में ले गया चचा ने दरबार में निहायत
शफ़क्कत की और पूछा कि क्यों दिलगीरहोऔर
आज यहां क्यों कर आये मुबारिक बोला कुछ
अर्ज करने आये हैं यह सुन कर खुद बखुद
कहने लगा कि अब मियां का ब्याह करदेते हैं
मुबारिक ने कहा बहुत मुबारिक है वोंही नजमी
और रम्मालों को रूबरू तलब किया और
उपरी दिलसे पूछाकि इस सालमें कौनसा महीना
और कौन सी घड़ी मुहूर्त मुबारिक है कि सरं-
जाम शादी का करूँ उन्होंने मरजी पाकर और
गिन गिना कर अर्ज की कि किब्लः आलम यह
वर्ष सारा नहुस है इस चांद मे कोई तारीख सही
नहीं ठहरती अगर यह साल तमाम बखैर आफियत
से कटे तो आयन्द स्रौर कारके लिये बेहतर है

बादशाह ने मुबारिक की तरफ देखा और कहा शाहज़ादे को महल में ले जाओ खुदा चाहे तो इस सालके गुजरने के बाद उसकी अमानत उसके हवाले करूँगा खातिर जमा रक्खो और पढ़े लिखे मुबारिक ने सलाम किया मुझे साथ लेकर महल में पहुँचा दिया दो तीन दिनके बाद मैं मुबारिक के पास गया मुझे देखते ही रोने लगा तो मैं हैरान हुआ और पूछा दादा खैर तो है तुम्हारे रोने का क्या बाइस है तब खैर ख्वाह जो मुझे दिलो जान से चाहता था बोला कि मैं उस रोज तुम्हे उस ज़ालिम के पास लेगया काश के अगर यह जानता तो न ले जाता मैंने घबरा कर कहा मेरे जानेमें क्या ऐसी कहावत हुई कहो तो सही तब उसने कहाकि सब अमीर वज़ीर अरकान दौलत छोटे बड़े तुम्हारे बाप को तुम्हें देख कर खुश हुए और खुदा की शुक्र करने लगे कि अब हमारा शाहजादा जवान हुआ और सल्त-नत के काबिल हुआ अब कोई दिनों में हक़

हक़दार को मिलेगा अब हमारी कदर दानी करेगा और खानेज़ाद मौरूसियों क कदर समझेगा यह खबर उस बेइमान को पहुँची उसी छाती पर सांप लोटने लगा मुझे खिलवत में बुलाकर कहने लगा ऐ मुबारिक अब ऐसा काम कर कि शाहजादे को किसी फ़रेबसे मारडाल और उसका खटका मेरे जी से निकालजो मेरे खातिर जमाहो तबसे मैं बदह-वास हो रहूं कि तेरा चचा तेरी ज़ानकादुश्मन हुआ है ज्योंही मुबारिक से यह खबर ना मुनासिब मैंने सुना बगैर मारे मर गया और जान के डर से पांव पर गिर पड़ा कि वास्ते खुदा के मैं सल्तनत से दरगुजारा किसी तरह से मेरा जी बचे उस गुलाम वफ़ादार ने मेरा शिर उठा छातीसे लगा लिया और जवाब दिया कि कुछ खतरा नहीं एक तदबीर मुझे सूझी है अगर रास्त आवे तो कुछ परवाह नहीं ज़िन्दगी है तो अगलब है कि इस फ़िक्र से तेरी जान बचे और अपने मतलब से कामयाब हो यह भरोसा देकर मुझे साथ ले-

कर उस जगह जहां बादशाह मगफूर यानी वालिद इस फकीर के सोते बैठते थे गया और मेरी ख़ातिर जमा की कि वहां एक कुरसी बिछी थी एक तरफ मुझे कहा और एक तरफ आप आप पकड़ कर संदली को सरकाया और कुर्सी के तले का फ़र्श उठाया और जमीन को खोदने लगा एक बारगी एक खिड़की नमूद हुई कि जंजीर और कुफ्ल उसमें लगा है मुझे बुलाया अपने दिल में मुकर्रिर समझा कि मेरे जिबह करने और गाड़ने को यह गढ़ा खोदा है मौत आंखो के आगे फिर गई लाचार चुपके २ कलमा पढ़ता हुआ नजदीक गया देखता हूं तो उस दरीचे के अन्दर इमारत है और चार मकान हैं और हर एक दालान में दस दस मेखें सोने की जंजीरों में जकड़ी हुई लटकती हैं और हर एक गोली के मुंह पर एक सोने की ईंट और एक बन्दर जड़ाऊ वना हुआ बैठा है उनतालीस गोलियां चारों मकानों में गिनी और एक खमे

को देखा कि मुँहामुँह अशर्फियाँ उस पर न मैमू है न खिश्त है और एक हौज जवाहर से लबालब भरा हुआ देखा मैंने मुबारक से पूछा कि ऐ दादा यह तिलस्म क्या है और किसका मकान और यह किस काम का है बोला कि यह बन्दर जो देखते हो इनका यह माजरा है कि तुम्हारे बाप ने जवानी के वक्त से मुल्क सादिक जो जिन्नों का बादशाह है उसके साथ दोस्ती और आमदरफ्त पैदा की थी चुनांचे हर साल में एक दफे कई तरह के तुहफे खुशबू के और इस मुल्क की सौगातें ले जाते और एक महीने के करीब उसकी खिदमत में रहते जब रुखसत होते तो मुल्कसादिक एक बन्दर जमर्रुद का देता हमारा बादशाह उसे लाकर इस तैखाने में रखता इस बात से सिवाय मेरे कोई दूसरा मुत्तले न था एक मरतबः गुलाम ने अर्ज की कि जहांपनाह लाखों रुपये का तुहफः ले जाते हैं और वहां एक बूजनः पत्थर का मुरदह आप ले आते हैं इसका आखिर क्या

फायदा है जवाब मेरी इस बात का मुसकराकर फरमाया खबरदार कहीं जाहिर न कीजियो यह शर्त है यह एक मैमूं बेजान जो तू देखता है हरएक के हजार देव जबरदस्त तावे और फरमावरदार हैं लेकिन जब तलक चालीसों बन्दर पूरे जमा न होवें तब तक यह सब निकम्मे हैं कुछ काम न आयेंगे सो एक बन्दर की कम थी कि उस बरस बादशाह ने वफात पाई इतना मेहनत कुछ नेक न लगी उसका फायदा जाहिर न हुआ ऐ शाहजादे तेरी यह हालत बकसी को देखकर मझे याद आया और जो में यह ठहराया कि किसी तरह तुझको मालिक सादिक के पास ले चलुं और तेरे चचा का जुल्म बयान करूँ गालिब है कि वह बाप की दोस्ती याद करके एक बूजनाः जो बाकी है तुझे दे तब उनकी मदद से तेरा मुल्क हाथ आये और चैन बाचैन से सल्तनत तू बखातिर जमा करे और बिलफैल इस हरकत से तेरी जान बचती है अगर जो कुछ

न हो तो इस जालिम के हाथ के सिवाय इस तदबीर के और कोई सूरत मुखलसी की नजर नहीं आती मैंने उसकी जबानी यह सब कैफियत सुनकर कहा कि दादा जान अब तू मेरी जान का मुखतियार है जो मेरे हक में भला हो से कर यह सुन इत्र और जो कुछ वहां के ले जाने की खातिर मुनासिब जाना खरीद करने बाजार में गया दूसरे दिन मेरे उस काफिर चचा के पास जो बजाय अबूजहल के था गया और कहा जहांपनाह शाहजादे के मारडालनेकी एकसूरत मैंनेदिलमें ठहराई है अगर हुक्म हो तो अर्ज करूँ वह कम्बख्त खुश होकर बोला वो क्या तदबीर है तब मुबारिक ने कहा कि इसके मार डालने में सब तरह आपकी बदनामी है मगर मैं इसे बाहर जङ्गल में लेजा कर ठिकाने लगाआऊं और गाड़ दाबकर चला आऊं हरगिज कोई महरम न होगा कि क्या हुआ यह तदबीर मुबारिक से सुन कर बोला कि बहुत मुबारिक मैं यह चाहता हूं कि वह सला-

मत न रहे उसका दगदगा मेरे दिल में है अगर मुझे इस फिक्र से तू छुड़ायेगा को इस खिदमत के ऐवज बहुत पायेगा जहां तेरी जी चाहे ले जा कर खपादे मुझे यह खुशखबरी सुनादे मुबारिक ने बादशाह की तरफ से अपनी दिलजमई करके मुझे साथ लिया और वो तुहफे लेकर आधी रात को शहर से कूच किया और उत्तर की सिम्त चला एक महीने तक बाहम चला गया एक रोज रास्ते में चले जाते थे कि मुबारिक बोला शुक्र खुदा का आज मंजल मकसूद को पहुंचे मैंने सुन कर कहा कि दादा यह तूने क्या कहा कहने लगा ऐ शाहजादे तू जिन्नों का लश्कर क्या नहीं देखता है मैंने कहा मुझे तेरे सिवा और कुछ नजर नहीं आता मुबारिक ने एक सुरमादानी निकाल कर सुलेमानी सुरमे की सलाइयां मेरी दोनों आंखों में फेरदी त्योंही जिन्नोंका खलकत और लश्कर के तंबू कनात नजर आने लगे लेकिन सब खुशरो और खुश लिबास मुबारिक को पहचान कर

आशनाई की राहसे गले मिलता और मिजाज करता आखिर जाते जाते बादशाही सराचों के नज़-दीक गया और बारगाह में दाखिल हुए देखता हूं तो रोशनी करीने से रोशन और संदलियां तरह ब तरह की दुरुपा बिछी हैं और आलम फ़जाल दुरवेश और अमीर वजीर मीर बख्शी दीवान उन पर बैठे हैं यसावल गरज बरदार ओहदः लिये चुपके हाथ बांधे खड़े हैं और दरमियान में एक तख्त मुरस्से का बिछा है उस पर मलिकः सादिका ताज और चार चार कब मोतियों के पहने हुए मसनद पर तकिये लगाये बड़ी शान शौकत से बैठी है मैंने नजदीक जाकर सलाम किया मेह-रबानी से बैठने का हुक्म किया फिरखाने का चरचा हुआ बादफ़रागत के दस्तरख्वान बढ़ाया गया तब मुबारिक की तरफ़ तवज्जे होकर अहवाल मेरा पूछा मुबारिक ने कहा अब इनके बाप की जगह पर इनका चचा बादशाहत करता है और इनका दु-श्मन जानी हुआ है इस लिये में इन्हें वहां ले

भाग कर आपकी खिदमत में आया हूँ यतीम है और सल्तनत का इनका हक है लेकिन बगैर मुरब्बी किसी के कुछ नहीं हो सक्ता हुजूर की दस्तगीरी के बाइस इस मजलूम की परवरिश होती है इसके बाप की खिदमत याद करके इसकी मदद फरमाओ और वह चालीसवाँ बन्दर इनायत कीजियो वह चालीसो पूरे हों और यह अपने मकसद को पहुँचे तुम्हारी जान व माल की दुआ दें सिवाय साहब की पनाह के कोई ठिकाना नजर नहीं आता यह तमाम कैफियत सुनकर मलक: सादिकने ताम्मुल करके कहा कि वाकई हकुक: खिदमत और दोस्ती बादशाह मगफूर की हमारे ऊपर थी और यह बिचारा तबाह होकर अपनी सल्तनत मौरूसी छोड़ कर जान बचाने के वास्ते यहाँ तक आया है और हमारे दामन दौलत में पनाह ली तामकदूर किसी तरह से कमी न होगी और देर न करूँगा लेकिन एक काम हमारा है अगर वह इससे होसका और खयानत न की और

बखूबी अंजाम दिया और इस इम्तहान में पूरा उतरा तो मैं कौल व करार करता हूँ कि ज्यादह बादशाह से सलूक करूँगा और जो वह चाहेगा सो दूँगा मैंने हाथ बाँधकर इल्तमास किया कि इस फिदवी से तो बचकर दूर जो खिदमत सरकार को हो सकेगी बसरो चश्म बजा लाऊंगा और इसको बखूबी बदयानतदारी और होशियारी से करेगा और दोनों जहान की सआदत समझेगा और फरमाया कि तू अभी लड़का है इस वास्ते बार २ ताकीद करता हूँ मुबादा खयानत करे और आफत में पड़े मैंने कहा खुद बादशाह के अकबाल से आसान करेगा और मैं हत्तुलमकदूर कोशिश करूँगा और अमानत हुजूरतक लेआऊंगा यह सुनकर मलकः सादिकने मुझको करीब बुल वाया और एक कागज दस्तगीसे निकाल कर मेरे तईं दिखलाया और कहा कि यह जिस शख्सकी शबी है उसे जहां से जाने तलाश करके मेरी खातिर पैदा करके ला और जिस घड़ी तू नाम व

निशान पाये और सामनेआये मेरी तरफसे बहुत इश्तियाक जाहिर कीजियो अगर यह खिदमत तुझसे सरंजाम हुई तो जितनी तवक्कै तुझे मंजूर है उसे ज्यादा गोर परदाख्त की जायगी नहीं तो जैसा करेगा वैसा पायेगा मैं ने उस कागज कोजो देखा कि एक तसवीर नजर पड़ी कि गशसा आने लगा वजीर मारे डरके अपने तईं संभाला और कहा बहुत खुब मैं रुखसत होता हूं अगर खुदा को मेरा भला करना है तो बमूजिब हुक्म हुजूर के मुझसे अमल में आयेगा यह कहकर मुबारिक को हमराह लेकर जंगलकी राहली गांव २ बस्ती बस्ती शहर २ मुल्क २ फिरने लगा और हरएक से निशान व पता उसका तहकीक करता किसी ने न कहा कि हां मैं जानता हूं या किसी से मजकूर सुना है सात बरस तक उसी आलम में हैरानी व परेशानी सहता हुआ और नगरमें वारिद हुआ इमारत आली और आबाद लेकिन वहां का हरएक मुतनफिस इस्मआजम पढ़ताथा और खुदा

का इबादत और बंदगी करता था एक अन्धा हिन्दुस्तानी फकीर भीख मांगता नजर आया लेकिन किसी ने एक कौड़ी या एक निवाला न दिया मुझे तअज्जब आया उसके ऊपर रहम खाया जेब में से एक असर्फी निकाल कर उसके हाथ दी वह लेकर बोला कि दाता तेरा भला करे तू शायद मुशाफिर है इस शहरका वासिंदा नहीं है मैंने कहा फिलवाकई मैं सात बरससे तबाह हुआ हूं जिस काम को निकला हूं सुराग नहीं मिलता आज इस बुलन्दे में आ पहुँचा हूँ वह बूढ़ा दुआयें देकर चला मैं उसके पीछे लग लिया बाहर शहरके एक मकान आलीशान नजर आया वह उसके अन्दर गया फिर मैं भी चला तो जाबजा इमारत गिरी पड़ी है और बेमरम्मत हो रही है मैंने दिलमें कहा महलतो लायक बादशाहों के है जिस वक्त तैयार होगी क्याही मकान दिलचस्प बना होगा अब वीरानी से क्या सूरत बन रहा है मालुम नहीं कि उजाड़ क्यों पड़ी है और यह नाबीना इस महल में क्यों बसता है

वह कोर लाठी टेकता हुआ चला जाता था कि एक आवाज आई कि जैसे कोई कहता है कि अब बाप खैर तो है आज सवेरे से क्यों फिरे आते हो पीर मर्द ने सुनकर जवाब दिया कि बेटा खुदाने एक जवान मुसाफिर को मेरे अहिवाल पर मेहर-बान किया उसने एक महर मुझको दी बहुत दिनों से पेट भरके खाना न खाया था सो गोश्त मसाला घी तेल आटा नोन मोल लिया और तेरी खातिर जो कपड़ा था खरीद किया।

अब इसको कितै कर और सीकर पहन और खाना खा पीकर उस सखी के हक्क में दुआदे अगरचे मतलब उसके दिलका मालूम नहीं परखुदा दाना बिना हम बेकसों की दुआ कबूल करे मैंने यह अहिवाल उसकी फाकः कशी का जो सुना बे अख्तयार जी में आया कि बीस अशर्फियां और उसको दूँ लेकिन आवाजकी तरफ ध्यान जो किया तो एक औरत देखा कि ठीक वह तसबीर उसी माशूक की थो तसबीर निकालकर मुकाबिल किया

जरा तफावत न देखा एक नाराह दिलसे निकाला और बेहोश हुआ मुबारिक मेरे तईं बगल में लेकर बैठा और पखा करने लगा ; फमें ज़राहोश आया मैं उसकी तरफ ताक रहा था मुबारिक ने पूछा कि तुमको क्या हुआ अभी मुँहसे जवाब न निकला था वह नाज़नीन बोला कि ऐ जवान खुदासे डर और बेगाने सतरपर निगाह मतकर हया आरशर्मसब को जरूरहै इस लियाकतसे गुफ्तगूकी सूरत औरशकल पर महव होगया मुबारिक मेरी बहुत सी खातिर करने लगा लेकिन दिल की हालत उसको क्या मालूम थी लाचार होकर मैंने पुकारा कि ऐ खुदा के बंदे और इस मकान के रहने वालों में गरीब मुसाफिर हूँ अगर अपने पास मुझे बुलाओ और रहने को जगह दो तो बड़ी बात है उस अन्धे ने नजदीक बुलाया और आवाज पहचान कर गले लगाया और जहां वह गुल बदन बैठी थी उस मकान में ले गया वह एक कोने में छिप गई उस बूढे ने मुझसे पूछा कि अपना मांजरा कहकि

क्यों घरबार छोड़कर अकेला यहां फिरता है तुझे किसकी तलाश है मैंने मलिकः सादिका का नाम लिया और वहां का जिक्र मजकूर न किया इस तौर से कहा कि यह बेशक शाहजादा चीन मा· चीन का है चुनाचेः मेरे वली नियामत हन्नौज बादशाह हैं एक सौदागर से लाखों रुपये देकर तह तसवीर मोल ली थी उसके दखने से सब होश व आराम जाता रहा और फकीर का भेष करके तमाम दुनियां छान मारी अब यहां मेरा तलब मिला है सो तुम्हारी अख्तयार है यह सुनकर अंधे ने एक आह मारी और बोला ऐ अजीज मेरी लड़की बड़ी मुसीबत में गिरफ्तार है किसी बशर की मजाल नहीं कि इससे निकाह करे और फल पाये मैंने कहा उम्मेदवार हूँ मुफस्सिल बयान करो तब उस मर्द अजमी ने अपना इस तौर से माजरा जाहिर किया कि सुन ऐ शाहजादे मैं रईस और आका- बिर इस कम्बख्त शहर का हूँ मेरे बुजुर्ग नामवर आली खान दान थे हक्ताला ने यह बेटी मुझे

इनायत को जब बालिग हुई तो इसकी खूबसूरती और निजाकत व सलीकेका शोर हुआ और सारे मुल्क मे मशहूर हुआ कि फलाने घरमें ऐसी लड़की है कि उसके हुस्न के मुकाबिल परी हूर शरमिन्दा हैं इन्सान का तो क्या मुँह है जो बराबरी करे यह तारीफ इस शहर के शाहजादे ने सुनी गायबानः बगैर देखे भाले आशिक हुआ और खाना पीना छोड़ दिया अटवाटी खट पाटी लेकर पड़ा आखिर बादशाह को यह बात मालूम हुई मेरे तईं रातको खिदमत में बुलाया और यह जिक्र मजकुर दरम्यान में लाया और मुझे बातों में फुसलाया ताके निसबत नाता करने में भी राजी हो मैं भी समझा कि जब बेटी घरमें पैदा हुई तो किसी न किसी से ब्याही जायगी बस इससे क्या बेहतर है कि बादशाह जादेसे मंसूब कर दी जाय इसमें बादशाह भी मिन्नतवार होता है मैं कबूल करके रुखसत हुआ उसी दिन से तैयारी दोनों तरफ ब्याहकी होने लगी एक

अच्छी सायत में काजी मुफ्ती आलम फाजिलअका-बिर सब जमा हुए निकाह बांधा गया महर मुय्यन हुआ दुल्हन को बड़ी धूम से लेगये सब रस्म रसूमात करके फारिग हुआ नौशाने जब रातको कस्द जमएका किया उस मकान में शोरगुल ऐसा हुआ कि जो लोग बाहर चौकी के थे हैरान हुए दरवाजा कोठरी का खोलकर चाहा देखें क्याहाल-तहै अन्दर से ऐसा बंद था कि किवाड़ खोल न सके एक दममें वहाँ रोने की आवाज कम हुई फाटक की चूल उखाड़ कर देखा कि दूल्हा का सिर कटा हुआ तड़फता है दुल्हनके मुँह से कफ चला जाता है और उसी मिट्टी लोहू में लिथड़ी हुई वेहवास पड़ी लोटती है यह कयामत देखकर सबके होश जाते रहे ऐसी खुशीमें यह गम जाहिर हुआ बादशाह को खबर पहुँची सिर पीटताहुआ दौड़ा तमाम अरकान सल्तनत के जमा हुए पर किसी को अक्ल काम नहीं करती थी कि इस अहवाल को दरयाफ्त करे निहायत आखिर को

बादशाह ने उस कलक हालत में हुक्म किया कि उस कम्बख्त नाशुदनी दुलहन का भी सिर काट डाला यह बात बादशाह की जबान से ज्योंही निकली फिर वैसाही हंगामा बरपा हुआ बादशाह डरा और अपनी जानके खतरे से निकल भागा और फरमाया कि इसे महल से बाहर निकाल दो खवासें ने इस लड़की को मेरे घरमें पहुँचा दिया यह चर्चा दुनियाँ में मशहूर हुआ जिसने सुना हैरान हुए और शाहजादे के मारे जाने के सबब से खुद बादशाह और जितने बाशिंदे इस शहर के हैं मेरे दुश्मन जानी हुए जब मातमदारी से फरागत हुई और चहलम होचुका.बादशाहने अर-कान दौलत से सलाह पूछी कि अब क्या किया चाहिये सबोंने कहा और तो कुछ नहीं होस-क्तापर जाहिर में दिलकी तसल्ली और सब्रके वास्ते और लड़की को उसके बाप समेत मरवा डालिये और घरबार सब जब्तकर लीजिये जब यह मेरी सजामकर्रर हुईकोतवाल को हुक्म हुआ उसने

आकर चारों तरफसे मेरी हवेलीको घेरलिया और नरसिंगी दरवाजे पर बजाया और चाहाकि अन्दर घुसेऔर बादशाह का हुक्म बजालायेंगे बस ईंट पत्थर ऐसे बरसने लगेकि तमाम फौजताबन्न लास की अपनासिर मुंह बचाकर जिधरतिधर भागी और एक आवाज मुहीबबादशाहने महलमें अपने कानों से सुनाकि क्यों कम्बख्ती आई क्याशैतानलगा हैभला चाहते होतो उसनाजनीनके अहवालका मुतअर्रिजन होना तो जोकुछ तेरे बेटेने उससे शादी करके देखा तूभी उसकी दुश्मनीसे देखेगा अबअगर इसको सता वेगातो सजा पावेगा यह सुनके बादशाहको मारेदह शतके तपचढ़ीवोहीं हुक्मकियाकि इन बदबख्तोंसे कोईमजाहम न हो कुछ कहो न सनो हवेलीमें पड़ा रहनेदो जोर वजुल्म उनपरनकरो उसदिनसे आमिल बादशाही जानकर दुआ तावीज और स्याने जंत्र मंत्रकरतेहैं और सबबाशिंदे इसशहरके इस्मआजम और कुरान मजीद करतेहैं मुद्दतसेयह तमाशा होरहा है लेकिन अब तक कुछ इसरार मालूम नहीं है और

अभी भी हरगिज इत्तलानहीं मगर इस लड़कीसे एक बार पूछाकि तुमने अपनीआंखोंसेक्यादेखाथा बोली और तो कुछमैं नहीं जानती लेकिन यह नजर आया कि जिसवक्त मेरे खाविंदने कस्दमुबाशरत का किया छतफटकर तख्तमुरस्सेका निकलाउसपर एकजवान खूबसूरत शहाना लिबास पहने बैठाथा और साथ बहुतसे आदमी अहतमाम करते हुए उस मकानमें आये और शाहजादेके कत्लपर मुस्तैद हुएसहशख्स सरदार मेरे नजदीक आया बोला क्यों जानी अब हमसे कहां भागोगी उनकी सूरतें आदमी की सी थीं लेकिन पांव बकरियों के से नजर आये मेरा कलेजा धड़कने लगा और खौफसे गशमें आगई फिर मुझे कुछ सुध नहीं कि आखिर क्या हुआ तबसे मेरा यह अहवाल है कि इस टूटे मकान में हम दोनों जो पड़े रहते हैं बादशाह के गुस्से के बाइस अपने रफीक सब जुदा होगए और मैं गदाई करता हूँ उसपर भी कोई नहीं देता बल्कि दूकान खड़े होनेको गवारानहीं इस कम्बख्त लड़कीके बदनपर

सत्ता नहीं किस तरह छिपावें और खाने को मय
स्सरनहीं जो पेटभर कर खावे खुदासे यह चाहता
हूं कि मौत हमारी आवे व जमीन फटे और नाशु
दनी समावे इस जीने से मरना भला है खुदा जाने
तुझे शायद हमारेही वास्ते भेजा है जो तू ने
रहम खाकर एक मुहरदी खाना मजेदार पकाकर
खाया और बेटोकी खातिर कपड़ाभी बनाया खुदा
की दरगाह में शुक्र किया और तुझे दुआ दी
अगर इस पर आसेब जिन्न या परीका नहीं होता
तेरी खिदमत में लौंडी की जगह देता और अपनी
सआदत जानता यहअहवाल इस आजिजका है
उसके दर पै मतहो और इस कस्द से दर गुजर
यहसब माजरा सुनकर मैंने बहुत मिन्नत व जारी
की मुझे अपनी फरजिंदो में कबूल कर जो मेरी
किस्मत में बदा होगासो होगा वह पीरमर्द हर-
गिजराजी न हुआ जब शाम हुई उससे रुखसत
होकर सरायमें आया मुबारिकने कहालो शाहजादे
मुबारिक हो खुदा ने असबाब दुरुस्त कियाहै वार

मेहनत अकारथ नगई मैंने कहा आज कितनी खुशा
मदकी परवह अन्धा बेईमान राजी नहीं होता
खुदाजाने देवेगाया नहीं परमेरे दिलकी यहहालत
थी कि रातकाटनी मुशकिल हुई कब सुबह होतो
फिर जाकर हाजिरहूँ कभीयह ख्यालआताथा अगर
वहमेहरबानहो और कबूलकरेतो मुबारिकमलिकःसा
दिककीखातिरले जायगाफिर कहताभला हाथतोआ
वेमुबारिककोमनावनाकरकेऐशकरूँगा फिरजीमेंयह
खौफखाताथाकि अगरमुबारिकभी कबूलकरै तोजि
न्नोंकेहाथसेवही मेरीनौबतहोगीजो बादशाहजादेकी
हुईऔरइसशहरकाबादशाह कब चाहैगा किउसका
बेटामाराजावेगाऔर दूसरा खुशीमनावे तमाम रात
नींद उचाटहोगई और उसीमन सुबेकेउलझड़ेमेंकटी
जबरोजरोशन हुआ मैं चला चौकमेंसे अच्छे२थान
पान पोशाकी और गोटा कनारी और मेवे खुश्क
और बर खरीद खरीद करके उसबुजुर्गकी खिदमतमें
हाजिर हुआनिहायत खुश होकर बोलाकि सबको
अपनी जानसे ज्यादा कुछ अजीज नहीं पर

अगर मेरी जानभी तेरे काम आवे तो दरोग
न करूँगा और अपनी बेटी भी तेरे हवाले करूँगा
लेकिन यही खौफ आता है कि उस हरकत से
तेरी जानको खतरा न हो यह दाग लानत का
मेरे ऊपर ताक़यामत तक रहे मैंने कहा वाके
इस वस्ती में बेकस हूं और तुम मेरे दीन दुनि-
यां के बाप हो मैं इस अरजू में मुद्दत से क्या २
तबाहा और परेशानी खैंचता हुआ कैसे २ सदमें
उठाता हुआ यहां तक आया और मतलब काभी
सुराग पाया खुदा ने तुम्हें मेहरबान किया जो
ब्याह देने पर रजामन्द हुए लेकिन मेरे वास्ते
आगा पीछा करते हो जरा मुन्सिफ होकर गौर
फरमाओ तो इश्क की तलवार से सिर बचाना
और अपनी जानको छिपाना किस मजहब में
दुरुस्त है हरचन्द बादाबाद मैंने सब तरह अपने
तईं बरबाद किया माशूक की विलास को अपने
जिन्दगी समझता हूं अपनेमरने जीनेकीकुछ पर-
वाह नहीं बल्कि अगर नाउम्मेद हूंगा तो बिनअजल

मरजाऊंगा और तुम्हारा कयामत में दामनगीर हूंगा गरज इस गुफ्त शुनीद से और हां में हां करीब एक महीने के खौफ जदा गुजरा हर रोज उस बुजुर्गकी खिदमत में दौड़ा जाता और खुशामद बरामद किया करता इत्तिफाकन वह बूढा बीमार हुआ मैं उसकी बीमार दारीमें हाजिर रहा हमेशा कारूरःहकी मके पासले जाता जो नुखसा लिख देता उसीतरकीब से बनाकर पिलादेता और गिजा अपने हाथ से पकाकरकई निवाला खिलाता एक दिन मेहरबान होकर कहने लगा ऐ जवान तू बड़ा जिद्दी है मैंने हरचंद सारी कहावतें कह सुनाईं और मना करता हूं कि इस कामसे बाज आजो है तो जहान है जो ख्वामख्वाह कूएमें गिरा चाहता है अच्छा अपनी लड़की से तेरी सई करूँगा देखूँ वह क्या कहती है या फ़करुअल्लाह यह खुशखबरी सुनकर मैं ऐसा फूलाकि कपड़ों में न समाया आदाब बजा लाया और कहाकि अब अपने मेरे जाने की फिक्र की रुखसत होकर मकान पर आया और तमाम शब

मुबारिक से यही जिक्र मजकूर रहा कहां की नींद और कहां की भूक सुबह नूरके वक्त फिर जाकर मौ-जूद हुआ सलाम किया फरमाने लगा कि लो अपनी बेटी हमने तुमको दी खुदामुबारिक रखे तुम दोनों को खुदा के हिफ्ज अमान में सोपा जब तलकमेरे दममें दमहै मेरी आँखों के सामने रहो जब मेरी आखें मुद जायंगी तुम्हारे जीमें आवेगा सो कीजो मुख्तारहो कितने दिन पीछे वहमर्द बुजुर्ग जान वह-कतसलीमहुआ रोपीटकर बजही जबतकफीन किया बाद तीजेके उस नाज़नी को मुबारिक डोली में करके कारवां संगमें लेगया और मुझसे काहा कि यह अमानत मल्का सादिककी है खबरदार खयानत न कीजियो और यह मेहनत मशक्कत बरबाद न कीजो मैंने कहा ऐ मल्कः सादिक यहाँ कहाँ है दिल नहीं मानता है मैं क्योंकर सबरकरूँ जो कुछ हो सो हो जीयूँ या मरूँ अब तो ऐश करलुँ मुबारिकने दिक होकर डाटाकि लड़कपन न करो अभी एक दममें कुछका कुछ होजाता है मल्कःसादि-

इसको दूर जानते हो उसका फरमाना नहीं मानते हो उसने चलते वक्त पहलेही खूब ऊंच नीच समझादी है अगर कहने पर रहोगे और इसको सही सला मत वहां तलक ले चलोगे तो वह भी बादशाह है शायद तुम्हारी मेहनत पर रहम खाकर तुम्हीं को बख्श देतो क्या अच्छी बात होवे प्रीत की रीत रहे और मीतकी मीत हाथ लगेबारे उसके डराने और समझाने पर मैं हैरान होकर चुपका होरहा दो सांड-नी खरीद की और कजा़वा पर सवार होकर मलकः सादिक़के मुल्ककी राह ली चलते २ एक मैदान में आवाज़ गुलशोर की आने लगी मुबारिकने कहा शुक्र खुदा का हमारी मेहनत नेक लगी यह लशकर जिन्नों का आ पहुंचा बारे मुबारिक ने उनसे मिल जुलकर पूछाकि कहां का इरादा किया है वह बोला कि बादशाहने तुम्हारे इस्तक़बाल के वास्ते हमे तईनात किया है अब तुहारे फ़रमाबरदार हैं अगर कहोतो एकदममें रोबरूले चलेंमुबारिकने कहा देखो किस मेहनतो से खुदाने बादशाहके हुजूरमेंहमेंसुर्खरू

किया अब जल्दी क्या जरूर है अगर खुदा नख्वा-
स्ते कुछ खलल न पड़ जाय तो हमारी मेहनत
अकारथहो और जहां पनाहके गुस्सेमे पड़ें सबों
ने कहा इसके तुम मुखतार हो जिस तरह जी चाहे
चलो अगर्चः सब तरह का आराम था पर रात
दिन चलने से काम था! जब नजदीक जा पहुचाँ
मुबारिक को सोता देख कर उस नाजनीन के कदमों
पर सिर रख कर अपने दिल की बेकरारी और
मलिक सादिक के सबब से लाचारी निहायत
मिन्नत बनारी कहने लगा कि जिस रोज से तुम्हारी
तसबीर देखी है ख्वाब और आराम मैंने अपने
ऊपर हराम किया अबजो खुदा ने यह दिन दिखाया
तो महज बेगाना होरहा हूं फरमाने लगी कि मेरा
भी दिल तुम्हारी तरफ माइल है कि तुमने मेरी
खातिर क्या २ हर्ज मर्ज उठाया और किस २
मशक्कतों से ले आये हो खुदा को याद करो और
मुझे भूल न जाइयो देखो तो परदे गैब से क्या
ज़ाहिर होता है यह कर ऐसी बे अख्तयार हो

डाढ़ मार कर रोई कि हिचकी लगगई इधर मेरा यह हाल उधर उसका वह हाल इसमें मुबारिक की नींद उड़ गई वह हम दोनों को मुश्ताकी का रोना देख कर रोने लगा और बोला कि खातिर जमा रख एक रोगन मेरे पास है उस गुलबदन के बदन में लगा दूँगा उसकीबूसे मालिक सादिक का जी हट जायगा यकीन है कि तुमको बख्शदे मुबारिक से यह तदबीर सुनकर दिलको ढाढ़स होगई उसके गले से लगाकर लाड किया और कहा कि दादा अब तू मेरे बाप की जगह है तेरे बाइस मेरी जान बची अब भी ऐसा काम कर जिसमें ेरी जिन्दगी हो नहीं तो इस गम में मरजाऊँगा और बहुतसी तसल्ली दी जब रोज रोगन हुआ आवज जिन्नों की आने लगी देखातो कई खवासें मालकः सादिक के जाते हैं और दो सरोपा भारी हमारे लिये लाते हैं और एक चडोल मोतियों की तोड़ पड़ी हुई उसके साथ है मुबारिक ने उस नाजनीन के तेल मल दिया और पोशाक पहना

बनाकर मालिक: सादिक के पास लाया वादशाह ने मुझे देखकर बहुत सरफ़राज किया और इज्जत हुरमत से बैठाया और फ़रमाने लगा कि तुझसे मैं ऐसा सलूक़ करूँगा किसी ने आज तक मुझसे न किया होगा वादशाहत तो तेरे बापकी मौजूद है अला-वा अब तू मेरे बेटेकी जगह हुआ यह मेहरबानी की बातें कर रहा था इतने में वह नाजनीन भी रोबरू आई उस रोगन का बू से एक बयक दिमाग परागंदा हुआ और हाल बेहाल होगया तब उसवास की न लासका बाहर उठ कर चला गया और हम दोनों को बुलवाया और मुबारिक की तरफ़ मुतवज्जे होकर कि क्यों जी खूब शर्त बजालाये मैंने खबदार कर दिया था अगर खयानत करोगे तो खफ़गी में पड़ोगे यह कैसी है अब देखे तम्हारा क्या हाल करता हूं बहुत गुस्सा हुवा मुबारिक ने मारे डरके अपना इजारबन्द खोल कर दिखाया कि बादशाह सला-मत जब हजूर के हुक्म से उस कामके वास्ते मुतैयन हुए थे गुलाम ने पहलेही अपनी सलावत काट कर

डिबिया में बन्द करके सर्व मोहार खज़ानची के
हलाले करदी थी और मरहम सुलेमानी लाकर
रवाने हुआ था मुबारिक से यह जबाव सुन कर मेरी
तरफ़ आंख निकाल कर घूरा और कहने लगा तो
यह तेरा काम है और तैश में आकर मुंह से भला
बुरा बकने लगा उस वक्त उसके बद खाव से यों
मालुम होता है कि शायद मुझे जान से मरवा डाले-
गा जब मैंने उसके बशरे से यह दरियाफ्त किया
अपने जी से हाथ धोकर और जान खोकर सिर
गिलाफ़ मुबारिक की कमरसे खेंच कर मालिक
सादिका की तोंद में मारी छुरी के लगतेही थोड़ा
और झूमा मैंने हैरान होकर जाना मुकरर फ़रमाया
फिर अपने दिल में ख्याल किया कि जख्म तो कारी
ऐसा नहीं लगा यह क्या सबब हुआ मैं खड़ा देखता
था कि वह जमीन पर लोट लाकर गेंदकी सूरत बन
अस्मान की तरफ उड़ चला ऐसा बुलदं हुआ कि
आखिर नजरों से गायब हो गया फिर एक पलक
बाद बिजली की तरह कड़कता हुआ और गुस्से में

कुछ बेमानी बकता हुआ नीचे आया और मुझे एक लात मारी के मैं बतौर चारों खाने चित्त गिर पड़ा और जी डूब गया खुदा जाने कि कितना देर में होश आया आँख खोल के जो देखा तो एक ऐसे जङ्गल में पड़ा हूँ कि सिवाय ककंर पत्थर और झड़बेरी के दरख्तों के कुछ नजर नहीं आता अब उस घड़ी कुछ अकल काम नहीं करती कि क्या करूं और कहां जाऊं नाउम्मेदी से एक आह भरकर एक तरफ को राह ली अगर कहीं आदमी की सूरत नजर पड़ती तो मलिकः सादिक का नाम पूछता वह दीवाना जानकर जवाब देता कि हमने तो उसका नाम भी नहीं सुना है एक रोज पहाड़ पर जाकर यह मैं ने इरादा किया कि अपने तई गिराकर जाया करूं मुस्तैद गिरने को हुआ वोंही सवार जुल्फकार बुरकेपोश आ पहुँचा और बोला कि क्यों अपनी जान खोता आदमी पर दुख दरद सबको होता है अब तेरे बुरे दिन गये और भले दिन आये जल्द रूम को जा तीन शख्स ऐसे ही आगये हैं उनसे मुलाकात कर और

वहांके सुलतान से मिला तुम पांचों का मतलब एकही जगह मिलेगा इस फकीर की सैर का यह मजरा है जो अर्ज किया बारे बिशारतसे अपनी मौला मशकिल कुशा के मुरशदों के हुजूरमें आ-पहुँचा हूं और बादशाह की मुलाज़मत हासिल हुई चाहिये कि अब सबको खातिरजमा हो यह बात चार दरवेश और बादशाह आजाद बख्तमें हो रही थी कि इतने में एक महली बादशाहके महलमें से दौड़ाहुआ आया और मुबारिकबादीकी तसलीमें बादशाहके हुजूरमें बजा लाया और अर्ज की इस वक्त शाहज़ादा पैदा हुआ।

खताने पैदा होने शाहजादा बख्त यारके बयान में।

कि आफताब व महताब उसके हुस्न के रोबरू शर्मिंदा है बादशाहने मुतअज्जिब होकर पूछा कि ज़ाहिर में तो किसी हमल न था यह आफताब किसके बुर्जमहलसे नमूदार हुआ उसने इल्तमास

किया किमाहरू खवाराजो बहुत दिनोंसे गज़ब
बादशाही में पड़ीथी बेकसों की मानिंद एक कोने
में पड़ी थी और मारे डरके कोई उसके नज़दीक
न जाता था न अहिवाल पूछता था उस पर यह
फ़ज़ल इलाही हुआ कि चांदसा बेटा उसके पेटसे
पैदा हुआ बादशाहको ऐसी खुशी हासिल हुई कि
शायद मादो मर्ग हो जाय चारो फकीरों ने भी
दुआएँ दीं कि भला बाबातेरा घर आबाद रहे
और उसका कदम मुबारिक हो तेरे सायेके तले
बूढ़ा बढ़ा हो और बादशाह ने कहा यह तुम्हारे
ही कदम की बरक्कत है वल्लाः अपनेतो शान व
गुमान में भी वह बात न थी इजाजत हो तो जाकर
देखूं दुरवेशने कहाकि बिसमिल्लाह सिधारिये बाद-
शाह महल में तशरीफ़ ले गये शाहज़ादे को गोद
में लिया और शुक्र परवरदिगार की जनाबमें किया
कलेजा ठढाहुआ वोहीं छातीसे लगाये हुए लाकर
फकीरोंके कदममों पर डाल दिया दुरवेशोंने दुआयें
पढ़कर झाड़फूंक कर दिया बादशाहने जशनकी

तैयारी की दुहरी नौबतें झड़ने लगी खजानेका मुंह खोल दिया दादो दिहश से एक कौड़ीके मुह-ताज को लखपती कर दिया अरकान दौलत जितने थे सबको दुचन्द जागीर और मन सब से फर-माना हो गये जितना लश्कर था उन्हे पांच वर्ष की तलब इनाम हुई मशायख और इकाबिर को मदद माश और तगमा इनायत हुआ वे नवाओं के बेटे और टक्कर गदाओं के चमले अश-रफी और रुपयोंकी खिचड़ीसे भरदिये और तीन वर्षका खिराज रैय्यतको माफ किया और जो कुछ वायेजोते दोनों हिस्से अपने घरोंको उठाले जाय तमाम शहरमें हजारी बजारी चारों में जहां देखो वहां थेई नाच होरहा है मारे खुशीके हरएक आला अदना बादशाह बख्त बन बैठा ऐन शादी में एक बारगी महल के भीतर से रोने पीटने का गुल मचा खवासें और तुर्कनियां अरदा बेगनियाँ और महली खोजे सिरमें खाकडाले हुए बाहर निकल आए और बादशाहसे कहाकि जिस वक्त शाहजादे

को नहला धुलाकर दाई की गोद में दिया एक अब्रका टुकड़ा आया और दाईकोघेर लिया बाद एक दमके देखेंतो दाई बेहोश पड़ीहै और शाहजादा ग़ायब होगया यह क्या क़यामत टूटी बादशाह यह तअज्जुब बात सुन कर हैरान होरहा और तमाम मुल्क में ख़बैरा पड़ी दो दिन तक किसी के घर में हाड़ी न चढ़ी शाहज़ादे का ग़म खाते और लोहू अपना पीते थे ग़रज़ जिंदगानी से लाचार थे जो इसतरह जीतेथे जब तीसरा दिन हुआ वही बादल फिर आया और एक पन लेटोला जड़ाऊं मोतियों के तोड़े पड़े हुए आया उसी महलमें रख के आप हवा हुआ लोगों ने शाहजादे को उसमें अँगूठा चूसते हुए पाया बादशाह बेगम ने जल्द बलायें लेकर हाथोंमें उठाकर छाती से लगा लिया देखा तो कुरता कमख़ाब का मोतियोंका दामन टका हुआ गले में है और उस पर सलूका तमामी का पहने हुआ है और हाथ पांवमें कड़े मुरस्से केऔर

गलेमें हैकूजनोरतन की पड़ीहै औरझुमका झूमनो चट्टे बट्टे जड़ाऊ धरे हैं सब मारे खुशी के फोड़ेने लगी दुरवेश दुआयें देने लगे तेरा मा का पेट ठंढा रहे और तू बूढ़ा बड़ा हो बादशाहने एक बड़ा महल तामीर करवा कर और फर्श बिछवाकर उसमें दुरवेशों को रक्खा जब सल्तनतके काम से फ़रागत होते तब आ बैठते और सब तरह से खिदमत और खबरगोरी करते लेकिनहरचन्द की चौदन्होजुमरात को वही पारची अब आता और शाहजादेको लेजाता बाद दो दिन के बहके खिलोने और सोगातें हर एक मुल्ककी और हरएक किस्मकी शाहदे के साथ ले आता जिनके देखने से अक्ल इन्सान की हैरान हो जाती इसीकायदे से बादशाहजादे ने खैरियत से सातवें वर्षमें पांवदिया एक शाल गिरह के रोज बादशाह आजादबख्तने फकीरों से कहाकि साईं अल्लाह कुछ मालूम नहीं होता कि शाहजादे को कौन ले जाता है और फिर कौन दे जाता है बड़ा तअज्जुब है यह देखिये अंजाम इसका क्या होता

है दुरवेशों ने कहा एक काम कीजिये एक मसौदा इस मजमून का लिखकर शाहजादे के दबार में रख दें कि तुम्हारी मेहरबानी और मोहब्बत देखकर अपना दिल मुश्तामुलाकात का हुआ है अगर दोस्ती की राहसे अपने अहवालकी इत्तलादीजिये तो खातिर जमा हो और हैरानी बिलकुल दफाहो बादशाह ने मुआफिक सलाह दुरवेशों के अफसानी कागज पर एक रुक्का लिखदिया और उसी महद जरीमें रखदिया शाहजादा बमुजिब कायदे कदीम के गायब हुआ जब शामहुई आजाद बख्त दुरवेशों के बिस्तर परआकर बैठे ओर कलमा कलाम होने लगा एक कागज बादशाहके पास लिपटा हुआ आपड़ा खोलकर पढ़ातो जवाब उस रुक्केका था यही दो सतरें लिखी थीं हमें भी अपना मुश्ताक जानिये सवारीके लियेतख्त जाताहै इसवक्त अगर तसरीफ लाइयेतो बेहतर है बाहम मुलाकात हो सब असबाब ऐशो अशरतका मुहय्या हैसाहब ही की जगह खाली है बादशाह आजादबख्त दरवेशों

को साथ लेकर तख्तपर बैठा वह तख्त हजरत सुले
मान के मानिन्द हवापर चला रफ्ते २ ऐसे मकान
पर जा उतरेकि इमारत आलीशान और तैयारीका
सामान नजर आता है लेकिन यह मालूम नहीं होता
है कि यहां कोई है या नहीं इतने में किसी ने एक
सलाई सुर्मे की सुलेमानी उन पांचो की आंखो पर
फेरदी दोदो बूँद आंसूकी टपकपड़ी परियोंका अ-
खाड़ा देखाकि इस्सतकबालकी खातिर गुलाबपास
लिये हुये रंग बरंग के जोड़े पहिरे हुये खड़ी हैं
आजादबख्त आगे चलेतो दुरु पाहजारों परीजाद
बअदब खड़े हैं और सदरें में एकतख्त जमुरदका
धरा है उसपरमलिकः शाहपाल शालरुखका बेटा
तकिआ लगाये हुये बड़ी तर्जे से बैठे हैं और एक
परीजाद लड़की रोबरू है शाहजादे बख्तयारकेसाथ
खेलतीहै और दोनों बगलमें कुरसियां और संद-
लियां करीनसे बिछो हैं उनपर उम्दा परीजाद बैठे
हैं मलकः शाहपालको बादशाहदेखतेही खड़ा दौड़
उठा और तख्तसे उतरकर बगलगीर हुआ और हाथ

में हाथ पकड़े हुए अपने बराबर तख्त पर ला बिठाया
और वां पाक गर्मजोशीसे बाहम गुफ्तगू होनेलगा
तमाम रोज हँसी खुशी करने और मेवे खाने और
खुशबोइयों की ज्याफत रही और राग रंग सुना
किये दूसरे दिन जब दोनों बादशाह जमाहुये मलक
शाहपालने बादशाहसे दुरवेशों के साथ लानेकी
कैफियत पूछी बादशाहने चारों बेनवाहों का जो
माजरा सुनाथा मुफसिल बयान किया औरसिफारश
की मदद किया चाहिये इन्होंने इतनी मेहनतऔर
मशक्कत खैंची साहबको तवज्जेसे अगर अपने मक-
सद को पहुँचे तो सबाब अजीम है और यह मुखलिस
भी तमाम उम्र शुक्रगुजार रहेगा आपकी नजर
तवज्जे से इन सबका बेड़ापार होता है मालिकः
शाहपाल ने सुन कर कहा बसरो चश्म तुम्हारे फर-
माने से कासिर नहीं यह कह कर निगाह करमसे देखा
और परियों को तरफ देखा बड़े २ जिन्नों के जहां
सरदार थे उनको नामे लिखे कि इस फरमान के
देखते ही अपने तईं हुजूर पुरनूर में हाजिर करो

अगर किसी के आने से तवक्कुफ होगा अपनी सजा पायेगा और पकड़ा हुआ आयेगा और आदमजाद ख्वाह औरत ख्वाह मर्द जिसके पास हो उसे अपने साथ लिये आये अगर कोई पोशीदा कर रक्खेगा पाछे जाहिर होगा तो उसके जन बच्चे को कोल्हू में पिरवाया जायगा और उसका नाम व निशान बाकी न रहैगा यह हुक्मनामा लेकर देव चारों तरफ मुतैयन हुए यह दोनो बादशाहों में सुहबत गर्म हुई और बातें इख्तलातकी होने लगी इसमें मालिकः शाहपाल भी दुरवेशों से मुखातिब होकर बोली कि अब अपने तईं भी बड़ी आरजू लड़का होने की थी और दिल में यह कहा था कि अगर खुदा बेटा देगा या बेटी दे तो उनकी शादी बनी आदम बादशाह के यहां जो लड़का पैदा होगा उस्से करूँगी ऐसी नियत करने के बाद मालूम हुआ कि बादशाह की बेगम पेट से है सारे दिन और घड़ियां और महीने गिनते २ पूरे हुए और लड़की पैदा हुई माफिक वाइदेके तलाश करने वास्ते जिन्नोको मैंने हुक्म दिया

था चार बाग दुनियां में तलाश करो जिस बादशाह या शहंशाह के फरजन्द हुआ हो उसको बजिंस अहतियातसे उठा कर ले आओ उसके बमूजिब फरमाने के परीजाद चारों तरफ परागन्दा हुए बाद देरके शाहजादे को मेरे पास ले आये मैंने शुक्र खुदा का किया और अपनी गोद में लेलिया अपनी बेटी से ज्यादा उस की मुहब्बत मेरे दिल में पैदा हुई जी नहीं चाहता कि एक दिन या एक दम नजरों से जुदा करूँ अगर उसके मा बाप न देखेंगे उनका क्या अहवाल होगा लिहाजा हर महीने में एक बार मंगा लेता हूँ कई दिन अपने नजदीक रखकर फिर भेज देता हूँ इन्शा अल्लाह ताला अब हमारी तुम्हारी मुलाकात हुई उसकी कदर खुदाई कार देता हूँ मौत जिंदगी सबको लगी है भला जीते जी इनका सहरा देख लें बादशाह आजाद बख्त यह बातें मलिकः शाहपाल से सुनकर और उसकी खूबियां देखकर निहायत महजूज हुए और बोले हमको शाहजादे गायब होजाने और फिर आनेसे

अजब तरह के खतरे दिल मे आते थे लेकिन सब साहब की गुफ्तगूसे तसल्ली हुई यह बेटा अब तुम्हा-रा है जिसमें तुम्हारी खुसी हो सो कीजिये गरज दोनों बादशाहों की मुहब्बत मानिंद शीर शकरके रहता और ऐशकरते दस पांच दिनके अरसेमें बड़े २ बादशाह गुलिस्तान इरमके और कोहिस्तान और जंजीरोंके जिनेकी तलपी की खातिर लोग तैनात हुए थे सब आकर हुजूर में हाजिर हुए पहिले मलिकः सादिक मे आकर फरमाया कि तेरे पासजो आदमजाद है हाजिर कर उसने निपटगम और गुस्सा खाकर लाचार उस गुलजार को हाजिर किया और बिलायत अमानकी बादशान से शाह-जादी जिन्नों की कि जिसके वास्ते शाहजादा मुल्क नीमरोजका गावसवार होकर सौदाई बनाथा मांगी उसने भी बहुत उजर करके हाजिर की जब बाद-शाह फरंगकी बेटी और वह जादखां को तलब किया सब सुन कर पाक हुए और हजरत सुलेमान की कसम खाने लगे और दरियायकुलजम के बाद-

शाह से जब पूछने की नौबत आई तो वह सिर नीचा करके चुप होरहा मलकः शाहपाल ने उसकी खातिर की और कसम दी और उम्मेदवार सरफराजी का किया और कुछ धौंसधड़क्का भी दिया तब वह भी हाथ जोड़ कर कहने लगा कि बादशाह सलामत हकीकत यह कि जब बादशाह अपने बेटे के इस्तः कबाल की खातिर दरिया पर आया और शाहजादे ने मारे जल्दी के घोड़ा दरिया में डाला इत्तफाकन मैं उस रोज सैर व शिकार की खातिर निकला था उस जगह मेरा गुजर हुआ सवारी खड़ा करके यह तमाशा देखा, था उसमें शाहजादः को भी घोड़ी दरिया में ले गई मेरी निगाह जो उसपर पड़ी दिल बेअख्त-यार हुआ परीजादों को हुक्म किया कि शाहजादी को मय घोड़ी ले आओ उसके पीछे वह जादखां ने घोड़ा फेंका जब वह भी गोते खाने लगा उसकी दिलावरी और मरदानगी पसन्द आई उसको भी हाथों हाथ पकड़ लिया उन दोनों को मैंने लेकर सवारी फेरी सो वह दोनों सहीसलामत मेरे पास आजतक

मौजूद हैं यह अहवाल सुनकर दानोंको रोबरू बु-
लाया और सुलतान शामकी शाहजादीकी तलाश
बहुतसी की और सबोंसे दोस्ती और मुलायमसे
पूछा लेकिन किसीने हांमी न भर और न नाम
और निशान बताया तब मलकः शाहपालने फर-
मायाकि कोई बादशाह या सरदार गैर हाजिर
भी है या सब आचुके जिन्होंने जिन्नोंकी अर्जकी
कि जहांपनाह सब हुजूरमें आयेहै मगर एक मुसल
सिलजादू जिसनेकोह काफके पर्देमेंएक किला जादू
के इलमसे बनायाहै वह अपने गुरूरसे नहीं आया
है और हम गुलामों की ताकत नहीं जो बजोर
उसको पकड़ लावें वह बड़ा सख्त मुकामहै और
वह आप भी बड़ा मुतफन्नी और शैतान है यह
सुनकरमलकःशाहपालकोबड़ातैशआयाऔरलड़ाई
की फौजऔरजिन्नोंऔर गोलों और परीजादों को
तैनात किया और फरमाया अगर रास्ता में उस
शाहजादी को साथ लेकर हाजिर हो तो बेहतर
नहीं तो उसको जेर व जबर करके मुश्कें बांधकर

लेआओ और उसके गढ़ और मुल्कको नेस्त नाबूद करके गधेका हल फिरवादो योंही हुक्म होते ही ऐसी कितनी एकफौज रवाने हुई कि एक आध दिनके अरसेमें वह वैसे खुश रूश बेसरकशको हलकः व गोश कर पकड़ लाये और हुजूरमें दस्त बस्तः खड़ाकिया मलकः शाहपालने हरचन्दसर जनश करके पूछा लेकिन उस मगरूरने सिवाय नाहीं के हां न की निहायत गुस्सेमें आकर फरमाया कि इस मरदूदके वन्द २ जुदा करो और खाल खींचकर भुसेभरवादो और परीजादके लश्कर को तैनातकिया कि कोह काफ जाकर ढूँढ ढांढकर पैदाकरो वहलश्कर उसशाहजादीकोभी तलाशकर के ले आया और हुजूर में पहुँचाया उनसब अमीरों ने और चारों फकीरोंने मलकः शाहपालको हुक्म और इन्साफ देखकर दुआयें दी और शाद हुए बादशाह आजादबख्त को भी बहुत सुखहुआ तब मलकः शाहपालने फरमाया किमर्दों को दीवान खासमें और औरतोंको बादशाही महलमेंदाखिल

करो घर शहरमें आईनेबन्दीकोहुक्म करो और शादी की तैयारी जल्दकरो गोया हुक्म की देरथी एकरोज नेक सायत और मुहूर्त देखकर शाहजादे बख्तियारकाउक्द अपनीबेटी रोशन अख्तर से बांधा और ख्वाजे जादयमनको दमिश्ककी शाहजादीसे ब्याह और मुल्कफारस के शाहजादी को निगार बसरेके शाहजादेसे करदिया और अजमके बादशाहजादेकोफरङ्गकी मलकः से मन्सुबकरदिया और नीमरोज को जिन्नों की शाहजादी हवाले की और चीनके बादशाहजादेको उसपीर मर्दकी बेटी से जो मलकः सादिकके कब्जे में थीकत खुदा किया हर एक मुरादको बदोलत मलकः शाहपाल के अपने २ मकसद और मुरादको पहुँचे बाद उसके चालीसदिन तकजशन फरमाया और ऐशो इशरत में रातदिन मशगूल रहे आखिर मलक शाहपालने हरएक शाहजादे को तुहफा और सौगातें औरमाल असबाब देकर अपने २ वतन को रुखसत किया सबब खुशी व खातिर जमा रवाना हुये और खैरा-

फिरतसे जा पहुँचे और बादशाहत करने लगे मगर एक वह जादखां और ख्वाजे जादायमनका अपनी खुशीसे बादशाह आजाद बख्तकी रिफाकतमें रहे आखिर यमन के ख्वाजाः जादी को खानसामा और वह जादखां को मीर बख्शी शाहजादे साहब इस बालयाने बख्तयारकी फौजका किया जबतलक जीते रहें ऐश करते रहें इलाही जिस तरह यह चारों दुरवेश और पांचवां बादशाह आजाद बक्त अपनी मुरादको पहुँचे इसी तरह हरएक नामुरादोंको मक-सददिली अपने करम व फजलसे बरलाये कि सब कोई तेरे रहमत से सुख और चैनकरे ॥ इति ॥

पुस्तक मिलने का पता—
श्यामलाल हीरालाल बुकसेलर,
"श्याम काशी प्रेस" मथुरा।

सत्यनाम प्रेस, मैदागिन, बनारस में मुद्रित।